A Daily News Magazine
भोपाल
सोमवार, 12 मई, 2025

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 242, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

पहली बात

'सिंदूर' का संदेश : देश का भावनात्मक-एकाकार राष्ट्र-नीति बने

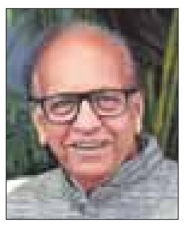

उमेश त्रिवेदी
प्रधान संपादक

कोई 90 घंटे तक पाकिस्तान के खिलाफ चले सघन 'ऑपरेशन-सिंदूर' के धमाकों के बाद घोषित युद्ध-विराम की समीक्षाओं का सिलसिला शुरू हो चुका है। समीक्षाओं के इस दौर में देश के अवाम और सियासी पार्टियों से भारत को उसी समझदारी की दरकार है, जो उन्होंने सीमा पर युद्ध की परिस्थितियों में दिखायी है। अभी सिर्फ युद्ध रूका है, तकाजे बाकी हैं। मूर्त-अमूर्त तकाजों को देश के संस्कारों और सरोकारों से जोड़ना सबसे बड़ी चुनौती है। 'ऑपरेशन-सिंदूर' के जरिए भारत ने अभूतपूर्व गौरवान्वित क्षणों को हासिल किया है।

इन गौरवान्वित क्षणों में सिर्फ पाकिस्तान पर भारतीय सेना प्रभुता और प्रभुत्व के कारनामे ही दर्ज नहीं हैं। सेना के साथ मोदी-सरकार की कूटनीतिक आयोजना, सियासी दलों के राष्ट्रीय-सरोकार और आम जनता का भावनात्मक एकाकार भी इन पलछिनों में गौरव का इंद्रधनुष खींचते नजर आते हैं। इन क्षणों की भावनात्मक ऐतिहासिकता को मुख्यधारा का स्थायी भाव बनाने के लिए देश की राजनीतिक दिशाओं में कई चुनौतियां मौजूद हैं। भारतीय सेना ने सरहदों पर भारत के प्रभुत्व की जो इबारत लिखी है, उसको अंजाम तक पहुंचाने का बड़ा काम अभी बाकी है।

बहरहाल, पाकिस्तान के खिलाफ भारत की लड़ाई के ताजा कथानक के कई पहलू हैं, लेकिन दो पहलू राजनीति और कूटनीति की किताबों में 'राष्ट्र-नीति' के रूप में 'ऑपरेशन-सिंदूर' के हस्ताक्षर के रूप में दर्ज होंगे। ऑपरेशन-सिंदूर का पहला हस्ताक्षर है आतंकवाद के खिलाफ मोदी-सरकार का वह नीतिगत उद्घोष, जिसमें अब पाकिस्तान की कोई भी आतंकवादी कार्रवाई भारत के खिलाफ युद्ध मानी जाएगी। और, दूसरा हस्ताक्षर है भारतीय राजनीति और जनता का वह भावनात्मक एकाकार, जिसने राष्ट्रीय संकट के क्षणों में देश की एकात्मकता को बरकरार रखा। देश को टूटने नहीं दिया। इस भाववात्मक एकाकार को बनाये रखने और आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी अब सरकार और उनके समर्थकों की है।

राष्ट्रीय नीतियां, कानून और सामाजिक नियमावली की इबारत देश, काल और परिस्थितियां की पृष्ठभूमि में लिखी जाती है। सत्ता और समाज के संचालन की नियमावली भी ऐसे ही तैयार होती है। इनमें बदलाव भी होता रहता है। नियमों का यही अनुशासन सत्ता का संविधान कहलाता है और समाज का विधान बनता है। राजनीतिक और कूटनीतिक प्रवृत्तियों का प्रादुर्भाव भी सत्ता और संविधान के अनुरूप होना चाहिए। कई मर्तबा ये प्रवृत्तियां निरंकुश भी हो जाती हैं। लोकतंत्र की मर्यादाएं हाशिए पर सरक जाती हैं। राष्ट्रीय संकट और उससे जुड़े घटनाक्रम सत्ताधीशों और उनके समर्थकों का सोच भी बदलते हैं। निरंकुशता और अहंकार की कठोरताओं को नरम करते हैं। लोकतंत्र में ये परिवर्तन अपवाद नही हैं।

'ऑपरेशन-सिंदूर' से उदभूत दोनो राष्ट्र-नीति का रोडमैप लोकतंत्र की जमीन को पुख्ता करने वाला है। ऑपरेशन-सिंदूर के ताजे घटनाक्रम ने वर्तमान हालात में देश की तनावग्रस्त सियासी प्रवृतियों को पुनर्विचार का अवसर दिया है। आतंकवाद और राष्ट्रीय एकता की भावभूमि पर खड़ी दोनो राष्ट्र-नीतियों के तकाजे लोकतंत्र में सत्ता की राजनीति के परिचालन को देश की संवैधानिकता और लोकतांत्रिक मर्यादाओं के अनुरूप संचालित करने के लिए उत्प्रेरित करते हैं। ऑपरेशन-सिंदूर के दरम्यान प्रदर्शित राजनीतिक और सांप्रदायिक एकता और एकजुटता की ताकत ने पाकिस्तान के सारे मंसूबों को जिस तरीके से नेस्तनाबूद किया है, वो अभूतपूर्व है।

पाकिस्तान के खिलाफ भारतीय मुसलमानों की एकजुटता ने पूरी दुनिया के सामने उन ताकतों को निरुत्तर कर दिया है, जो धर्म के नाम पर अंगारे उड़ाने का काम करते रहे हैं। धारा 370 के विलोपित करने के वक्त भारत में अल्पसंख्यकों पर अत्याचार को मुद्दा बनाकर पाकिस्तान ने दुनिया में मुस्लिम मुल्कों के सामने खूब कुहराम मचाया था। खुद पाकिस्तान ने इस मामले में मुंह की खाई है। 'ऑपरेशन-सिंदूर' के कैनवास पर उभरे सांप्रदायिक एकता के परिदृश्य के रंगों की सुर्खियों को बरकरार रखना सबसे बड़ी चुनौती है। इसी तारतम्य में सियासी सदभाव का लोकतांत्रिक मूल्यांकन भी जरूरी है। तमाम मतभेदों और तनाव के बावजूद केन्द्र सरकार के पीछे अल्पसंख्यकों और विपक्षी दलों की एकता 'ऑपरेशन सिंदूर' की बड़ी उपलब्धि है। ये उपलब्धियां ही भारत की नई राष्ट्र-नीति का उद्घोष हैं।

लेकिन युद्ध-विराम के बाद भी देश की एकाकार राजनीति का भावनात्मक साथ जरूरी है। हमारी सेना और हम लोग आज भी लाम पर हैं। सेना की चुनौतियां अभी खत्म नहीं हुई हैं। फिलहाल सिर्फ बारूद के धमाके और धुंए के बादल रूके हैं। आक्रोश की आग धधक रही है। पाकिस्तान के खिलाफ भारत के 'सीमित-युद्ध' की तरह ही फिलवक्त 'युद्ध-विराम' के दायरे भी सीमित है। पाक पर सैन्य-प्रभुत्व कायम करने के साथ ही भारत ने आतंक के खिलाफ अपनी नई सैद्धांतिक 'राष्ट्र-नीति' का उद्घोष भी कर दिया है। नीति यह है कि 'भविष्य में पाकिस्तान की किसी भी आतंकी कार्रवाई को भारत के खिलाफ युद्ध माना जाएगा।'

एक तरह से भारत ने आतंकवाद के मुद्दे पर 'ऑपरेशन' के 'सिंदूर' से एक सैद्धांतिक लक्ष्मण-रेखा खींच दी है। इसके आगे पाकिस्तान का एक कदम भी भारत को कबूल नहीं होगा। सिंदूरी 'लक्ष्मण-रेखा' के उदघोष की शब्दावली ही युद्ध-विराम पर दोनो देशों के बीच 12 मई को होने वाली बातचीत का ढांचा होगी। आतंक के संबंध में नई दिल्ली के सैद्धांतिक-बदलाव को औपचारिक रूप से अमेरिका ने भी स्वीकार कर लिया है। जाहिर है कि युद्ध-विराम की शर्तों का रोड-मैप इसी सैद्धांतिक सहमति की धुरी पर तैयार होगा, जिसे अमेरिका सहित कई अन्य देशों ने भी माना है।

जाहिर है मैदानी युद्ध-विराम के बाद कूटनीतिक क्षेत्र में संग्राम शुरु होने वाला है। कूटनीति की टेबल पर मुद्दे सुलझाना सबसे दुरूह काम है। पाकिस्तान को निष्प्रभावी करने के लिए कूटनीतिक जरूरतों में भारत को कई स्तर पर प्रयास करना होगें। पाकिस्तान की हमेशा यह कोशिश रही है कि वह हर स्तर पर खुद भारत से बढ़ कर दिखाने की कोशिश करता है। भारत में युद्ध-विराम के दाएं-बाएं सवालों का सुलगना शुरू हो चुका है। लोगो में इस बात को लेकर हैरत है कि इतनी बढ़त बनाने के बाद भारतीय सेना को युद्ध-विराम क्यों हो रहा है? ऑपरेशन-सिंदूर के दरम्यान भारतीय सेना के पराक्रम से गौरवान्वित पलछिनों की सुनहरी इबारत में युद्ध विराम के धुंधलके जोड़ने का सबब क्या है? इस निर्णय के औचित्य को लेकर भी लोगो में मतभेद हैं।

कुछ लोग चाहते थे कि इस मर्तबा पाकिस्तान का समग्र इलाज कर दिया जाए और भारतीय सेना यह करने मे समर्थ भी है। राजनीतिक इच्छा-शक्ति की दावे भी सामने आते रहे हैं। बहरहाल यह समझना जरूरी है कि पाकिस्तान को सबक सिखाने के लिए यह दंडात्मक पहल जरूरी थी। उसे भारत ने सफलता पूर्वक अंजाम दिया है। यह समझना भी जरूरी है कि आज की दुनिया में युद्ध के विस्फोटक हथियारों के दौर में कोई भी देश स्पष्ट सैन्य जीत का दावा करने मे समर्थ नही हैं। रूस जैसा देश यूक्रेन जैसे देश में यह नही कर पा रहा है। कोई भी संघर्ष शुरू करना आसान है, उसे समाप्त करना बहुत मुश्किल होता है। इसे कूटनीति प्रयासों की सफलता माना जाना चाहिए कि पाकिस्तान को सबक सिखा कर भारतीय सेना न्यूनतम नुकसान के साथ गौरवपूर्ण स्थितियों में तैयार खड़ी है।

सुप्रभात

युद्ध की
ललकारों
हुंकारों
गगन भेदी नारों
दावों प्रतिवादों
एक दूसरे के
जान की प्यासी
टूट पड़ती सेनाओं
के बीच
कभी तो
आ बैठेंगे
बुद्ध
और अचानक ही
जान लेती
तोपें, मिसाइलें
और
मशीनगनें
बुदबुदा उठेंगी
जीवन का मर्म
और कह उठेंगी
अहिंसा परमोधर्म !
अहिंसा परमोधर्म !!

संदीप राशिनकर

पाकिस्तान ने गंवाए 40 जवान कई एयरबेस हुए तबाह

ऑपरेशन सिंदूर में पाक को क्या-क्या नुकसान हुआ, डीजीएमओ ने सब बताया

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा पर तनाव कम करने के लिए एक अहम सीजफायर समझौते पर सहमति बन गई है। इस समझौते की पहल पाकिस्तान की ओर से की गई, जिसे भारत ने अपनी शर्तों के साथ स्वीकार किया। यह सहमति दोनों देशों के डायरेक्टर जनरल ऑफ मिलिट्री ऑपरेशंस (डीजीएमओ) स्तर पर हुई। भारतीय डीजीएमओ ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि हमने पाकिस्तान में 9 आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया। उन्होंने ड्रोन अटैक किया जवाबी कार्रवाई में पाकिस्तान के कई एयरबेस तबाह हुए और उनके 35-40 जवान और अफसर भी मारे गए।

बहावलपुर में आतंकी कैंप किया तबाह

डीजी एयर ऑपरेशन एयर मार्शल ए के भारती ने बताया कि आतंकी ठिकानों पर एयर स्ट्राइक में एयर टू सर्फेस गाइडेड एम्युनिशन का इस्तेमाल किया गया ताकि कोलेटरल डैमेज ना हो। एयरफोर्स ने मुरीदके और बहावलपुर में आतंकी ट्रेनिंग कैंप को सटीक निशाना बनाया। स्ट्राइक का मकसद अचीव हुआ। बहावलपुर में हाई वैल्यू टारगेट था। हमने प्रिसिजन स्ट्राइक की। एयर मार्शल ए.के. भारती ने कहा, 8/9 मई की रात को बड़ी संख्या में अलग अलग वेब में ड्रोन आए। हमारा एयर डिफेंस पूरी तरह तैयार था। 7 की और 8 की रात को फर्क ये था कि 7 मई को ज्यादा ड्रोन थे पर 8 को ज्यादा कॉडकॉप्टर भी थे। ये जासूसी के लिए हो सकते थे और सिविलियंस को निशाना बनाने को लिए। हमने जवाब में फिर पाकिस्तान के मिलिट्री ठिकानों को निशाना बनाया। इसके बाद 9-10 मई की रात को पाकिस्तान ने सीमाओं के पार हमारे हवाई क्षेत्र में ड्रोन और विमान उड़ाए और कई सैन्य बुनियादी ढांचे को निशाना बनाने के बड़े पैमाने पर असफल प्रयास किए। उन्होंने कहा, हमने पाकिस्तान के एयर बेस, कमांड सेंटर, एयर डिफेंस सिस्टम को पूरे बॉर्डर पर निशाना बनाया। हमारे पास उनके हर बेस को हर सिस्टम को टारगेट करने की क्षमता है।

पाकिस्तान में 9 आतंकी ठिकाने तबाह किए

भारत के डीजीएमओ लेफ्टिनेंट जनरल राजीव घई ने कहा कि हमने कई आतंकी ठिकानों की पहचान हमने की थी। लेकिन कई आतंकी ठिकाने डर की वजह से खाली हो गए थे। भारत ने काफी सोच-समझकर टारगेट तय किए। सेना ने आतंकी हमले का जवाब दिया। सेना ने पाकिस्तान में 9 आतंकी ठिकानों को तबाह किया। उन्होंने कहा कि 100 से ज्यादा आतंकी स्ट्राइक में मारे गए। इसमें हाई वैल्यू टारगेट भी थे। हमने तीन बड़े आतंकियों को खत्म किया है। इसमें मुदस्सर खास, हाफिज जमील और यूसुफ अजहर शामिल हैं, जो आईसी 814 के अपहरण और पुलवामा विस्फोट में शामिल थे। उन्होंने बताया कि इसके तुरंत बाद पाकिस्तान द्वारा नियंत्रण रेखा का भी उल्लंघन किया गया और हमारे दुश्मन की अनिश्चित और घबराई हुई प्रतिक्रिया नागरिकों, आबादी गांवों और गुरुद्वारों जैसे धार्मिक स्थलों की संख्या से स्पष्ट थी, जो दुर्भाग्य से उनके हमले में मारे गए, जिससे कई लोगों की दुखद मृत्यु हुई।

पहलगाम अटैक के बाद से नेवी भी थी अलर्ट

वाइस एडमिरल ए ए प्रमोद ने बताया पहलगाम आतंकी हमले के बाद नेवी ने अपने एसेस्ट्स डिप्लॉय कर दिए थे। हमने अपनी ऑपरेशनल रेडिनोस के लिए समंदर में टेस्ट भी किए। नेवी ने पाकिस्तान की नेवी को डिफेंसिव पॉश्चर में रहने को मजबूर किया। वह पूरे टाइम अपने हार्बर में रहे। जनरल राजीव घई ने बताया कि 10 मई की सुबह पाकिस्तान के डीजीएमओ से हॉटलाइन पर मैसेज आया। उन्होंने बात करने के लिए पूछा, हमने तय किया है बात करेंगे। दोपहर 3.35 पर हमारी बात हुई, शाम 5 बजे से सीजफायर के लिए राजी हुए। जो समझौता हुआ है उस पर हमने फिर 12 मई को बात करने का तय किया है। लेकिन पाकिस्तान आर्मी ने कुछ ही घंटे में समझौते का उल्लंघन किया, जिसका जवाब दिया गया। सीडीएस ने पाकिस्तान पर जवाबी कार्रवाई करने के लिए सेना को खुली छूट दी है।

पाकिस्तान ने खोए अपने 35-40 जवान

लेफ्टिनेंट जनरल राजीव घई ने कहा ऑपरेशन सिंदूर का मकसद साफ था - आतंकवादियों और उनके योजनाकारों को सजा देना और उनके आतंकी नेटवर्क को खत्म करना। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान की तरफ से हमारे एयर फील्ड को निशाना बनाने की कोशिश की।

स्वामी विवेकानंद की विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा इंदौर में होगी स्थापित : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ने किया भूमि-पूजन, स्वामी विवेकानंदजी का संपूर्ण जीवन त्याग, सेवा और आत्मबोध का प्रतीक

इंदौर को मिलेगा नया सांस्कृतिक और पर्यटन केंद्र

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रविवार को आयोजित एक गरिमामय कार्यक्रम में इंदौर के सिरपुर स्थित देवी अहिल्या सरोवर उद्यान में स्वामी विवेकानंद की विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा स्थापना के लिए भूमि-पूजन किया। महापुरुषों के जीवन दर्शन को नई पीढ़ी तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह एक ऐतिहासिक पहल की जा रही है। यह भव्य प्रतिमा स्वामी जी की शिक्षाओं और दर्शन को जन-जन तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम बनेगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत में संत परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है और उनमें से स्वामी विवेकानंद विलक्षण संत थे। उन्होंने निराकार ईश्वर के उपासक के रूप में मानवता की सेवा को अपने जीवन का उद्देश्य बनाया। स्वामी विवेकानंद का मानना था कि 'मैं देखूंगा तो ही मानूंगा' जो उनके तर्कशील और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को दर्शाता है। मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने शरीर के माध्यम से जीवन सेवा का मंत्र दिया और आत्मनिर्भरता का आशीर्वाद प्राप्त कर मृत्यु पर विजय प्राप्त की। उन्होंने दुर्बलता और हीनता को जीवन का हिस्सा मानने से इनकार करते हुए इसे मृत्यु के समान बताया। उनका विश्वास था कि साहस, सामर्थ्य और आत्मबल के सहारे व्यक्ति सभी कमजोरियों को पार कर सकता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि स्वामी विवेकानंद का संपूर्ण जीवन त्याग, सेवा और आत्मबोध का प्रतीक था। शिकागो धर्म संसद में दिया गया उनका ऐतिहासिक भाषण 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का जीवंत उदाहरण है, जिसने विश्व पटल पर भारत की संस्कृति और अध्यात्म का ध्वज लहराया। उन्होंने जीवन को अंदर से बाहर की ओर विकसित करने का मंत्र दिया और कर्म को ही साधना बताया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आह्वान किया कि स्वामी विवेकानंदजी के सिद्धांत और विचार आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। हमें उनके दिखाए मार्ग पर चलकर उनके विचारों को जन-जन तक पहुंचाना चाहिए, ताकि समाज का समग्र विकास सुनिश्चित हो सके। यह मूर्ति स्थापना इस दिशा में एक बड़ा प्रयास है।

नगरीय प्रशासन एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा स्थापित करने के साथ ही यहां पर लाइब्रेरी की भी स्थापना की जाए, जिसमें स्वामी विवेकानंद से संबंधित साहित्य हो। इससे युवाओं को जीवन में सफलता के लिये मार्गदर्शन मिलेगा और जीने की नई राह मिलेगी।

नूर खान एयरबेस तबाह, न्यूक्लियर कमांड सेंटर पर था निशाना !

अंदर तक दहल गई थी पाक सेना, डरे शहबाज ने तुरंत लगाया अमरीका फोन

इस्लामाबाद (एजेंसी)। रावलपिंडी में पाकिस्तानी सेना का हेडक्वार्टर है, जहां से पाकिस्तान की सरकार को कंट्रोल किया जाता है। भारत ने ऑपरेशन सिंदूर में इसी शहर पर सबसे तेज और भयानक हमले किए। रावलपिंडी में ही नूर खान एयरबेस है, जहां पाकिस्तान की वायुसेना अपने फाइटर जेट्स में ईंधन भरती है, विमानों का मरम्मत होता है, यहीं से पाकिस्तान के वीवीआईपी नेता विदेशी दौरे के दौरान विमान से रवाना होते हैं और भारत ने इसी एयरबेस पर भयानक हमला किया था। इसने पाकिस्तान की सेना को अंदर से दहला दिया। रिपोर्ट में खुलासा किया है कि नूर खान एयरबेस पर हमला इस बात की चेतावनी थी कि भारत का अगला निशाना पाकिस्तान का परमाणु कमांड सेंटर हो सकता है, जो इस्लामाबाद से सिर्फ 10 किलोमीटर दूर था। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत न्यूक्लियर कमांड सेंटर पर हमला कर पाकिस्तान की परमाणु हमला करने की क्षमता को ही खत्म कर देना चाहता था, जिससे डरे शहबाज शरीफ ने फौरन अमेरिका फोन लगा

दिया। नूर खान एयरबेस, पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद से सिर्फ 10 किलोमीटर दूर रावलपिंडी के चकलाला क्षेत्र में स्थिति है और पाकिस्तानी वायुसेना की एयर मोबिलिटी कमांड का हेडक्वार्टर है। पाकिस्तान की वायुसेना यहीं से गुप्त सैन्य अभियानों, लॉजिस्टिक ट्रांसपोर्ट और एयरबोर्न रडार सिस्टम को ऑपरेट करती है। जिसकी वजह से यह एयरबेस पाकिस्तान की रणनीतिक सैन्य तंत्र की धड़कन माना जाता है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 38 °c
न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ सोमवार, 12 मई 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

बिहार में 10 जगह सख्त निगरानी, 2 लाख जवान थे तैयार

● सादे लिबास में महिला जवान तैनात,वॉलेंटियर्स का भत्ता बढ़ाएगी नीतिश सरकार

पटना (एजेंसी)। पाकिस्तान के सीजफायर के उल्लंघन के बाद एक बार फिर भारत-पाक के बीच जंग के हालात बन गए थे। युद्ध के हालात से निपटने के लिए बिहार पूरी तरह तैयार रहा। इसके लिए सवा 2 लाख से अधिक वॉलंटियर और पुलिस बल तैयार रहे। नदी से लेकर आसमान तक पर सख्त पहरा रहा। आपात स्थिति से

निपटने के लिए सरकार ने एक्शन प्लान तैयार किया था। इसमें इमरजेंसी सेवा के सभी कर्मचारियों की छुट्टी को रद्द कर दिया गया था। नेपाल बॉर्डर से लेकर अस्पताल तक को अलर्ट मोड में रहने का आदेश दिया गया था। पटना से हिंडन यानी गाजियाबाद, चंडीगढ़ और भुवनेश्वर की फ्लाइट को 15 मई तक के लिए रद्द कर दिया गया था जिन्हे अब खोल दिया गया है। वहीं, पुलिस की साइबर पेट्रोलिंग को बढ़ा दिया गया है। पुलिस को अफवाहों, प्रॉपगेंडा, आपत्तिजनक वीडियो पर कड़ी नजर रखने का आदेश दिया गया था। नीतिश सरकार ने वोकल फॉर लोकल वाला फॉर्मूला अपनाया है। सिविल डिफेंस (नागरिक सुरक्षा कोर), आपदा मित्र,नेहरू युवा केंद्र के युवाओं को मैदान में उतारने की प्लान बनाया गया था। इसके पीछे वजह यह थी कि उन्हें फील्ड की नॉलेज है।

राष्ट्रप्रेम के जरिए हिंदी बेल्ट में '50' पर निशाना

● असदुद्दीन ओवैसी का यूं ही नहीं हुआ हृदय परिवर्तन

पटना (एजेंसी)। पुलवामा से पहलगाम घटना तक आते-आते ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहाद-उल मुस्लिमीन पार्टी के सांसद असदुद्दीन ओवैसी का हृदय परिवर्तन हुआ या चुनावी नीति बदल गई है। मुस्लिम बहुल क्षेत्रों से चुनाव लड़ने के इच्छुक रहे ओवैसी ने अब अपने पांव हिंदी बेल्ट में फैलाने शुरू कर दिए हैं। उम्मीदवार भी गैर मुस्लिम से देने लगे हैं। आगामी बिहार विधानसभा चुनाव 2025 को लेकर असदुद्दीन ओवैसी ने अब कम से कम 50 सीटों पर लड़ने का ऐलान भी कर दिया है। तो क्या यह नीतिगत बदलाव इन 50 विधानसभा सीटों पर लड़कर ज्यादा से ज्यादा सीटें जीतने और वोट प्रतिशत बढ़ाने के लिए किया गया है। पुलवामा अटैक पर असदुद्दीन ओवैसी ने पीएम मोदी को सवालों के कठघरे में खड़ा करते पूछा था कि पुलवामा में इतनी भारी मात्रा में विस्फोटक सामग्री जमा हो रहा था, तब मोदी क्या कर रहे थे। दिल्ली में बैठकर आपकी नाक के नीचे पुलवामा में 50 किलो आरडीएक्स चला गया, वो नहीं देखे आप। आंख बंद कर लिए थे, सो गए थे। बिरयानी खा लिए थे क्या। हो सकता है बड़े की बिरयानी खाकर डकार लेकर सो गए होंगे। ओवैसी ने सवाल किया था कि आखिर पुलवामा में विस्फोटक लाए जाने की जानकारी कैसे नहीं मिली। ओवैसी ने आगे सवाल किया था कि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा था कि इसरो ने वहां देखा कि बम गिरने से पहले 300 सेलफोन के लाइट थे, बम गिरते ही 300 गायब। मैं मोदी और राजनाथ सिहं पूछना चाहता हूं कि वो यह क्यों नहीं देख सकते थे।

नया भारत सीमा पार जाकर भी देगा मुंहतोड़ जवाब

● राजनाथ बोले-ब्रह्मोस की धमक रावलपिंडी तक सुनाई दी

● लखनऊ में ब्रह्मोस यूनिट शुरू, राजनाथ ने किया उद्घाटन

लखनऊ (एजेंसी)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने लखनऊ में ब्रह्मोस मिसाइल यूनिट का वर्चुअली इनॉगरेशन किया। इस दौरान उन्होंने पाकिस्तान को चेतावनी दी, कहा- भारतीय सेना ने पराक्रम दिखा दिया है। आतंकवाद के लिए सरहद पार की जमीन भी सुरक्षित नहीं रहेगी। हमने केवल सीमा से सटे सैन्य ठिकानों पर ही कार्रवाई नहीं की, बल्कि भारत की सेनाओं की धमक उस रावलपिंडी तक सुनी गई, जहां पाकिस्तानी फौज का हेडक्वार्टर मौजूद है। रक्षा मंत्री ने कहा- हमने कभी उनके आम नागरिकों को निशाना नहीं बनाया, लेकिन जब पाकिस्तान ने भारत के नागरिक इलाकों, मंदिरों, गुरुद्वारों और चर्चों पर हमले का प्रयास किया। तब भारतीय सेना ने शौर्य और संयम के साथ उत्तर दिया। पाकिस्तान के अनेक सैन्य ठिकानों पर प्रहार करके करारा जवाब दिया। रक्षामंत्री ने कहा- भारत विरोधी और आतंकी संगठनों ने भारत माता के

मस्तक पर हमला किया था। कई परिवार के सिंदूर मिटाए थे। सेना ने ऑपरेशन सिंदूर के जरिए इंसाफ दिलाने का काम किया। यह ऑपरेशन भारत की दृढ़ इच्छा शक्ति का प्रदर्शन है। यह ऑपरेशन सिंदूर केवल एक सैन्य अभियान नहीं, बल्कि भारत की राजनीतिक, सामाजिक और सामरिक इच्छा-शक्ति का प्रतीक है। यह अभियान आतंकवाद के खिलाफ भारत की दृढ़ संकल्पशक्ति, सैन्य क्षमता और रणनीतिक पराक्रम का प्रमाण है। भारत ने दुनिया को यह भी दिखाया है कि वह आतंकवाद को जड़ से खत्म करने के लिए प्रतिबद्ध है। पठानकोट, उरी, पुलवामा, और अब ऑपरेशन सिंदूर जैसे अभियानों से यह साबित हो गया है कि भारत आतंकवाद को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं करेगा।

आतंकवाद पूरी तरह कुचलेंगे, तभी समस्या का समाधान होगा

आतंकवाद को लेकर पीएम मोदी ने ऐलान किया है कि कोई भी आतंकी घटना अब युद्ध जैसी मानी जाएगी। याद रखना, जब तक हम आतंकवाद को पूरी तरह कुचल नहीं देंगे, तब तक समस्या का समाधान नहीं होगा। किसी भी देश के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी सुरक्षा के लिए किसी अन्य देश पर निर्भर न हो। पूरी दुनिया में युद्ध अलग-अलग क्षेत्रों में हो रहे हैं। उन क्षेत्रों में आप देखेंगे कि जिनके पास रक्षा उत्पादन की आत्मनिर्भरता नहीं है, वे अलग-थलग पड़ गए हैं। आपके सामने इजराइल का उदाहरण है। इजराइल ने दुश्मनों को नाको चने चबवा दिए। ब्रह्मोस एयरोस्पेस इंटीग्रेशन एंड टेस्टिंग फैसिलिटी यूनिट लखनऊ से 30 किलोमीटर दूर भटगांव में है। यह यूनिट ब्रह्मोस एयरोस्पेस ने 300 करोड़ रुपए की लागत से बनाई है। इससे 3000 लोगों को रोजगार मिलेगा। योगी सरकार ने 2021 में ब्रह्मोस प्रोजेक्ट के लिए लखनऊ में 80 हेक्टेयर भूमि आवंटित की थी।

अत्याधुनिक व आत्मनिर्भर गौ-अभयारण्य है बसामन मामा गौवंश वन्य विहार : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

बसामन मामा गौवंश वन्य विहार एवं हिनौती गौधाम के संचालन व अधोसंरचना निर्माण कार्यों की समीक्षा की

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि बसामन मामा गौवंश वन्य विहार अत्याधुनिक गौअभयारण्य है। शीघ्र ही यहां 5 टन क्षमता का गैस उत्पादन संयंत्र आईओसीएल द्वारा स्थापित किया जायेगा तथा पशु आहार निर्माण इकाई को भी शुरू किया जायेगा। बसामन मामा गौवंश वन्य विहार के विश्राम गृह में रात्रि विश्राम के उपरांत प्रशासनिक भवन में उप मुख्यमंत्री ने बसामन मामा गौवंश वन्य विहार एवं हिनौती गौधाम में अधोसंरचना निर्माण कार्यों की समीक्षा की। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि दुधारू गौवंश की 25-25 यूनिट के चार समूह बनाकर दुग्ध उत्पादन प्रारंभ करें तथा चिन्हित चरनाई भूमि की फेंसिंग कराकर चारा उत्पादन करें। उन्होंने सामुदायिक भोजशाला के निर्माण में गोबर की ईंट का उपयोग करने के भी निर्देश दिये। उप मुख्यमंत्री ने निर्माणाधीन मंदिर में भगवान कृष्ण की मूर्ति स्थापित करने

तथा मंच के सामने समतलीकरण कार्य को शीघ्र करने के निर्देश निर्माण विभाग को दिये। उन्होंने मृत पशु निष्पादन संयंत्र की स्थापना शीघ्र करायें तथा गौवंश वन्य विहार में बाउंड्रीबाल का निर्माण प्रारंभ करने के निर्देश दिए।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि गौवंश वन्य विहार में धन की कमी नहीं है इसमें सभी आवश्यक उपकरण व व्यवस्थायें सुनिश्चित करायें। उन्होंने प्रोड्क्शन मैनेजर व मार्केटिंग मैनेजर की नियुक्ति किये जाने की भी बात कही। उप मुख्यमंत्री ने हिनौती गौधाम में पशु शेड व प्रशासनिक भवन का निर्माण 15 जून तक कर लेने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि कार्ययोजना के अनुसार हिनौती गौधाम में पशु शेड, सड़कों का निर्माण करायें ताकि सड़कों के किनारे वर्षाकाल में वृक्षारोपण कराया जा सके। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने बसामन मामा गौवंश वन्य विहार में 34 लाख रूपये की लागत से बनाये जाने वाले चेकडैम का भूमिपूजन किया। बैठक में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने बसामन मामा गौवंश वन्य विहार में पशु चिकित्सक की उपस्थिति व सभी आवश्यक उपचार उपकरण की सुनिश्चितता के निर्देश दिये। उन्होंने प्रशासनिक भवन के समीप एक सुलभ काम्पलेक्स तथा एक अन्य सार्वजनिक सुलभ काम्पलेक्स निर्माण कराने के निर्देश निर्माण विभाग के अधिकारियों को दिये। बैठक में जिला गौसंवर्धन बोर्ड के पूर्व उपाध्यक्ष श्री राजेश पाण्डेय ने बहुमूल्य सुझाव दिये जिन पर उप मुख्यमंत्री ने तत्काल कार्यवाही करने के लिए संबंधितों को निर्देशित किया। जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती नीता कोल, सीईओ जिला पंचायत श्री मेहताब सिंह गुर्जर, जनपद अध्यक्ष श्री गंगेव विकास तिवारी, अभयराम जी महराज सहित विभागीय अधिकारी एवं स्थानीजन उपस्थित रहे।

तू न थमेगा कभी, तू न झुकेगा कभी...

● अमिताभ बच्चन ने 'ऑपरेशन सिंदूर' पर तोड़ी चुप्पी, सेना को किया सलाम

नई दिल्ली (एजेंसी)। महानायक अमिताभ बच्चन ने अपनी चुप्पी तोड़ते हुए एक्स अकाउंट पर एक पोस्ट शेयर किया है। अमिताभ ने पोस्ट में पहलगाम हमले में आतंकवादियों के धर्म पूछकर गोली मारने की घटना का जिक्र करते हुए लिखा है। अमिताभ ने पोस्ट में आगे अपने पिता हरिवंश राय बच्चन की पंक्तियों का भी जिक्र किया। अमिताभ ने लिखा तू ना थमेगा कभी, तू न मुड़ेगा कभी, तू न झुकेगा कभी, कर शपथ, कर शपथ, कर शपथ! अग्निपथ! अग्निपथ! अग्निपथ!!! । 22 अप्रैल को आतंकी हमला हुआ था।

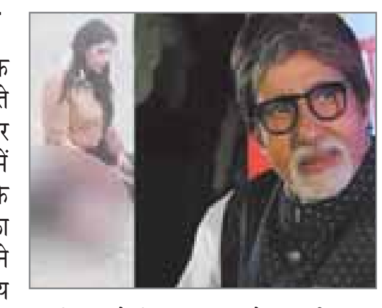

वक्त बीतने के साथ...

सीजफायर होते ही पाक रक्षा मंत्री ने दिखाया रंग

● उठाया कश्मीर मुद्दा,सिंधु संधि पर भी दिया बयान

इस्लामाबाद (एजेंसी)। भारत और पाकिस्तान के बीच सीजफायर होने के बाद शांति का रास्ता बनता दिखा है। चार दिन तक चले हमलों के बाद दोनों देश शनिवार को सैन्य कार्रवाई रोकने पर राजी हुए हैं। ये संघर्ष 6 मई को भारत के पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों को निशाना बनाते हुए किए गए ऑपरेशन सिंदूर के बाद शुरू हुआ था। इससे पहले भारत ने सिंधु जल संधि निलंबित करने, पाकिस्तान से व्यापार रोकने और बॉर्डर बंद करने जैसे फैसले लिए थे। भारत से सीजफायर के बाद पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने कहा है कि अब सभी मुद्दों पर भारत से बातचीत का रास्ता खुल सकता है। ख्वाजा आसिफ ने एक न्यूज चैनल पर बात करते हुए कहा भारत के साथ पाकिस्तान के तीन प्रमुख मुद्दे- कश्मीर, सिंधु जल संधि और आतंकवाद है। मुझे उम्मीद है कि पड़ोसी देश के साथ भविष्य में होने वाली किसी भी वार्ता में इन मुद्दों पर चर्चा की जा सकती है। भारत के साथ लंबित मुद्दों के समाधान पर हुए सवाल का जवाब देते हुए आसिफ ने ये कहा है। आसिफ ने कहा, अगर सीजफायर से शांति का रास्ता निकलता है तो यह निश्चित ही स्वागत करने वाली बात होगी।

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर भारत माता की आरती

मोहन टॉकीज चौराहे का नाम परिवर्तित कर भगवान परशुराम जी के नाम पर करने की मांग-सचिन दवे

धार। भारत द्वारा ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर धार शहर के मोहन टॉकीज चोराहे पर आजाद विचार मंच के संयोजक नीतीश राजपुरोहित, रुद्राक्ष मुकाती द्वारा भारत माता की आरती का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में प्रसिद्ध पर्यावरणविद सचिन दवे द्वारा सेना के साहस एवं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दूरदर्शिता की तारीफ करते हुए ऑपरेशन सिंदूर की विजय पर सभी भारतवासियों को बधाई दी। उन्होंने बताया कि पाकिस्तान जो कि आतंकिस्तान रुपी केंद्र बन चुका है। श्री दवे ने कहा कि जिन लोगों के मन में आज भी पाकिस्तान के बारे में गलतफहमी थी वह सब इस युद्ध से दूर हो गई होगी।

भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण समाजसेवी घनश्याम शर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन भाजपा के नगर उपाध्यक्ष अभिषेक मिश्रा द्वारा किया गया । आभार रूद्राक्ष मुकाति द्वारा माना गया। इस अवसर पर भाजपा के नवागत नगर उपाध्यक्ष अभिषेक मिश्रा एवं

विजेंद्र ठाकुर का स्वागत भी किया गया । पर्यावरणविद पर्यावरणविद् सचिन दवे द्वारा मांग की गई की मोहन टाकिज चोराहे का नाम परिवर्तित कर भगवान पशुराम जी के नाम से किया जाए। इस अवसर पर नीतीश राजपुरोहित, हर्ष शुक्ला, राहुल सूजन, कुणाल विरान हिमांशु मोरे, मानस राठौड़ सहित सैकड़ो की संख्या में आजाद विचार मंच के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

पंजाब सरकार को बड़ा झटका देने की तैयारी में बीबीएमबी

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा और पंजाब के बीच छिड़े जल विवाद के दौरान बीबीएमबी (भाखड़ा ब्यास मैनेजमेंट बोर्ड) ने पंजाब सरकार को बड़ा झटका देने की तैयारी कर ली है। बीबीएमबी अब भाखड़ा की सुरक्षा पंजाब से वापस

लेकर सीआईएसएफ को सौंपने जा रहा है। बीबीएमबी के चेयरमैन मनोज त्रिपाठी ने शुक्रवार की शाम हुई सुनवाई के दौरान हाईकोर्ट में एक शपथ पत्र दायर करके पूरे घटनाक्रम की रिपोर्ट दी है।

सिर्फ सीजफायर हुआ है...

● पाकिस्तान को किसी भी कीमत पर नहीं बख्शेगा भारत

नई दिल्ली (एजेंसी)। पहलगाम आतंकवादी हमले के बाद सीमा पार तनाव बढ़ने को पूरी दुनिया ने देखा। भारत ने इसके बाद ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम दिया। शनिवार को भारत और पाकिस्तान तत्काल सीजफायर पर सहमत हो गए हैं। सीजफायर भारतीय और पाकिस्तानी अधिकारियों के

सिंधु जल समझौता से लेकर वीजा सेवाओं तक सब स्थगित

बीच प्रत्यक्ष बातचीत का परिणाम था। इसमें इस्लामाबाद ने बिना किसी पूर्व शर्त, बिना किसी बाद की शर्त और अन्य मुद्दों से किसी भी तरह के संबंध के साथ शर्तों पर सहमति व्यक्त की थी। हालांकि, सीजफायर के बाद भी भारत पाकिस्तान को बख्शने के मूड में नहीं है। भारत के छह

फैसले ऐसे हैं जो संघर्ष विराम के बाद भी लागू रहेंगे। **सिंधु जल समझौते पर रोक,अटारी चेक पोस्ट नहीं खुलेगा-** सरकारी सूत्रों ने पुष्टि की है कि सिंधु जल संधि स्थगित रहेगी। विदेश मंत्रालय के सूत्रों ने कहा कि शनिवार को हुए युद्ध विराम समझौते में कोई पूर्व शर्त नहीं है, और सिंधु जल संधि स्थगित रहेगी। वहीं अटारी में एकीकृत चेक-पोस्ट भी बंद रहेगा। वहीं राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में, भारत देश के भीतर प्रदर्शन करने वाले पाकिस्तानी अभिनेताओं और कलाकारों पर अपना प्रतिबंध जारी रखेगा। भारत पाकिस्तानी नागरिकों के लिए सभी प्रकार के वीजा का निलंबन जारी रखेगा। पहलगाम आतंकवादी हमले के बाद, सरकार ने पाकिस्तानी नागरिकों के लिए सभी श्रेणियों के वीजा को सस्पेंड कर दिया था।

व्यापार पर जारी रहेगा प्रतिबंध एयर स्पेस भी रहेगा बंद

पाकिस्तान से सभी आयातों पर प्रतिबंध, चाहे वे प्रत्यक्ष हों या मध्यस्थ देशों के माध्यम से, भी जारी रहेगा। इसके अतिरिक्त, पाकिस्तान में रजिस्टर्ड जहाजों को भारतीय बंदरगाहों में प्रवेश करने से रोक दिया गया है। साथ ही भारतीय जहाजों को पाकिस्तानी बंदरगाहों तक पहुंचने पर रोक लगा दी गई है-जो एक सख्त कूटनीतिक रुख को दर्शाता है। भारत पाकिस्तान से आने-जाने वाली या पाकिस्तान से होकर जाने वाली उड़ानों के लिए अपने हवाई क्षेत्र को बंद करना जारी रखेगा। यह कदम 30 अप्रैल से लागू है। इस कदम से विदेशी एयरलाइन्स को, जो भारतीय क्षेत्र से बाहर निकलने के बाद पाकिस्तानी हवाई क्षेत्र से होकर उड़ान भरती हैं, लंबे, वैकल्पिक मार्गों का उपयोग करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

नि:शुल्क शिविर में खिलाड़ियों को सिखाई जा रही हैं बारीकियां

सुबह सवेरे सोहागपुर । खेल एवं युवा कल्याण विभाग के तत्वावधान में पंडित जवाहरलाल नेहरू स्मृति महाविद्यालय परिसर में निशुल्क ग्रीष्मकालीन खेल प्रशिक्षण शिविर निरंतर चलाया जा रहा है । आज एक सप्ताह पूर्ण होने वॉलीबॉल खेल मैदान पर मुख्य अतिथि प्रथम श्रेणी न्यायाधीश संगीता डाबर मौर्य,जवाहरलाल नेहरू स्मृति महाविद्यालय महाविद्यालय प्राचार्य एन के नीखरा , महाविघालय शिक्षा समिति सचिव हमीरसिंह चंदेल आदि ने खेल मैदान का निरीक्षण करने के उपरांत वॉलीबॉल एवं कराटे के खिलाड़ियों छात, छात्राओं से परिचय प्राप्त किया। अतिथियों ने नन्हें खिलाड़ियों को खेल के प्रति उत्साहित किया गया । इस अवसर पर नन्हें खिलाड़ियों को ब्लॉक समन्वयक चंदा मिश्रा एवं वॉलीबॉल कोच आशु राय ने खेल की बारीकियां सिखाई । इस अवसर पर कराटे कोच राखी सराठे शैलेश खुराना आदि उपस्थित थे।

नेशनल लोक अदालत में 3 लाख 78 रूपये की राजस्व प्राप्ति

सोहागपुर। नेशनल लोक अदालत में नगर पंचायत परिषद को 3 लाख 78 हजार रूपये की राजस्व प्राप्ति हुई है। नगर पंचायत परिषद राजस्व शाखा प्रभारी संजय परसाई ने बताया कि नेशनल लोक अदालत में कुल 300 प्रकरण रखे गए थे। जिसमें 150 जलकर एवं 150 संपत्ति कर के प्रकरण थे। । संबंधित प्रकरणों का निपटारा किया गया ।जिसमें नगर परिषद को 3 लाख 78 हजार रूपये की राजस्व की प्राप्ति हुई। इस नेशनल लोक अदालत में नगर पंचायत परिषद राजस्व शाखा प्रभारी संजय परसाई के अलावा एच. एल. परते , प्रदीप दुबे ,हरगोविंद व्यास ,नरेंद्र धुर्वे ,राधेश्याम रघुवंशी,अनिल रघुवंशी , प्रबुद्ध दुबे , भूपेन्द्र मांझी, लक्ष्मीनारायण मालवीय, प्रहलाद किरार, सूर्यनारायण पठारिया, प्रवेश ठाकुर आदि उपस्थित थे।

आदि गुरु शंकराचार्य की 1237वीं जयंती के उपलक्ष्य में वक्ताओं ने अपने विचार रखे

सुबह सवेरे सोहागपुर । मप्र जन अभियान परिषद् के तत्वावधान में संचालित मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृव क्षमता विकास पाठ्यक्रम के छात्र,छात्राओं, प्रस्फुटन समितियों के सदस्यों , कार्यक्रम मुख्यमंत्री अतिथि कथा वाचक पंडित धर्मेंद्र गोस्वामी, समाजसेवी विशाल गोलानी, पूर्व पार्षद राकेश चौरसिया, जिला समन्वयक पवन सहगल के आतिथ्य में आयोजित किया गया। ब्लाक जन अभियान परिषद समन्वयक किशोर कड़ोले ने बताया कि कक्षा संचालन के साथ साथ आदिगुरु शंकराचार्य जी की 1237? वी जयंती का आयोजन किया गया । वैसे यह 2 मई आदि शंकराचार्य गुरुजी की जयंती मनाई जाती है। परंतु जन अभियान परिषद के राज्य कार्यालय के निर्देशानुसार आदि शंकराचार्य की जयंती पर्व को एक पाक्षिक कार्यक्रम के रूप मनाया गया है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि धर्मेंद्र गोस्वामी ने आदि शंकराचार्य के पूरे जीवन काल पर वृस्तित उद्बोधन दिया।

इसके पूर्व जिला समन्वयक पवन सहगल ने आदि शंकराचार्य के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जब नदी में मगरमच्छ शंकराचार्य को पकड़ लेता है। और माता से याचना करते हैं कि माता में तो वैसे ही मर जाउगां। क्यों न आप मुझे मौह माया के बंधन से मुक्त कर दो। और माता ने संन्यास की अनूमति ली । और संसारिक जीवन त्याग करके पैदल ही धर्म का प्रचार करने को निकल गए। कार्यक्रम का संचालन मेंटर गजेंद्र ठाकुरने किया। कार्यक्रम के पूर्व अतिथियों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम का आयोजन विकास खंड समन्वयक किशोर कड़ोले के सानिध्य में किया गया। इस अवसर पर नवांकुर निर्मल विकास सेवा समिति, नवरंग युवा मंडल व सोहागपुर मित्र संघ के पुष्पेंद्र ठाकुर, संदेश मिश्रा, कमल किरार , मेंटर श्याम मीना सचिन विश्वकर्मा मंजु पंवार , निशा चौरसिया , छात्र , छात्रों के अलावा आदिवासी ग्रामों छेड़का, ग्राम बोदी, ग्राम साकई आदि प्रस्फुटन समिति के सदस्य उपस्थित थे।

जनजातीय कला और शिल्प हमारी लोक संस्कृति की अनमोल धरोहर : राज्यपाल

जनजातीय समुदाय की सतत आजीविका के लिए राज्य सरकार के प्रयास सराहनीय

भोपाल(नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा है कि जनजातीय द्वारा सदियों से संरक्षित खान-पान, लोक कलाएं, शिल्प, वस्त्र, आभूषण, उपकरण और चिकित्सा पद्धतियां सभी हमारी अनमोल धरोहर है। हमारी इस लोक संस्कृति का संरक्षण और प्रोत्साहन समाज का दायित्व है। उन्होंने राज्य सरकार द्वारा जनजातीय समुदाय की सतत आजीविका के लिए प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित मौलिक, स्वाभाविक, कला, शिल्प और संस्कृति की सृजनशीलता को निखार कर व्यवसायिक बनाने के प्रयासों की सराहना की है।

राज्यपाल श्री पटेल तीन दिवसीय शिल्प ग्राम महोत्सव के समापन कार्यक्रम को रवीन्द्र भवन में संबोधित कर रहे थे। महोत्सव का आयोजन जनजातीय कार्य विभाग द्वारा वन्या प्रकाशन, राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान और ट्राइबल रिसर्च इंस्टीट्यूट के समन्वय से किया गया था। राज्यपाल श्री पटेल ने समापन कार्यक्रम के पूर्व सभागार में उपस्थित कलाकारों के पास पहुंचे और समक्ष में उनसे चर्चा की। कार्यक्रम में राज्यपाल को बैतूल जिले के शिल्पकारों की बेल मेटल से बनी जनजातीय कलाकृति स्मृति प्रतीक के रूप में और महोत्सव के प्रशिक्षणार्थी शिल्पियों, कलाकारों द्वारा निर्मित उत्पादों का सेट भेंट किए गए। राज्यपाल का वरिष्ठ गोंड कलाकार श्री आनंद श्याम ने पारंपरिक गोंड परंपरा के अनुसार साफा और बीरन माला से स्वागत किया।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि जनजातीय समुदाय के लिए गर्व की बात है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जनजातीय समुदाय को सक्षम बना कर उनके विकास और खुशहाली के लिए अभूतपूर्व कार्य किए हैं।पूरे देश में जनजातीय आबादी के लिए समान अवसरों के सृजन, सामाजिक-आर्थिक स्तर को उठाने, स्वास्थ्य, शिक्षा, बुनियादी ढांचे में सुधार और आजीविका के कार्य 'धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान' के तहत किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी ने देश की अति पिछड़ी जनजातियों जिनमें राज्य के बैगा, भारिया, सहरिया जनजातीय समुदाय शामिल हैं, उनके लिए जनमन योजना के तहत सुरक्षित आवास, स्वच्छ पेयजल तक पहुँच, बेहतर स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा, पोषण, सड़क एवं दूरसंचार कनेक्टिविटी के साथ-साथ स्थायी आजीविका के अवसर उपलब्ध कराए हैं।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री ने जनजाति समुदाय की आनुवंशिक बीमारी सिकल सेल को वर्ष 2047 तक समाप्त करने का संकल्प किया है। संकल्प की सफलता के लिए सरकार और समाज को मिलकर आगे आना होगा। राज्य सरकार द्वारा अभियान के रूप में कार्यवाही करते हुए प्रदेश की 1 करोड़ 6 लाख जनजातीय बहनों-भाईयों की स्क्रीनिंग कर ली है। स्क्रीनिंग में 2 लाख 6 हजार से अधिक वाहक और 28 हजार से अधिक रोगी मिले है। सभी को आवश्यक उपचार दिया जा रहा है। सिकल सेल की गर्भावस्था में और प्रसूति के 72 घन्टों के भीतर नवजात की जांच की सुविधाएं भी उपलब्ध करा दी गई है। वर्ष 2047 तक रोग उन्मूलन के लिए समुदाय को दो बातों पर विशेष ध्यान देना होगा। पहली, हर गर्भवती महिला की गर्भावस्था में और नवजात शिशु की 72 घन्टों के भीतर जांच हो जाए। दूसरी, जेनेटिक कार्ड मिलाकर ही विवाह संबंध तय किए जाए। किसी एक के रोगी, वाहक होने पर विवाह किया जा सकता है, किन्तु रोगी युवक-युवती का आपस में विवाह नहीं होना चाहिए।

राज्यपाल श्री पटेल ने जनजातीय समुदाय के गौरव रानी दुर्गावती और बिरसा मुण्डा का संदर्भ देते हुए कहा कि समुदाय को उनके गौरव से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ने के प्रयास करने होंगे। शिक्षा प्रगति की पहली सीढ़ी होती है। संतान को अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलाएं। सरकार द्वारा शिक्षा के लिए समुदाय को सभी तरह की सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही है। उन्होंने जनजातीय समुदाय विशेषकर युवाओं को सामाजिक कुरीतियों के प्रति आगाह किया, कहा कि प्रगति के लिए प्राथमिक आवश्यकता व्यसनों से दूर रहना है।

जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह ने कहा कि देश में पहली बार मध्यप्रदेश ने जनजातीय कला-शिल्प, संस्कृति-सभ्यता, रीति-रिवाज और मान्यताओं-परंपराओं के संरक्षण और भावी पीढ़ी में हस्तांतरण की सार्थक पहल की है। शीघ्र ही हरसूद में 100 सीटर बालिका-बालक प्रशिक्षण केन्द्र प्रारंभ किया जाएगा। केन्द्र में जनजातीय समुदाय के शिल्पकार, कलाकारों द्वारा जनजातीय संस्कृति और सभ्यता के विभिन्न आयामों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि राज्यपाल श्री पटेल ने उनको बताया है कि कला का सम्मान समाज का दायित्व है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि राज्यपाल महोदय की भावना के अनुसार निर्माणाधीन प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा प्रशिक्षक कलाकारों को सम्मान जनक मानदेय दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि राज्य की मोहन सरकार द्वारा जनजातीय समुदाय की खुशहाली के कार्यों में कोई कोर-कसर छोड़ी नहीं जाएंगी।

आयुक्त जनजातीय कार्य एवं प्रबंध संचालक वन्या प्रकाशन श्री श्रीमन शुक्ला ने महोत्सव की जानकारी देते हुए बताया कि परंपरा को डिजाइन का साथ मिलता है तो वह आजीविका और आत्मनिर्भरता का प्रतीक बन जाता है। उन्होंने बताया कि महोत्सव के दौरान विशेषज्ञों द्वारा जनजातीय कलाकारों को तकनीकी ज्ञान देने के साथ ही जनजातीय शिल्प, कौशल व्यंजन परंपरा की प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था। समापन कार्यक्रम में गोंड चित्र कलाकार श्री गगन सिंह मरावी, गौंड चित्रकार एवं नृत्यांगना श्रीमती संदीप्ती परस्ते ने प्रशिक्षण के अनुभवों को साझा किया। आयुक्त आदिमजाति क्षेत्रीय विकास योजनाएं श्रीमती वंदना वैद्य ने आभार प्रदर्शन में बताया कि महोत्सव में जनजातीय कार्य मंत्री ने क्रेता के रूप में आकर प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया था। कार्यक्रम का संचालन श्री विनय उपाध्याय ने किया।

समापन समारोह में अपर मुख्य सचिव सह संचालक जनजातीय अनुसंधान केन्द्र श्री विनोद कुमार, जनजातीय प्रकोष्ठ राजभवन की सदस्य सह सचिव श्रीमती जमुना भिड़े, राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान के रजिस्ट्रार श्री कृष्ण बिरहमन भी मंचासीन थे।

उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के लिये इंदौर में बनेगा गेस्ट हाउस : मुख्यमंत्री

रेसीडेंसी कोठी परिसर में किया भूमि-पूजन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रसन्नता जताते हुए कहा कि इंदौर में सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट के न्यायाधीशों के लिए गेस्ट हाउस बनाया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रेसीडेन्सी कोठी परिसर इंदौर में गेस्ट हाउस का शिलान्यास किया। इस अवसर पर सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री जे. के. माहेश्वरी, न्यायमूर्ति श्री एस.सी.शर्मा, उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री सुरेश कुमार कैत, उच्च न्यायालय के प्रशासनिक न्यायमूर्ति एवं निर्माण समिति के चेयरमैन श्री संजीव सचदेवा मौजूद रहे।

शिलान्यास समारोह में उच्च न्यायालय के एडमिनिस्ट्रेटिव जज श्री विवेक रुसिया,उच्च न्यायालय के रजिस्ट्रार जनरल श्री धर्मेन्द्र सिंह, न्यायामूर्ति श्री आनंद पाठक सहित उच्च न्यायालय के न्यायामूर्ति एवं एडवोकेट विशेष रूप से उपस्थित थे। इस मौके पर नगरीय प्रशासन एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय, जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, कौशल विकास एवं रोजगार विभाग मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गौतम टेटवाल, महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव, विधायक श्रीमती मालिनी गौड़, श्री रमेश मेंदोला, श्री गोलू शुक्ला,श्री सुमित मिश्रा, संभागायुक्त श्री दीपक सिंह, पुलिस कमिश्नर श्री संतोष सिंह, कलेक्टर श्री आशीष सिंह सहित वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर दी बधाई

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं हैं। उन्होंने कहा कि वर्ष 1998 में आज के ही दिन पोखरण-सेकेण्ड का सफल परीक्षण किया गया था। इस गौरवशाली अवसर पर देश के वैज्ञानिकों, इंजीनियरों की वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धियों का स्मरण करते हुए उन विभूतियों को बारम्बार प्रणाम। उनके संकल्प व समर्पण से हमारा राष्ट्र, प्रौद्योगिकी के विभिन्न आयामों में नित नए अध्याय जोड़ रहा है।

भोपाल में बदमाश ने समारोह में की फायरिंग

सोशल मीडिया पर वायरल हुआ वीडियो, पुलिस बोली जांच करा रहे

भोपाल (नप्र)। भोपाल के गोविंदपुरा थाने के हिस्ट्री शीटर बदमाश गोपाल पाटिल का एक वीडियो वॉट्सएप पर वायरल हो रहा है। वीडियो अन्ना नगर में दो से तीन दिन पहले हुई एक शादी समारोह का बताया जा रहा है। वीडियो में गोपाल नाचते हुए देसी पिस्टल से दो राउंड फायर करता है। मौके पर मौजूद लोग उस पर जमकर पैसा उड़ा रहे हैं। वीडियो सामने आने के बाद टीआई अवधेश

सिंह तोमर ने बताया कि मामले की जांच करा रहे हैं। फिलहाल यह साफ नहीं हो सका है कि वीडियो कितना पुराना और कहां का है।

ऐसे सुर्खियों में आया था गोपाल- 16 नवंबर 2016 को गोपाल पाटिल ने गुर्गों के साथ मिलकर 23 वर्षीय दिनेश और 26 वर्षीय एम वेंकटेश पर पिस्टल से तीन फायर किए तथा जान से मारने की नीयत से दोनों युवकों पर चाकू से ताबड़तोड़ वार किए थे। हमला क्षेत्र में वर्चस्व बढ़ाने और पुरानी रंजिश को लेकर किया गया था। गोपाल बीते दस सालों से लगातार अन्ना नगर में सक्रिय रूप से अपराध कर रहा है। उसके खिलाफ दर्जनों मारपीट, हत्या के प्रयास, शराब तस्करी, अड़ीबाजी जैसे अपराध दर्ज हैं।

17 मई को भोपाल में फिर गूंजेगी हंसी की गूंज

स्टैंडअप कॉमेडियन अनुभव सिंह बस्सी का धमाल, रवींद्र भवन में होगा शो

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल एक बार फिर हास्य और मनोरंजन की महफिल का गवाह बनने जा रही है। 17 मई की शाम रवींद्र भवन में देश के लोकप्रिय स्टैंडअप कॉमेडियन अनुभव सिंह बस्सी अपने चिरपरिचित अंदाज़ में दर्शकों को गुदगुदाने आ रहे हैं। यह विशेष शो Team Curators और Oriole Entertainment के संयुक्त प्रयास से आयोजित किया जा रहा है।

अनुभव सिंह बस्सी, जो न सिर्फ एक स्टैंडअप कॉमेडियन हैं, बल्कि अभिनेता और यूट्यूबर के रूप में भी पहचान रखते हैं, 2017 में एक ओपन माइक से अपने करियर की शुरुआत करने के बाद आज लाखों लोगों के दिलों पर राज कर रहे हैं। उनका ठेठ देसी अंदाज़ और रोजमर्रा की जिंदगी से जुड़े चुटीले किस्से युवाओं के बीच बेहद लोकप्रिय हैं। खास बात यह है कि बस्सी करीब एक साल बाद फिर भोपाल में परफॉर्म करने जा रहे हैं, और उनके प्रशंसकों में इस शो को लेकर खासा उत्साह है। पिछली बार की तरह इस बार भी आयोजन स्थल रवींद्र भवन दर्शकों से खचाखच भरा रहने की उम्मीद है।

जल गंगा संवर्धन अभियान-2025

41 दिनों में ही तय लक्ष्य से ज्यादा अमृत सरोवरों को बनाने का काम शुरू

- **प्रदेश में निर्मित हो रहे हैं 1012 अमृत सरोवर**

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृव में प्रदेश में जल गंगा संवर्धन महाअभियान चलाया जा रहा है। इस महाअभियान की शुरुआत मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बाबा महाकाल की नगरी उज्जैन से की थी। पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल प्रदेश में जलसंरचनाओं के संरक्षण के लिए प्रदेश में नदियों के उदगम स्थलों का दौरा कर रहे हैं। अभियान तीव्र गति से अपने लक्ष्यों को पूर्ण करने की ओर बढ़ रहा है। पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग ने मनरेगा (महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम) के तहत प्रदेश में 1 हजार अमृत सरोवरों के निर्माण का लक्ष्य रखा था। अभियान के 41 दिवस में ही निर्धारित लक्ष्य से अधिक प्रदेश में 1012 अमृत सरोवरों को बनाने का काम भी शुरू कर दिया गया है।

अभियान में कूप रिचार्ज पिट, बावड़ी, खेत-तालाब, अमृत सरोवर, बोरी बंधान, चेकडैम सहित अन्य कार्य कराए जा रहे हैं। इसके साथ पुराने जल स्त्रोतों की सफाई, नदियों की जल धाराओं को जीवित के लिए गेबियन संरचना, कंटूर ट्रेंच जैसे जल संरक्षण संरचनाओं का कार्य किया जा रहा है।

अमृत सरोवरों से बढ़ेगा भू-जल स्तर

प्रदेश में बड़ी संख्या में अमृत सरोवर बन जाने से प्रदेश का भू-जल स्तर बढ़ेगा। इससे जल संकट की समस्या से निजात मिलेगी। गर्मियों में कुओं, हैंडपंपों और ट्यूबवेलों का जलस्तर कम नहीं होगा। साथ ही, ग्रामीण आजीविका के साधन भी बढ़ेंगे। सिंचाई के साथ मछली पालन और सिंघाड़े की खेती सहित अन्य गतिविधियों में सरोवरों का पानी इस्तेमाल किया जा सकेगा।

जल गंगा संवर्धन अभियान

जल गंगा संवर्धन अभियान का मुख्य उद्देश्य बारिश के पानी सहेजना और पुराने जल स्त्रोतों को संवारना है। प्रदेश सरकार द्वारा चलाए जा रहे महाअभियान में प्रदेश में भू-जल स्तर पर सुधार आएगा। कुओं, नलकूपों का जलस्तर बढ़ेगा। इसके साथ ही किसानों को फसलों की सिंचाई के लिए पर्याप्त मात्रा में पानी भी उपलब्ध होगा।

30 जून तक जारी रहेगा अभियान

प्रदेश में जल गंगा संवर्धन अभियान तीन माह तक चलेगा। प्रदेश सरकार द्वारा 30 मार्च से प्रदेशव्यापी महाअभियान की शुरुआत की गई है, जो 30 जून 2025 तक संचालित किया जाएगा।

भाजपा प्रदेश प्रवक्ता नरेन्द्र सलूजा की श्रद्धांजलि सभा

प्रदेश बीजेपी कार्यलाय में नेताओं ने सुनाए संस्मरण ; पत्नी-बेटी भी शामिल हुई

भोपाल (नप्र)। बीजेपी के प्रदेश प्रवक्ता नरेन्द्र सलूजा का 30 अप्रैल को हार्ट अटैक से निधन हो गया था। रविवार को बीजेपी प्रदेश कार्यालय में नरेन्द्र सलूजा की श्रृद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा, संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा, पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश पचौरी, बीजेपी प्रदेश मीडिया प्रभारी आशीष अग्रवाल, ग्वालियर भाजपा जिलाध्यक्ष जयप्रकाश राजौरिया, प्रदेश प्रवक्ता डॉ हितेश बाजपेई, भोपाल भाजपा शहर अध्यक्ष रविंद्र यति और भोपाल के पत्रकार बड़ी संख्या में मौजूद रहे। श्रद्धांजलि सभा में नरेंद्र सलूजा की पत्नी रिम्पी सलूजा और बेटी और बेटा भी शामिल हुए।

कांग्रेस प्रवक्ताओं ने भी बीजेपी ऑफिस पहुंचकर दी श्रृद्धांजलि- बीजेपी ऑफिस में आयोजित श्रृद्धांजलि सभा में कांग्रेस के प्रवक्ताओं अभिनव बरोलिया और फीरोज सिद्दीकी ने भी नरेन्द्र सलूजा को श्रृद्धांजलि अर्पित की।

कांग्रेस से शुरु हुआ राजनीतिक सफर, कमलनाथ के करीबी रहे- नरेंद्र सलूजा का राजनीतिक जीवन कांग्रेस से शुरू हुआ था। कॉलेज के छात्र जीवन से ही नरेंद्र सलूजा कांग्रेस में सक्रिय रहे। उन्होंने सामान्य कार्यकर्ता के रूप में राजनीतिक करियर शुरू किया था। वे शुरू से ही पूर्व मंत्री सज्जन सिंह वर्मा के कट्टर समर्थक रहे। इसके बाद ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष और फिर इंदौर शहर कांग्रेस के प्रवक्ता बने। अरुण यादव जब प्रदेश अध्यक्ष बने तो उन्होंने सलूजा को संभागीय प्रवक्ता बनाया। यहां से वे कांग्रेस की प्रदेश मीडिया टीम का हिस्सा बने।

कमलनाथ के करीबी रहे, 2021 में बीजेपी में आए- वह लंबे समय तक पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के सबसे करीबी माने जाते थे। नरेंद्र सलूजा कांग्रेस के मीडिया विभाग के उपाध्यक्ष की जिम्मेदारी संभालते थे। कांग्रेस में उन्हें कमलनाथ का सबसे विश्वस्त माना जाता था। पार्टी की रणनीतियों से लेकर मीडिया मैनेजमेंट तक में सलूजा की भूमिका अहम मानी जाती थी। लेकिन 2022 में भारत जोड़ो यात्रा के दौरान एक घटना ने कमलनाथ और सलूजा के बीच के रिश्ते में गहरी दरार डाल दी।

प्रोत्साहन राशि की घोषणा का परिणाम, 77.74 लाख मीट्रिक टन गेहूँ उपार्जित : खाद्य मंत्री राजपूत

भोपाल(नप्र)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविन्द सिंह राजपूत ने कहा है कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा किसानों के हित में न्यूनतम समर्थन मूल्य के अतिरिक्त 175 रुपये प्रति क्विंटल बोनस की घोषणा के परिणामस्वरूप इस वर्ष लगभग 9 लाख किसानों से 77 लाख 74 हजार मीट्रिक टन गेहूँ का उपार्जन हुआ है। उन्होंने बताया कि गत वर्ष 48 लाख 38 हजार मीट्रिक टन गेहूँ का उपार्जन हुआ था। मंत्री श्री राजपूत ने किसानों के हित में मुख्यमंत्री डॉ. यादव द्वारा दिये गये बोनस पर उनका आभार व्यक्त किया है। उन्होंने बताया कि गेहूँ के उपार्जन में मध्यप्रदेश देश में दूसरे स्थान पर है। मंत्री श्री राजपूत ने बताया है कि किसानों से उपार्जित गेहूँ में से 73 लाख 51 हजार मीट्रिक टन से अधिक गेहूँ का सुरक्षित भण्डारण भी किया जा चुका है। किसानों को उपार्जित गेहूँ का भुगतान भी लगातार किया जा रहा है। अभी तक लगभग 17 हजार 870 करोड़ रूपये से अधिक का भुगतान किसानों को किया जा चुका है। गेहूँ का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2425 रूपये है और राज्य सरकार द्वारा 175 रूपये प्रति क्विंटल बोनस दिया गया है। इस तरह से गेहूँ की खरीदी 2600 रूपये प्रति क्विंटल की दर से की गयी।

मानसून के पहले भोपाल शहर के सभी नाले-नालियों का वृहद सफाई अभियान

मंत्री सारंग ने नगर निगम अधिकारियों को भोपाल के सभी नाले-नालियों की सफाई के दिये निर्देश

भोपाल (नप्र)। सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने रविवार को भोपाल शहर में नाले-नालियों की वृहद रुप से साफ-सफाई अभियान अंतर्गत नरेला विधानसभा के प्रभात चौराहे पर ड्रेनेज सिस्टम का निरीक्षण कर नगर निगम के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। मंत्री श्री सारंग ने बताया कि मानसून में जलभराव की स्थिति निर्मित न हो इसके लिए वृहद रूप से सफाई अभियान की शुरुआत की गई है। उन्होंने कहा कि इस अभियान के तहत भोपाल शहर के सभी नाले-नालियों की सफाई सुनिश्चित होगी। साथ ही नालों में लोग कचरा न डालें इसके लिए जनजागरण अभियान भी चलाया जाएगा। निरीक्षण के दौरान भोपाल नगर निगम के वरिष्ठ अधिकारियों, स्थानीय जनप्रतिनिधियों सहित क्षेत्रवासी उपस्थित रहे।

मानसून के पहले भोपाल के सभी नाले-नालियां होंगे साफ

मंत्री श्री सारंग ने बताया कि इस बार मौसम विभाग ने अनुमान जताया है कि मानसून भोपाल में एक सप्ताह पहले प्रवेश करेगा। इसे देखते हुए भोपाल शहर के सभी नाले नालियों की सफाई वृहद के लिये अभियान की शुरुआत की गई है। उन्होंने कहा कि हर वर्ष मानसून पूर्व नगर निगम सफाई अभियान चलता है। मंत्री श्री सारंग ने निर्देश दिये कि इस कार्य की शुरुआत पहले से ही कर दी जाए। इससे समय पर सफाई कार्य पूर्ण हो सकेगा और भविष्य में जलभराव की स्थिति निर्मित नहीं होगी।

संपादकीय

क्या होगा जस्टिस वर्मा का

घर से मिले अधजले कैश कांड में फंसे दिल्ली हाई कोर्ट के जस्टिस यशंवत वर्मा ने सुप्रीम कोर्ट द्वारा मामले की 3 सदस्यीय कमेटी की रिपोर्ट के बाद पद से इस्तीफा देने से इंकार कर दिया है। बताया जाता है कि कमेटी ने जस्टिस वर्मा के घर कैश मिलने की पुष्टि कर दी है। उसके बाद भी जस्टिस वर्मा पद छोड़ने से इंकार कर रहे हैं तो इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि त्यागपत्र देने का परोक्ष रूप से यही अर्थ होगा कि उन्होंने अपराध को स्वीकार कर लिया है। जबकि जस्टिस वर्मा इस बात से इंकार करते रहे हैं कि उनके दिल्ली स्थित निवास पर मिली नकदी उनकी नहीं है। उन्हें किसी ने षड्यंत्र के तहत फंसाया गया है। इस पूरे में मामले में न्यायपालिका और प्रशासन की भूमिका सवालों के घेरे में रही है। संदेश जा रहा था कि व्यवस्था जस्टिस वर्मा को बचाने में लगी है और पूरे प्रकरण को दबाया जा रहा है। इसको भांपकर सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस संजीव खन्ना से जस्टिस वर्मा के घर से मिले अधजले नोटों का न सिर्फ वीडियो जारी करवाया बल्कि इस पूरे मामले की जांच के 3 न्यायाधीशों की कमेटी गठित कर दी। इस कमेटी में पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस शील नागू, हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस जी. एस. संधावालिया और कर्नाटक हाई कोर्ट की जज जस्टिस अनु शिवरामन सदस्य थे। सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर कमेटी ने विगत 25 मार्च को मामले की जांच शुरू की और 4 मई को अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू व प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को सौंप दी। रिपोर्ट मिलने के बाद सीजेआई खन्ना ने जस्टिस यशवंत वर्मा से अपना जवाब दो दिन में देने को कहा था। साथ ही यह भी कहा था कि चूंकि उनके निवास से अधजली नकदी मिलने और बाद में उसे वहां से हटाने की पुष्टि हो गई है, इसलिए वो स्वयं पद से इस्तीफा देने पर विचार करें। अपने जवाब में जस्टिस वर्मा ने एक बार फिर इस्तीफा देने से इंकार कर दिया। ऐसे में सवाल उठ रहा है कि आरोप सिद्ध होने के बाद भी अगर जस्टिस वर्मा पद से त्यागपत्र नहीं देते हैं तो उन्हें न्यायमूर्ति के ओहदे से हटाने की कौन सी कानूनी प्रक्रिया है। संविधान के मुताबिक सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट के जज अगर स्वयं इस्तीफा नहीं देते हैं तो उन्हें संसद में महाभियोग के जरिए ही पद से हटाया जा सकता है। गौरतलब है कि जस्टिस वर्मा के दिल्ली स्थित निवास के स्टोर रूम से 14 मार्च की रात अधजले नोट बड़ी मात्रा में मिले थे। तभी से जस्टिस वर्मा की ईमानदारी पर सवाल उठने शुरू हो गए थे। हालांकि जस्टिस यशवंत वर्मा का कहना था कि उन्होंने या उनके परिवार वालों ने इस तरह कभी घर में कैश नहीं रखा। उनके खिलाफ साजिश रची गई है। लेकिन जस्टिस वर्मा यह भी नहीं बता पाए कि अगर किसी ने साजिश भी रची हो तो वो कौन लोग हो सकते हैं। उधर सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले को गंभीरता से लेते हुए जस्टिस वर्मा का तबादला दिल्ली से इलाहाबाद हाई कोर्ट कर दिया था तथा उनसे न्यायिक अधिकार भी छीन लिए थे। अब सरकार के पास जस्टिस वर्मा को हटाने का एकमात्र विकल्प महाभियोग चलाने का है। लेकिन इसकी प्रक्रिया बहुत लंबी है और भारत में आज तक उच्च न्यायपालिका के किसी जज को इसके माध्यम से नहीं हटाया जा सका है। पूर्व में भारत में ऐसे केवल दो उदाहरण है, जिनमें जजों पर महाभियोग चलाया गया, लेकिन वो संसद में पारित होने के पहले सम्बंधित जजों ने इस्तीफा दे दिया।

एआई : मानव का स्थानापन्न, एक चेतावनी

नजरिया

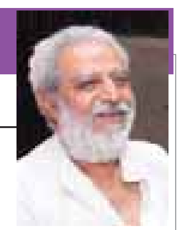

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी विचारक हैं।

कृत्रिम मेधा के खतरे निरंतर बढ़ते जा रहे और नए-नए आयाम छूते जा रहे हैं। कई बार यह चिंता होती है कि क्या यह कृत्रिम मेधा की तकनीक इंसान को धरती पर रहने भी देगी या इंसान का विकल्प बन जाएगी? पिछले दिनों कुंभ मेले की खबर 21 फरवरी 2025 के दैनिक भास्कर में छपी थी, जिसमें रामगढ़ के एक सीसीएल कर्मी अखिलेश प्रजापति अपनी 65 वर्षीय मां को घर में ताले में बंद कर पत्नी बच्चों के साथ कुंभ स्नान करने चले गए। एक दिन बाद उसकी मां संजू देवी ने जोर जोर से चीख चीख कर मदद की गुहार लगाई और पड़ोसी उसकी आवाज सुनकर वहां पहुंचे तो देखा मुख्य द्वार पर ताला लगा है, और संजू देवी अंदर बंद है। पड़ोसियों ने संजू देवी की बेटी चांदनी देवी को सूचना दी। चांदनी देवी और और उसके मामा रामगढ़ थाने गए तथा पुलिस ने वार्ड पार्षद संगीता देवी के सहयोग से ताला तोड़कर संजू देवी को बाहर निकाल कर बिस्किट पानी इत्यादि दिए और उनकी बेटी उन्हें इलाज के लिए अस्पताल ले गई।

लोगों ने उनके बेटे को संपर्क किया तो उसने बताया की 16 फरवरी को वे सपरिवार कुम्भ स्नान को निकले थे और अपनी मां के लिए खाना और चूडा छोड़कर गए थे तथा उनकी माँ ने ही उन्हें जाने के लिए कहा था। संभव है कि 65 वर्षीय वृद्ध और बीमार मां ने अपने बेटे बहू के मन और आग्रह को समझकर अपनी स्वीकृति दे दी हो, या यह भी हो सकता है की परंपरा और संस्कारों के मानसिक दबाव में उनने सहमति दी हो या आगे आने वाले 4-5 दिनों में क्या दिक्कत हो सकती हैं उन्हें समझे बगैर ही अपनी स्वीकृति दे दी हो, पर यह तो सब तर्क-वितर्क और कल्पनाएं हैं। मूल प्रश्न यह है कि क्या ऐसी वृद्ध बीमार माँ को बंदकर ताला लगाकर अकेले छोड़कर जाना चाहिए था? मानवीय पक्ष तो यह था कि उनकी मां अगर उनसे जाने का आग्रह भी करती तब भी वे जाने से इनकार करते या पति-पत्नी या बच्चों में से किसी एक को उनके पास छोड़कर जाते। अगर इतना भी मन नहीं था तो अपनी बहन या भाई को उनकी जवाबदारी देकर जाते। पर बीमार माँ को अकेले छोड़कर कुम्भ स्नान को जाना या मोक्ष प्राप्ति का कार्य, क्या कोई अच्छा या पुण्य कार्य माना जा सकता है? मैं, ईश्वर है या नहीं और अगर है तो किस स्वभाव के है, स्वर्ग या नर्क पुण्य व मोक्ष की बहस में जाए बगैर यह अवश्य सोचता हूँ कि अगर वास्तव में कोई ईश्वर होंगे तो वह ऐसे व्यक्ति को ना पुण्य का अधिकारी मानेंगे,ना मोक्ष का और अगर वास्तव में कोई स्वर्ग-नरक का विभाजन होता होगा तो ईश्वर भी इस व्यक्ति को नरक ही भेजेंगे।

इस घटना से जुड़ी हुई एक घटना 22 मार्च 2025 को सामने आई। मेरे साथी श्री मुकेश चंद्रा जी, जो मशीन व तकनीक से खेलने के अभ्यस्त हैं, ने इस समाचार को पढ़कर एलन मस्क के GROK- 3 AI को, इस घटना पर कविता बनाने के लिए निर्देशित किया और लगभग 5 सेकंड में GROK- 3 AI ने निम्नलिखित कविता लिखकर उनको भेज दी य

GROK- 3 AI को निर्देश- बीमार माँ को घर में बंदकर कुम्भ गया।

इस पर एक व्यंग कविता हिंदी में लिखे...

GROK- 3 AI से प्राप्त कविता,

बीमार माँ को घर में ठूंसा,
कुम्भ में स्नान का ढोंग रचाया,
पाप धोने का बहाना लेकर,
अंदर का पाप और बढ़ाया।
तन को पानी से नहलाया,
मन का मैल वहीं रह गया,
माँ की कराहें सुन न सके,
तीर्थ का तमाशा ले आया।
भीड़ में भक्ति का नाटक किया,
घर में लाचार को भूल गया,
कुम्भ से लौटा पवित्र बनकर,
पर दिल का काला रंग न ढका।

मैं कविता की गुणवत्ता पर विशेष चर्चा नहीं कर रहा हूं, बल्कि इस काव्य लेखन में जो खतरे में देख रहा हूं उसकी चर्चा कर रहा हूं। अगर अब एआई साहित्य रचेगी, निबंध लिखेगी और इतिहास, विज्ञान,समाज, मशीन, तकनीक, गणित और यहां तक कि व्यक्तियों के बारे में अपनी राय देगी तो क्या वह स्थानापन्न मानव नहीं बन जाएगी और अगर यह एआई मानवता का दूसरा रूप बन जाती है तो निम्न प्रकार के खतरे दुनिया और मानवता के सामने होंगे यह विचारणीय है?

1. मानव की सभी योग्यताएं और योग्यताओं की कसौटियां समाप्त हो जाएगी?

2. साहित्य लेखन या कविता के बारे में जो मानवीय प्रतिभा है वह धीरे-धीरे प्रासंगिकता खो देगी व समाप्त हो जाएगी। इस एआई की भावीं दुनिया में इतिहासकार, वैज्ञानिक, समाज वैज्ञानिक,साहित्यकार,चिकित्सक शिक्षक पुलिस आदि सब एआई होगी।

3. यह कितनी बेरोजगारी पैदा करेगी और युद्ध जैसे खतरों पर कितनी अमानवीय व क्रूर होगी इसकी कल्पना करना कठिन है।

4. अमानव रूपी मशीन रोबोट घर और समाज से लेकर सरकार और सड़क तक, संसद से लेकर युद्ध तक सब काम करेगी।

5. मशीनी युद्ध होंगे, मशीन मारेगी और मशीन मरेगी और इसका परिणाम दीमक के साथ घुन रूप में है, मानवता के पिसने का होगा? क्या यह संपूर्ण मानवता को हत्यारा और बेरोजगारी कदम नहीं होगा? या इन्हें अपनी मौत में धकेलना वाला नहीं होगा? रोबोट या एआई की एक छोटी सी गलत सूचना दुनिया को परमाणु युद्ध की ओर धकेल सकती है और नष्ट कर सकती है।

कृत्रिम मेधा के विकास के लिए दुनिया की, एलन मस्क जैसों की कुछ कंपनियां 27 लाख डाटा सेंटर बना रही हैं और एक डाटा सेंटर के ऊपर लगभग 30 लाख लोगों के उपयोग के बिजली के बराबर बिजली खर्च होगी यानी समूची दुनिया की आबादी की जरूरत से भी अधिक इन डाटा सेंटरों पर बिजली खर्च होगी। इसके लिए विपुल मात्रा में बिजली उत्पादन के दो ही मुख्य स्रोत होंगे-एक सौर ऊर्जा दूसरा परमाणु ऊर्जा।

सौर ऊर्जा के इतने बड़े संग्रह के लिए कितनी जमीन एवं धातु आदि लगेगी इसका आंकलन तो अभी होना है, परंतु इतने बड़े पैमाने पर बिजली बनाने के लिए जितने न्यूक्लियर प्लांट लगेंगे वह अपने आप में न्यूक्लियर बोम्ब जैसे होंगे। दुनिया में जिन दो स्थानों पर न्यूक्लियर प्लांट में लीकेज हुए थे उनमें एक जापान में था दूसरा रूस के चेनरोबिल में था। जापान ने तो अपनी उन्नत तकनीक और राष्ट्र के लिए समर्पित कार्य पद्धति के द्वारा उसे शीघ्र नियंत्रित कर लिया था, परंतु चेनरोबिल में नियंत्रण हेतु कई सप्ताह लगे थे तथा समुद्र से सटे एक बड़े भाग में परमाणु रेडिएशन फैला था।

यह बिजली की खपत वर्तमान योजना की तुलना में काफी कम दिखती हैं। जब छोटे से प्लांट पर 27 लाख डाटा सेंटर की जरूरत की पूर्ति के लिए हजारों न्यूक्लियर प्लांट लगाए जाएंगे, तब उनकी सुरक्षा और दुर्घटना से रक्षा एक असंभव सी घटना होगी। अब दुनिया और मानवता के सामने एक गंभीर खतरा है, जिनका उत्तर दुनिया को खोजना होगा और उनके उत्तर खोजने के लिए दुनिया को विवश होकर गांधी और लोहिया के विचारों की ओर मुड़ना होगा।

स्नेह और समर्पण में बसी नर्सों की अनमोल शक्ति

अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस

मुनीष भाटिया

हर वर्ष 12 मई को अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस मनाया जाता है - यह दिन आधुनिक नर्सिंग की जननी मानी जाने वाली फ्लोरेंस नाइटिंगेल की जयंती के रूप में चुना गया है। फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने सेवा, समर्पण और नारी शक्ति का ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया, जिसने न केवल नर्सिंग को एक उच्च दर्जा दिलाया, बल्कि चिकित्सा क्षेत्र में मानवीय मूल्यों की एक नई परिभाषा रची। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि सच्ची सेवा सीमाओं और पेशागत सीमाओं से परे होती है – वह सीधे हृदय से निकलती है और मानवता के उत्थान की दिशा में अग्रसर होती है। इस विशेष दिन का उद्देश्य केवल एक औपचारिक स्मरण नहीं है, बल्कि यह उन अनगिनत नर्सों के प्रति कृतज्ञता और सम्मान प्रकट करने का अवसर है, जो दिन-रात बिना थके, बिना रुके मानव सेवा में रत रहती हैं। वे न केवल रोगियों की देखभाल करती हैं, बल्कि उनके जीवन में आशा का संचार भी करती हैं। किसी भी अस्पताल की कार्यप्रणाली की सफलता में यदि कोई सबसे स्थायी और संवेदनशील स्तंभ है, तो वह नर्सें ही हैं।

नर्स केवल एक पेशेवर नहीं होती – वह कई रूपों में सेवा करती है। वह माँ की तरह रोगी का दर्द महसूस करती है, बहन की तरह उसके सिरहाने रात भर जागती है, और संत की तरह अपने कर्म से लोगों के जीवन में प्रकाश भरती है। नर्स का यह योगदान किसी पद या पैसे से नहीं मापा जा सकता। यह एक आंतरिक प्रेरणा है जो उसे हर दिन दूसरों के लिए जीने की शक्ति देती है। नर्सें अक्सर ऐसे कठिन हालातों में कार्य करती हैं जहाँ न केवल शारीरिक श्रम की जरूरत होती है, बल्कि मानसिक और भावनात्मक संतुलन भी अत्यंत आवश्यक होता है। बावजूद इसके, वे मुस्करा कर अपने कर्तव्यों का निर्वहन करती हैं - यही उन्हें विशेष बनाता है।

अक्सर स्वास्थ्य सेवाओं में चर्चा का केंद्र चिकित्सक होते हैं - उनके निर्णय, शल्य-क्रिया, या इलाज की विधियाँ। परंतु चिकित्सा प्रक्रिया की आत्मा नर्सिंग है। डॉक्टर भले ही जीवन बचाने का विज्ञान जानता हो, पर नर्स वह है जो उस जीवन को जीने योग्य बनाती है। रोगी की सेवा करते हुए नर्सें न केवल उसके शरीर का इलाज करती हैं, बल्कि उसकी मानसिक स्थिति को भी संभालती हैं। वे मरीज के दर्द को महसूस करती हैं, उसकी बेचैनी को समझती हैं और बिना कहे ही उसकी आवश्यकता को पहचान जाती हैं।जब एक रोगी अस्पताल में दाखिल होता है, तो वह केवल बीमारी के बोझ से नहीं टूटता, बल्कि अकेलेपन, डर और अनिश्चितता से भी जूझता है। उस समय नर्स ही होती है जो उसकी आंखों में विश्वास भरती है, उसे यह महसूस कराती है कि वह अकेला नहीं है। यही कारण है कि नर्स की भूमिका चिकित्सक की छाया नहीं, बल्कि उसका मानवीय विस्तार है।

आज के भौतिकवादी युग में जहां अधिकांश पेशे केवल आजीविका के साधन बन गए हैं, वहीं नर्सिंग एक ऐसा क्षेत्र है जो अभी भी सेवा-संकल्प की भावना से जुड़ा है। यह एक ऐसा पेशा है जिसे केवल वही व्यक्ति चुन सकता है, जिसके भीतर करुणा और संवेदना जीवंत हो। यहाँ केवल तकनीकी दक्षता पर्याप्त नहीं होती; आवश्यक होता है एक ऐसा मन जो दूसरों के दर्द को अपना बना ले, और एक ऐसा हृदय जो सेवा में संतोष ढूंढ़ सके। कोविड-19 महामारी ने इस सत्य को सबसे उजागर रूप में सामने लाया। जब पूरी दुनिया अपने घरों में सुरक्षित रहने का प्रयास कर रही थी, तब नर्सें अस्पतालों में मोर्चा संभाले खड़ी थीं। PPE किट्स में घंटों काम करना, सांस लेने में कठिनाई के बावजूद सेवा देना, संक्रमण के डर को पीछे छोड़कर पीड़ितों के पास पहुँचना - यह केवल पेशागत कर्तव्य नहीं था, बल्कि यह एक तपस्विनी भावना का परिचायक था। नर्सों ने अपने कर्म से यह सिद्ध कर दिया कि वे केवल सहयोगी नहीं, बल्कि समाज की सच्ची नायिकाएँ हैं।

एक समय था जब नर्सिंग को समाज में एक निम्नस्तरीय या पूरक पेशे के रूप में देखा जाता था। परंतु आज यह सोच तेजी से बदल रही है। नर्सिंग अब एक सम्मानजनक और सशक्त पेशा बनकर उभरा है। युवाओं के बीच नर्सिंग के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। यह केवल आर्थिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि सामाजिक सेवा की भावना से प्रेरित है। आज देश भर में नर्सिंग कॉलेजों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हो रही है। विशेषकर छोटे शहरों और गाँवों में युवतियाँ इस क्षेत्र में प्रशिक्षण लेकर न केवल अपनी जीवन दिशा बदल रही हैं, बल्कि समाज में नई चेतना का संचार भी कर रही हैं। उनके लिए यह पेशा अब केवल नौकरी नहीं, बल्कि स्वाभिमान और आत्मनिर्भरता का मार्ग बन गया है।

नर्सिंग ने विशेष रूप से महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह पेशा महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाता है, उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करता है और समाज में एक गरिमामय स्थान दिलाता है। यह गर्व की बात है कि भारत की अनेक बेटियाँ आज इस क्षेत्र में न केवल देश में, बल्कि विदेशों में भी अपना परचम लहरा रही हैं। खाड़ी देश हों या यूरोप, अमेरिका या ऑस्ट्रेलिया - भारतीय नर्सों की मांग हर जगह है। उनके कार्य के प्रति समर्पण, कुशलता और सहानुभूति उन्हें वैश्विक मंच पर सम्मान दिला रही है। यह भारत की शिक्षा प्रणाली, मूल्य-व्यवस्था और सामाजिक संस्कारों की शक्ति को भी प्रदर्शित करता है।

अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस हमें यह सोचने का अवसर देता है कि क्या हम नर्सों को वह सम्मान और सुविधाएं दे रहे हैं, जिसकी वे अधिकारी हैं? सिर्फ एक दिन की प्रशंसा पर्याप्त नहीं है - उन्हें उचित वेतन, बेहतर कार्य परिस्थितियाँ, मानसिक स्वास्थ्य सहायता और सामाजिक मान्यता की आवश्यकता है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि उनकी सेवा भावना का शोषण न हो, बल्कि उसे सम्मान और सहयोग मिले।सरकारों और स्वास्थ्य संस्थानों को मिलकर यह जिम्मेदारी लेनी होगी कि नर्सों के लिए एक ऐसा वातावरण तैयार किया जाए जहाँ वे आत्मसम्मान, सुरक्षा और सहयोग के साथ कार्य कर सकें।

नर्सिंग केवल एक करियर विकल्प नहीं है- यह एक जीवन-दर्शन है। यह उन लोगों का मार्ग है जो जीवन को केवल अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए जीने का माध्यम मानते हैं। यह एक ऐसा क्षेत्र है जो सेवा, सहानुभूति और समर्पण से परिपूर्ण है।इस अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम नर्सों को केवल सम्मानित करें, बल्कि उनकी आवश्यकताओं को समझें, उनके अधिकारों की रक्षा करें और उन्हें वह गरिमा दें जिसके वे सच्चे अधिकारी हैं। क्योंकि जब नर्स मुस्कराती है, तो समाज का स्वास्थ्य भी मुस्कुराता है।

बुद्ध पूर्णिमा ज्ञान के प्रकाश का उत्सव

पर्व विशेष

सूर्यदीप कुशवाहा

लेखक स्तंभकार हैं।

बुद्ध पूर्णिमा तथागत बुद्ध के जीवन की तीन प्रमुख घटनाओं का जश्न मनाने का पर्व है। इस दिन राजकुमार गौतम का जन्म, उन्हे बुद्धत्व की प्राप्ति तथा महापरिनिर्वाण हुआ था। इस दिन को बुद्ध जन्मोत्सव, बुद्ध जयंती, वेसाक डे, वैशाख पूर्णिमा आदि नामों से भी लोग जानते हैं। गाँवों में इस दिन को पीपल पूर्णिमा भी कहते हैं। यह पावन पर्व हर्षोल्लास उत्सव के साथ मनाने का समय है। बौद्धों को एक-दूसरे से मिलने, तिसरण लेने और बुद्ध की शिक्षाओं के बारे में और अधिक जानने का मौका देता है। इसलिए, पूरी दुनियाभर में लोग बुद्ध जयंती मनाते हैं। इस दिन उपासक-उपासिकाएं बुद्ध विहारों में भिक्खुओं के लिए भोजन दान करते हैं और उनके लिए मोमबत्तियां तथा फूल ले जाते हैं। बदलें में भिक्खु उन्हे ध्यान करातें हैं, तथागत बुद्ध की शिक्षाओं को बतातें हैं। सभी बौद्ध इस दिन को खूब धूमधाम और खुशी-खुशी मनातें हैं। बुद्ध जयंती के दिन लोग अपने-अपने घरों की साफ-सफाई करके उन्हे फूलों और धम्म-ध्वज से सजाते हैं। यही कार्य आसपास के बुद्ध विहारों तथा गलियों में किया जाता है और नहाकर नए शुभ्र वस्त्र पहनते हैं। नजदीक के बुद्ध विहार, सार्वजनिक स्थल (या फिर अपने घर का आँगन) में लोग इकट्ठा होते हैं और तथागत बुद्ध की प्रतिमा को ऊँचे साफ-सुथरे स्थान पर रखकर उसके सामने आरामदायक स्थिति में बैठ जाते हैं। प्रतिमा को फूलों से सजाया जाता है तथा मोमबत्ती जलाकर प्रकाश किया जाता हैं। बौद्ध धम्म में प्रकाश को ज्ञान का प्रतीक माना गया है। इसलिए, जिस तरह तथागत बुद्ध ने अपने ज्ञान के प्रकाश से पूरे जग से पाखंड, अधंविश्वास, हिंसा के अंधकार को दूर किया। हमें भी स्वयं शिक्षित होने तथा दूसरों को शिक्षित करने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। यहीं क्रम प्रत्येक बौद्ध उपासक-उपासिका द्वारा दोहराया जाता हैं। जब तक उपस्थित सभी लोग यह काम नहीं कर लेते हैं। इसके बाद सामूहिक बुद्ध वंदना होती हैं और तिसरण तथा पञ्चसील ग्रहण किया जाता हैं। बुद्ध पूर्णिमा के दिन उपासक-उपासिकाएं मिष्ठान के साथ अन्य पकवान बनाते हैं। जिनमें खीर सबसे प्रमुख होता है। अर्थात इस दिन सभी बौद्धों के घर खीर जरूर पकाई जाती हैं। लोग एक-दूसरे को मंगलकामनाएं देते हैं, उपहार भेजते हैं तथा असहाय, निर्धन, गरीबों को क्षमतानुसार आवश्यक चीजों का दान जरूर करते हैं। शांति और करुणा का संदेश फैलाते हैं। आत्मज्ञान प्राप्त करने के साथ, उन्हें अपने दैनिक जीवन में लागू करने का प्रयास करते हैं। बुद्ध पूर्णिमा ज्ञान के प्रकाश का उत्सव है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

ताला तो लगा है, लेकिन दिल का क्या करें

व्यंग्य

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा उरतृप्त

लेखक व्यंग्यकार हैं।

शहर के बीचोंबीच जो मोहल्ला था, वह किसी जमाने में 'आदर्श नगर' कहलाता था। अब बस 'नगर' बचा था, आदर्श तो नेताओं की तरह गायब हो चुका था—सूचना का अधिकार डालिए, पर नहीं मिलेगा। मोहल्ले की एक पहचान थी—हर घर में एक ताला ज़रूर लटकता था, मगर चोरी हर चौथे दिन होती थी। ताले बस शोपीस बन चुके थे, जैसे संसद में बहस। कहते हैं, जो घर लुटता है, वही साक्षात प्रमाण होता है कि वहाँ कुछ था। और जहाँ कुछ न हो, वहाँ लुटेरे भी इज्ज़त से बगल से निकल जाते हैं, जैसे नेताओं के वादे चुनाव बाद।

'ताला तो लगा है, लेकिन दिल का क्या करें?'—ये संवाद बूढ़े हरिया ने टाँग दिए थे अपने दरवाज़े पर, और हर आने-जाने वाला इसे पढ़कर मुस्कुरा देता था। किसी ने कहा—'हरिया चाचा, आप तो शरद जोशी हो गए।' चाचा बोले, 'बेटा, मैं तो वही हूँ, बस 'जोशी' के बदले 'लोची' बन गया हूँ, रोज़ का लुटा, रोज़ का रोता।' हरिया का घर आखिरी बार लुटा था पिछली होली पर, जब चोर रंग-गुलाल के बहाने घर से सारी मिठाइयाँ और रेडियो ले गए थे। पुलिस आई थी, पंचनामा बना और जाते-जाते बोली, 'कुछ मिले तो बताएँगे'—जैसे गंगा में सिक्का फेंको और ऊपर से बोलो—'हे माँ, वापसी में रिटर्न गिफ्ट मत देना। लोगों ने सीखा था, जहाँ पुलिस हो, वहाँ रिपोर्ट लिखाने से बेहतर है घर का सामान फिर से खरीद लेना। मोहल्ले में चर्चा थी कि ताले अब सिर्फ इसलिए लगाए जाते हैं ताकि चोरों को लगे कि कुछ तो है अंदर—जिसे वे लूट सकें। ये विश्वास था या फ्रॉड की रणनीति, कोई नहीं जानता।

बबलू ने नया फ्रिज खरीदा था। दो दिन बाद ही मोहल्ले का चोर 'चम्पक' सपने में आ गया—'भाई, उस फ्रिज में सिर्फ पानी रखा है। अगली बार कुछ और लाना, नहीं तो ताला भी वापस कर देंगे।' बबलू रो पड़ा—'चम्पक भैया, फ्रिज मेरी बीवी की पहली कमाई से आया था, उसके साथ तुम्हारा ये व्यवहार!' चम्पक ने सॉरी बोला और अगली रात ताला लौटा गया। मोहल्ले में चर्चा थी—'अपने चम्पक में इंसानियत बची है।'

शहर में एक 'ताला टूटा अभियान' शुरू हुआ। प्रशासन ने बैनर लगाए—'ताला टूटे, तो घबराइए मत। हम हैं ना!' लोग बोले—'ताला टूटे से ज्यादा डर तो तुम्हारे बैनर देखकर लग रहा है।' जैसे ही मोहल्ला विकास प्राधिकरण ने गली पक्की की, चोरी बढ़ गई। एक मोहल्लेवासी ने चिट्ठी लिखी—'सड़क पक्की की, चोरों की सुविधा भी पक्की कर दी। अब तो गाड़ियों में लूटकर भागते हैं।'

पिछले महीने एक शादी हुई थी। दूल्हा-दुल्हन स्टेज पर फोटो खिंचवा रहे थे और पीछे से कोई पूरा दहेज ट्रक में लाद ले गया। CCTV ने पूरा वाकया रिकॉर्ड किया, लेकिन पुलिस ने कैमरा देखकर कहा—'छवि तो साफ़ है, पर आरोपी धुंधले हैं।' शादी के बाद दूल्हा बोला—'मुझे तो दुल्हन चाहिए थी, पर अब ट्रक के कागज़ भी मेरी जिम्मेदारी बन गए हैं।' मोहल्ले वालों ने इसे 'ट्रक विवाह' नाम दे दिया।

कभी-कभी मोहल्ला इतना संवेदनशील हो जाता था कि अगर कोई चोर पकड़ भी लिया जाता, तो लोग उसकी हालत देखकर दया खा लेते। एक बार चम्पक पकड़ा गया। बोला—'साहब, मैं मजबूरी में चोर बना। पिताजी RTI में गए थे, जवाब नहीं आया, माँ मनरेगा में रजिस्टर्ड थीं, पर काम नहीं मिला, बहन को शादी में साड़ी देनी थी, सो पंखा चुरा लिया।' सुनकर थानेदार रो पड़ा और बोला—'बेटा, तू भर्ती हो जा पुलिस में। तेरी भाषा में वो दर्द है जो अफसरों के आदेश में नहीं।'

सबसे दर्दनाक कहानी थी रमेश बाबू की। एक ज़माने में पोस्टमास्टर थे। अब घर में चिट्ठियाँ नहीं आतीं, सिर्फ बिजली के बिल और कोर्ट के नोटिस आते हैं। उनका ताला छह बार टूटा, पर कभी चोरों को कुछ मिला नहीं। अंत में उन्होंने ताले की जगह एक थाली टांग दी, जिस पर लिखा था—'भैया, अब कुछ नहीं बचा। आखिरी चाय भी खुद बना ली। ताला मत तोड़ना, आत्मा पहले ही चुराई जा चुकी है।'

उस रात बारिश हो रही थी, बिजली गुल थी। रमेश बाबू अपने टूटे ताले को निहारते हुए बैठे थे, आँखें भर आई थीं। दूर से एक गीत बज रहा था—'ये ताले भी अब रोते हैं'। मोहल्ले की गलियाँ सूनी थीं, और ताले जैसे चुपचाप खड़े थे—कहते हुए—'हमें तोड़ो, लेकिन हमें मत लजाओ' हम तो सिर्फ प्रतीक हैं, खोखलेपन के।

सावरकर मामला

विनय झैलावत

(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

मानहानि उसकी भी जो जीवित नहीं

कुछ दिन पहले सावरकर के परिवार द्वारा एक मानहानि की शिकायत में कहा गया था कि राहुल गांधी ने पिछले कई मौकों पर बार-बार वीर सावरकर को बदनाम किया है। इसमें उस विशिष्ट घटना का हवाला दिया गया था, जिसमें राहुल गांधी ने अमेरिका में इंडियन ओवरसीज कांग्रेस को संबोधित किया था। इस उद्बोधन का हवाला देते हुए कहा गया कि उन्होंने हिंदुत्व के नाम पर सावरकर को बदनाम किया।

राहुल गांधी के खिलाफ यह मामला वीर सावरकर के भतीजे सत्यकी सावरकर ने प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार राहुल गांधी ने सावरकर के खिलाफ जानबूझकर झूठे एवं निराधार आरोप लगाए। इसका आशय सावरकर की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाना और उनके परिवार को मानसिक पीड़ा देना था। यह मानहानिकारक भाषण इंग्लैंड में दिया गया। लेकिन, इसका प्रभाव पुणे में भी महसूस किया गया, क्योंकि इसे पूरे भारत में प्रकाशित और प्रसारित किया गया था। सत्यकी ने अपनी शिकायत में, सबूत के तौर पर समाचारों की कई रिपोर्ट और यूट्यूब से राहुल गांधी के लंदन में दिए गए भाषण के एक वीडियो का लिंक प्रस्तुत किया। उन्होंने दावा किया है कि, राहुल गांधी ने वीर सावरकर पर एक किताब लिखने का झूठा आरोप लगाया। इसमें उन्होंने एक मुस्लिम व्यक्ति को मारने का वर्णन किया था। इसे सावरकर ने कभी नहीं लिखा था और ऐसी घटना कभी हुई भी नहीं थी। सत्यकी ने तर्क दिया कि राहुल गांधी ने सावरकर को बदनाम करने और उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने के लिए खास उद्देश्य से किया गया। मामले के वादी सत्यकी सावरकर इन आरोपों को झूठा, दुर्भावनापूर्ण और अपमानजनक बताया। एक अन्य फौजदारी प्रकरण में सत्यकी द्वारा प्रस्तुत आपराधिक मानहानि के प्रकरण में भारतीय दंड संहिता की धारा 500 के तहत गांधी के लिए अधिकतम दंड की मांग की गई है। साथ ही भारतीय दंड संहिता की धारा 357 के अनुसार राहुल गांधी पर अधिकतम मुआवजा भी लगाने की मांग की।

सावरकर के मानहानि के मामले में एक घटनाक्रम में, पुणे में एक विशेष सांसद/विधायक न्यायाधिकरण ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा हिंदू महासभा के नेता द्वारा लिखी गई दो पुस्तकों की प्रतियां प्राप्त करने के लिए प्रस्तुत अनुरोध को स्वीकार किया। इसका उपयोग वादी सत्यकी सावरकर द्वारा सबूत के रूप में किया गया है। विशेष न्यायाधीश अमोल शिंदे ने राहुल गांधी द्वारा अपने वकील मिलिंद पवार के माध्यम से प्रस्तुत अनुरोध को स्वीकार कर लिया। राहुल गांधी के वकील ने कहा कि हमने समाचार पत्रों की कटिंग और भाषण के वीडियो रूप में अन्य सामग्री के साथ दो पुस्तकों की प्रतियों को बतौर सबूत पेश करने का अनुरोध किया है। वादी ने मानहानि का आरोप लगाया है। विशेष अदालत ने अनुरोध को मंजूरी दे दी। पहली पुस्तक 'माझी जन्मथेप' में अंडमान की कोठरी में सावरकर के समय के साथ-साथ उनके साथ हुए व्यवहार आदि का विवरण दिया गया। जबकि, दूसरी पुस्तक धर्म के आधार पर राष्ट्र को दो अलग-अलग देशों में विभाजित करने के उनके विचार से संबंधित है। इसे उन्होंने 1927 में लिखा था। न्यायालय ने वादी सत्यकी सावरकर को अन्य सामग्रियों के साथ दोनों पुस्तकें भी राहुल गांधी को सौंपने का आदेश दिया। इसके अलावा, राहुल गांधी के वकील को इन दो पुस्तकों की समीक्षा करने के बाद इस मामले पर अपना पक्ष प्रस्तुत करने के लिए भी कहा गया।

यह पहली बार नहीं है जब वीर सावरकर को राजनीतिक उद्देश्यों से उन्हें कुछ लोगों द्वारा बदनाम किया गया। आजादी के पश्चात उस समय की सरकार द्वारा दो अलग-अलग मौकों पर सावरकर पर तत्कालीन रॉलेट कानून का उपयोग करने का आरोप है। उन्हें महात्मा गांधी की हत्या में भी फंसाया गया था। दोनों ही मामलों में सर्वोच्च न्यायालय ने लगभग 20 वर्षों की अवधि के बाद सावरकर के पक्ष में फैसला किया। लेकिन, मानहानि क्या है और इस संबंध में प्रावधान कौन-कौन से है, यह जानना चाहिए। साथ ही विधायकों और सांसदों के न्यायालय में यह प्रकरण क्यों चलाया जा रहा है, यह जानना भी आवश्यक है।

मानहानि को सरल भाषा में एक ऐसे कृत्य की तरह जाना जाता है, जहां किसी के नाम एवं सम्मान को ठेस पहुंचाने के लिए असत्य वाक्यों एवं तथ्यों का इस्तेमाल हो। यह भारतीय न्याय संहिता की धारा 356 के अंतर्गत आता है। धारा 356 कहती है कि किसी प्रकार के बोले गए या पढ़े जाने के लिए शब्दों द्वारा या संकेतों द्वारा या दृष्यरूपों द्वारा किसी व्यक्ति के बारे में कोई लांछन इस आशय से लगाता है या प्रकाशित करता है कि ऐसे लांछन से ऐसे व्यक्ति की ख्याति की अपहानि की जाए या यह जानते हुए या विश्वास करने का कारण रखते हुए लगाता है या प्रकाशित करता है। ऐसे लांछन से ऐसे व्यक्ति की ख्याति की अपहानि होगी। इसमें इसके पश्चात अपवादित दशाओं के सिवाय इसके बारे में कहा जाता है कि वह उस व्यक्ति की मानहानि करता है।

यह जानना आवश्यक है कि क्या किसी मृत व्यक्ति को कोई लांछन लगाना मानहानि की श्रेणी में आ सकेगा? इसका उत्तर हां में होगा। यदि यह लांछन उस व्यक्ति की ख्याति की, यदि वह जीवित होता, अपहानि करता और उसके परिवार या अन्य निकट संबंधियों की भावनाओं को आहत करने के लिए आशंकित हो। साथ ही किसी कंपनी या संगम या व्यक्तियों के समूह के संबंध में उसकी वैसी हैसियत में कोई लांछन लगाना मानहानि की कोटि में आ सकेगा। इसके अलावा अनुकल्प के रूप में, या व्यंगोक्ति के रूप में अभिव्यक्त लांछन मानहानि की कोटि में आ सकेगा। कोई लांछन किसी व्यक्ति की ख्याति की अपहानि करने वाला नहीं कहा जाता, जब तक कि वह लांछन दूसरों की दृष्टि से प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः उस व्यक्ति के सदाचारिक या बौद्धिक स्वरूप को कम न करे। उस व्यक्ति की जाति के या उसकी आजीविका के संबंध में उसके सम्मान को कम न करें अथवा उस व्यक्ति की साख को कम न करे। यह सामग्री यह विश्वास ना कराए कि उस व्यक्ति का शरीर घृणोत्पादक दशा में है या ऐसी दशा में है जो साधारण रूप से निकृष्ट समझी जाती है। वहीं मानहानि दिवानी प्रकरणों में दिवानी अपकृत्य की श्रेणी में आता है। किसी के बारे में कुछ झूठ बोलने पर अगर किसी व्यक्ति को हानि होती है तो वह भी उक्त श्रेणी में आता है।

सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है कि विभिन्न अपराधों के आरोपी वर्तमान और पूर्व प्रतिनिधियों और विधानसभाओं को तेजी से न्याय देने के लिए विशेष अदालतों का निर्माण जनहित में है। इससे न्यायपालिका में विश्वास बढ़ेगा। उच्चतम न्यायालय, मद्रास उच्च न्यायालय की एक समिति द्वारा प्रस्तुत एक रिपोर्ट पर विचार कर रहा था। इसने विभिन्न अपराधों के लिए विशेष रूप से सांसदों को न्याय देने के लिए विशेष अदालतों के निर्माण पर आपत्ति जताई थी।

सन् 2017 में, सर्वोच्च न्यायालय ने लंबे समय से लंबित सांसदों के मुकदमों में तेजी लाने के लिए देशभर में विशेष अदालतों की स्थापना का आदेश दिया था। नतीजतन, 11 राज्यों में 12 विशेष न्यायधिकरणों की स्थापना विशेष रूप से कार्यों में प्रतिनियुक्तियों और सांसदों को न्याय देने के लिए की गई थी। प्रत्येक राज्य में विशेष न्यायाधिकरण का अधिकार क्षेत्र पूरे राज्य में है। जबकि, दिल्ली में दोनों दिल्ली या आंशिक रूप से दिल्ली की सीमा के भीतर के मामलों को सम्मिलित करते हैं। सितंबर 2020 में, सर्वोच्च न्यायालय द्वारा नामित न्यायमित्र ने अपनी दो रिपोर्टों में बताया कि सांसदों के खिलाफ मामलों का न्याय करने के लिए विषेष न्यायाधिकरणों का गठन करने के लिए न्यायाधिकरण के सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद, संसद के 2,556 वर्तमान सदस्यों (सांसद) और विधानसभाओं के सदस्यों (विधायक) से जुड़े लगभग 4,442 आपराधिक मामले लंबित हैं।

कानून निर्माताओं के खिलाफ मामलों में तेजी लाना न केवल देश की राजनीति में हो रहे अपराधिकरण की बढ़ती लहर के कारण आवश्यक प्रतीत होता है। बल्कि, निर्वाचित प्रतिनिधियों को प्रभावी अभियोजन को प्रभावित करने या बाधित करने की शक्ति के कारण भी आवश्यक माना जाना चाहिए। मद्रास उच्च न्यायालय ने विभिन्न अपराधों के लिए विषेष रूप से प्रतिनियुक्तियों और सांसदों को न्याय देने के लिए विशेष न्यायाधिकरणों की स्थापना की संवैधानिक वैधता पर सवाल उठाया है। विशेष न्यायाधिकरणों का गठन केवल एक कानून द्वारा किया जा सकता है न कि कार्यकारी या न्यायिक शक्ति द्वारा किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, एक सांसद/विधायक जो कानून पॉक्सो के तहत अपराध करता है, उसे कानून पॉक्सो के तहत बनाए गए एक विशेष न्यायाधिकरण द्वारा आंका जा सकता है। विशेष रूप से एक सांसद/विधायक के फैसले के लिए कोई अन्य विशेष न्यायाधिकरण नहीं हो सकता है जो एक अपराध पॉक्सो को जन्म देता है। इसके अलावा, उन्होंने सवाल किया कि एकल विशेष न्यायाधिकरण किसी राज्य के सभी जिलों के मामलों को कैसे कवर कर सकता है। गवाहों को यात्रा संबंधी समस्याओं और अन्य असुविधाओं का सामना करना पड़ सकता है। यह भी उल्लेख किया गया कि जब उस राज्य में सरकार बदलती है तो किसी राज्य में मामलों को कैसे प्रस्तुत किया जाता है और वहीं के मामले वापस भी लिए जाते हैं।

फरवरी 2020 में, सर्वोच्च न्यायालय ने राजनीतिक दलों को विधानसभा और लोकसभा चुनावों के लिए अपने उम्मीदवारों के पूर्ण आपराधिक इतिहास को उन कारणों के साथ प्रकाशित करने का आदेश दिया, जिनके कारण वे सभ्य व्यक्तियों के स्थान पर संदिग्ध अपराधियों को चुनने के लिए प्रेरित हुए।

चुनाव आयोग ने आपराधिक मामलों में दोषी ठहराए गए राजनेताओं पर आजीवन प्रतिबंध लगाने के अनुरोध का समर्थन किया था। कम से कम पांच साल की जेल की सजा वाले अपराध के आरोपी उम्मीदवारों को अदालत में आरोपित किए जाने के बाद चुनाव में पेश होने से रोकने के चुनाव आयोग के प्रस्ताव को कई दलों ने खारिज कर दिया है। विपक्ष दो तर्कों पर आधारित है। सत्ता में बैठे राजनेता विपक्ष के खिलाफ इसका दुरुपयोग करेंगे और देश का कानून यह मानता है कि जब तक उनके अपराध का प्रदर्शन अभियोजन द्वारा पूर्ण रूप से नहीं किया जाता, तब तक सभी निर्दोष है।

चूंकि राजनीति नौकरशाही पर हावी है और व्यवसाय, नागरिक समाज और मीडिया को नियंत्रित करती है, इसलिए देश को आपराधिक वायरस से मुक्त सरकार की आवश्यकता है। जनता के दबाव के साथ अभिप्रेरण सुनिश्चित करने से मदद मिल सकती है। यदि किसी राजनीतिक नेता को बड़ी संख्या में उम्मीदवारों को कानून बनाने के लिए न्याय के कटघरे में लाया जाता है, तो कुछ सकारात्मक हो सकता है। इसके अलावा, चुनाव आयोग को मजबूत करना आवश्यक है। क्योंकि, यह एक राजनीतिक दल को पंजीकृत कर सकता है, लेकिन इसकी उपेक्षा नहीं कर सकता है। एक स्वच्छ चुनावी प्रक्रिया के लिए एक राजनीतिक दल के मामलों को विनियमित करना आवश्यक है।

सामयिक

विनोद कुमार विक्की

संघर्ष विराम का निर्णय समय सम्मत

युद्ध से कभी भी शांति की कल्पना नहीं की जा सकती। युद्ध जान-माल एवं मानवता के लिए हमेशा ही नुकसान दायक रहा है। पाक की कायराना आतंकी कार्रवाई के विरुद्ध 7 मई को भारत द्वारा जारी ऑपरेशन सिंदूर साहसिक और राष्ट्र सम्मान के हित में यथोचित कृत्य था। भारत की उक्त कार्रवाई के विरुद्ध बौखलाहट अथवा बहकावे में पाकिस्तान द्वारा 8 मई की रात से लगातार भारत के रिहायशी और सैन्य इलाकों पर ड्रोन से हमला किया गया और सीमावर्ती क्षेत्रों में गोलीबारी जारी रखा। यह और बात है कि हमारी समृद्ध एयर फ़ोर्स ने एस 400 एयर डिफेंस सिस्टम से तमाम हमलों को नाकाम कर दिया, तथापि भारतीय जान-माल के क्षय को नकारा नहीं जा सकता।

क़र्ज़ में कंठ तक डूब चुके विवेक शून्य पाकिस्तान के लिए युद्ध एक अवसर हो सकता है आईएमएफ से कर्ज लेने का, किंतु विवेक शील भारत अपने एक-सौ चालीस करोड़ जनता को युद्ध में झोंकने का पक्षधर नहीं हो सकता। 7-10 मई तक चलने वाले इस द्विपक्षीय कार्रवाई में भारत का टारगेट पाक की आम अवाम की बजाय हमेशा आतंकी संगठन संस्थान अथवा आतंक प्रोत्साहित सैन्य संस्थान रहा, जबकि पाक ने भारतीय जनता और सैन्य संस्थानों को टारगेट कर के हमला किया।

समसामयिक परिदृश्य में वैश्विक स्तर पर घटित होने वाले युद्धों, गृहयुद्ध सहित लगभग पाँच लाख सैन्य क्षति वाले ताजातरीन रुस-यूक्रेन के संघर्ष से बहुत कुछ सीखने और समझने की आवश्यकता है। मानवीय जीवन की क्षति, भूखमरी, गरीबी और लाचारी ऐसे युद्धों की जीवंत तस्वीरें हैं।

विवेक शून्य, संवेदनहीन परमाणु संपन्न राष्ट्र पाक के खिलाफ भारत सरकार द्वारा परिस्थितिजन्य ऑपरेशन सिंदूर रणनीतिक और साहसिक निर्णय था, तो युद्ध जन्य भविष्य की त्रासदी को टालने के लिए सशर्त संघर्ष विराम बुद्धिजीविता की परिचायक भी है।

आतंकी हमलों के दौरान एयरकंडीशंड कमरों में मोबाइल के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर पानी पी-पीकर भारत सरकार को कोसने और जवाबी कार्रवाई करने की दुहाई देने वाले तथाकथित बुद्धिजीवी उपभोक्ता, समाजसेवी एवं साहित्य सेवियों के द्वारा जब 7-9 मई को भारत-पाक के बीच युद्ध की परिस्थितियां बनती दिखाई दी, तो इन्हें दोनों पड़ोसी देशों के जन-धन की हानि और यूरोपीय हथियार विक्रेताओं के लाभ को लेकर चिंता होने लगी।

10 मई की संध्या से युद्ध विराम की घोषणा पर तथाकथित बुद्धिजीवी एक बार पुनः पीओके, आतंकवाद का पूर्ण खात्मा तथा ब्लूचिस्तान के निर्माण आदि बिंदुओं पर विधवा विलाप करते हुए दिख रहे हैं और सरकार के निर्णय को दोषपूर्ण ठहराते हुए सरकार पर ऊंगली उठा रहे है। ऐसे सोच वाले तथाकथित बुद्धिजीवियों की सोच से भी युद्ध की परिस्थितियां उत्पन्न होती है, जो कभी बाह्य, तो कभी गृह युद्ध के रूप में देखा और सुना जाता रहा है।

ऐसे बुद्धिजीवियों को युद्ध और युद्ध विराम विषय पर ऊंगली उठाने या राय देने से पूर्व इस तथ्य पर आत्ममंथन करना चाहिए कि आतंकवाद के मुद्दे पर पाकिस्तान से हमारा पूर्व में भी युद्ध हो चुका है। बांग्लादेश का निर्माण भी हुआ। सर्जिकल स्ट्राइक भी हुआ, तो क्या इन युद्धों के बाद परिस्थितियां बदल गई? शक्ति से शांति की स्थापना हुई? क्या सीमा पर संघर्ष विराम का उल्लंघन नहीं हुआ? इजरायल से अस्सी फीसदी बर्बाद होने के बाद भी हमास द्वारा आतंकी गतिविधियां बंद कर दी गई? क्या वैश्विक स्तर पर आतंकवाद समाप्त हो गया? बिल्कुल नहीं।

सच तो यह है कि आतंकवाद के नाम पर वैश्विक स्तर पर चल रही लड़ाई किसी राष्ट्र या संगठन से नहीं बल्कि एक कट्टरपंथी सोच से है। धर्म की आड़ में विकसित की गई एक ऐसी सोच जो वर्तमान मानवीय जीवन को जीने की बजाय गैर मज़हबी जनसंहार में, मरने-मारने में और मौत के बाद के तथाकथित अय्याश और सुखमय जीवन की कल्पना पर केंद्रित है। क्या इस सोच का खात्मा एक युद्ध से किया जा सकता है? यह विचारणीय विषय है।

बहरहाल विश्व पटल पर संयमित अटल एवं अदम्य शौर्य प्रदर्शन के पश्चात विश्वबंधुता की अस्मिता, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था एवं जनजीवन की सुरक्षा के दृष्टिकोण से विरोधी मुल्क के साथ भारत सरकार द्वारा संघर्ष विराम का निर्णय समय सम्मत एवं न्यायोचित प्रतीत होता है।

बुद्ध जयंती विशेष

संदीप सृजन

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

विश्व में शांति के प्रतीक गौतम बुद्ध

अर्थात्, 'नफरत से नफरत कभी शांत नहीं होती; नफरत को केवल प्रेम और करुणा से शांत किया जा सकता है। यह शाश्वत नियम है।' यह श्लोक बुद्ध के युद्ध के प्रति दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है। युद्ध, जो घृणा, क्रोध और लोभ से प्रेरित होता है, कभी भी शांति और सौहार्द्र का कारण नहीं बन सकता। बुद्ध ने यह भी सिखाया कि प्रत्येक प्राणी के भीतर बुद्धत्व की संभावना है, और इसलिए प्रत्येक जीवन मूल्यवान है। युद्ध में होने वाली हत्याएं और विनाश इस मूल्य को नष्ट करते हैं और मानवता को उसके उच्चतम लक्ष्य निरंतर शांति और जागृति से दूर ले जाते हैं।

गौतम बुद्ध, जिन्हें विश्व में शांति, करुणा और अहिंसा के प्रतीक के रूप में जाना जाता है, उनने अपने जीवन और शिक्षाओं के माध्यम से मानवता को एक ऐसा मार्ग दिखाया जो हिंसा और युद्ध से परे है। बुद्ध का दर्शन न केवल व्यक्तिगत शांति और आत्म-जागृति पर केंद्रित है, बल्कि सामाजिक और सामूहिक स्तर पर भी शांति स्थापित करने की दिशा में प्रेरित करता हैं। युद्ध, जो मानव इतिहास में विनाश, दुख और विभाजन का कारण रहा है, बुद्ध के दर्शन में कहीं भी स्वीकार्य नहीं है। बुद्ध ने अपने उपदेशों में चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग को प्रतिपादित किया, जो उनके दर्शन का आधार बने। इन सिद्धांतों में हिंसा और युद्ध का कोई स्थान नहीं था। बुद्ध का मानना था कि सभी प्राणी सुख की खोज में हैं और दुख से मुक्ति चाहते हैं। युद्ध, जो हिंसा और विनाश का प्रतीक है, इस खोज को न केवल बाधित करता है, बल्कि दुख को और बढ़ाता है।

बुद्ध के दर्शन का मूल आधार अहिंसा है। अहिंसा का अर्थ केवल शारीरिक हिंसा से बचना ही नहीं है, बल्कि मन, वचन और कर्म से किसी भी प्राणी को हानि न पहुंचाना है। बुद्ध ने अपने उपदेशों में बार-बार इस बात पर जोर दिया कि हिंसा से केवल और हिंसा जन्म लेती है। एक प्रसिद्ध धम्मपद श्लोक में बुद्ध कहते हैं-

'न हि वेरेन वेरानि, सम्मन्तीध कुदाचनं।
अवेरेन च सम्मन्ति, एस धम्मो सनन्तनो।'

अर्थात्, 'नफरत से नफरत कभी शांत नहीं होती; नफरत को केवल प्रेम और करुणा से शांत किया जा सकता है। यह शाश्वत नियम है।' यह श्लोक बुद्ध के युद्ध के प्रति दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है। युद्ध, जो घृणा, क्रोध और लोभ से प्रेरित होता है, कभी भी शांति और सौहार्द्र का कारण नहीं बन सकता। बुद्ध ने यह भी सिखाया कि प्रत्येक प्राणी के भीतर बुद्धत्व की संभावना है, और इसलिए प्रत्येक जीवन मूल्यवान है। युद्ध में होने वाली हत्याएं और विनाश इस मूल्य को नष्ट करते हैं और मानवता को उसके उच्चतम लक्ष्य निरंतर शांति और जागृति से दूर ले जाते हैं।

बुद्ध ने युद्ध के कारणों को मानव मन की तृष्णा (लोभ), क्रोध और अज्ञानता में देखा। उनके अनुसार, ये तीन 'विष' (लोभ, द्वेष, मोह) मानव दुख के मूल कारण हैं। युद्ध अक्सर क्षेत्रीय विस्तार, धन, शक्ति या वैचारिक मतभेदों के कारण होते हैं, जो सभी तृष्णा और अज्ञानता से उत्पन्न होते हैं। बुद्ध ने अपने उपदेशों में इन मूल कारणों को समझने और उन्हें समाप्त करने पर जोर दिया।

बुद्ध के समय में कई छोटे-छोटे राज्यों के बीच युद्ध और संघर्ष आम थे। बुद्ध ने इन युद्धों को रोकने के लिए कई बार मध्यस्थता की। एक प्रसिद्ध घटना में, शाक्य और कोलिय जनजातियों के बीच रोहिणी नदी के जल विभाजन को लेकर विवाद हो गया था, जो युद्ध का रूप लेने वाला था। बुद्ध ने दोनों पक्षों को समझाया कि जल के लिए युद्ध करने से होने वाली हानि जो मानव जीवन और रिश्तों के नुकसान के रूप में होगी उस जल के मूल्य से कहीं अधिक होगी। उनकी मध्यस्थता से दोनों पक्षों ने शांति स्थापित की। यह घटना दर्शाती है कि बुद्ध युद्ध को केवल हिंसा के रूप में नहीं देखते थे, बल्कि इसे मानवता के लिए एक अनावश्यक दुख के रूप में समझते थे। उनका दृष्टिकोण यह था कि युद्ध के बजाय संवाद, समझ और करुणा के माध्यम से समस्याओं का समाधान संभव है।

बुद्ध का दर्शन केवल व्यक्तिगत शांति तक सीमित नहीं था; वे सामाजिक और सामूहिक शांति के भी पक्षधर थे। उन्होंने राजाओं और शासकों को भी उपदेश दिए कि शासन का आधार धर्म (नैतिकता), करुणा और न्याय होना चाहिए। बुद्ध ने चक्रवर्ती राजा (आदर्श शासक) की अवधारणा को प्रस्तुत किया, जो बिना हिंसा और युद्ध के, धर्म के आधार पर शासन करता है। बुद्ध ने यह भी सिखाया कि शांति तभी संभव है जब समाज में समानता, न्याय और करुणा हो। युद्ध अक्सर सामाजिक असमानता, अन्याय और शक्ति के दुरुपयोग से उत्पन्न होते हैं। बुद्ध ने अपने अनुयायियों को सिखाया कि वे अपने कर्मों से समाज में शांति और सौहार्द्र को बढ़ावा दें।

बौद्ध धर्म में युद्ध की नैतिकता का कोई स्थान नहीं है। कुछ अन्य धर्मों या दर्शनों में 'न्यायपूर्ण युद्ध' की अवधारणा हो सकती है, लेकिन बुद्ध के लिए कोई भी युद्ध न्यायपूर्ण नहीं हो सकता, क्योंकि युद्ध का परिणाम हमेशा दुख और विनाश होता है। बुद्ध ने यह सिखाया कि हिंसा का जवाब हिंसा से देना केवल दुख को बढ़ाता है। इसके बजाय, उन्होंने करुणा, क्षमा और समझ के मार्ग को अपनाने की सलाह दी। बुद्ध के समय में, कई योद्धा और सैनिक उनके पास आकर यह प्रश्न करते थे कि युद्ध में भाग लेना उनके कर्तव्य का हिस्सा है, तो क्या यह गलत है? बुद्ध ने उन्हें समझाया कि हिंसा में भाग लेना, भले ही वह कर्तव्य के नाम पर हो, कर्म के नियमों से मुक्त नहीं है। हिंसा करने वाला व्यक्ति न केवल दूसरों को दुख देता है, बल्कि अपने लिए भी दुख का कारण बनता है। बुद्ध ने सैनिकों को सलाह दी कि वे अपने मन को शुद्ध करें और हिंसा के बजाय शांति के मार्ग को चुनें।

आज के युग में, जब विश्व युद्ध, आतंकवाद और हिंसा की चुनौतियों से जूझ रहा है, बुद्ध की शिक्षाएं और भी प्रासंगिक हो जाती हैं। बुद्ध का अहिंसा और करुणा का संदेश न केवल व्यक्तिगत जीवन में शांति ला सकता है, बल्कि सामाजिक और वैश्विक स्तर पर भी शांति स्थापित करने में सहायक हो सकता है। आधुनिक विश्व में, कई संगठन और नेता बुद्ध के सिद्धांतों से प्रेरित होकर शांति के लिए कार्य कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, दलाई लामा, जो बौद्ध धर्म के एक प्रमुख नेता हैं, ने बार-बार विश्व शांति के लिए अहिंसा और करुणा के महत्व पर जोर दिया है। बुद्ध की शिक्षाएं हमें यह सिखाती हैं कि युद्ध और हिंसा से कोई स्थायी समाधान नहीं निकल सकता। इसके बजाय, संवाद, सहानुभूति और आपसी समझ के माध्यम से ही शांति संभव है।

गौतम बुद्ध ने युद्ध का समर्थन इसलिए नहीं किया क्योंकि उनके दर्शन का मूल आधार अहिंसा, करुणा और सभी प्राणियों के प्रति समानता का भाव था। युद्ध, जो मानव मन की तृष्णा, क्रोध और अज्ञानता से उत्पन्न होता है, बुद्ध के लिए केवल दुख और विनाश का कारण था। उन्होंने अपने जीवन और शिक्षाओं के माध्यम से यह दिखाया कि शांति का मार्ग हिंसा से नहीं, बल्कि प्रेम, करुणा और समझ से होकर गुजरता है। बुद्ध की शिक्षाएं आज भी हमें प्रेरित करती हैं कि हम अपने जीवन में और समाज में शांति को बढ़ावा दें। युद्ध और हिंसा के इस युग में, बुद्ध का संदेश एक प्रकाशस्तंभ की तरह है, जो हमें यह सिखाता है कि सच्ची शांति तभी संभव है जब हम अपने मन को शुद्ध करें और सभी प्राणियों के प्रति करुणा का भाव रखें। बुद्ध का यह दर्शन न केवल उनके समय में, बल्कि आज और भविष्य में भी मानवता के लिए एक अमूल्य मार्गदर्शन है।

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत माचना नदी पर चलाया स्वच्छता अभियान

पर्यावरण मंच भारतीय मजदूर संघ ने श्रमदान कर की माचना नदी की सफाई

बैतूल। जल गंगा जल संवर्धन अभियान को जिला पर्यावरण मंच भारतीय मजदूर संघ के द्वारा रविवार को माचना नदी के तट पर विशाल स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया। जिसमें भारतीय मजदूर संघ के राष्ट्रीय पदाधिकारी मधुकर साबले और विभाग प्रमुख विनय डोंगरे सहित बिजली कर्मचारी संघ, नगर पालिका कर्मचारी संघ, मां शारदा सहायता समूह, शिक्षक संघ, संविदा चिकित्सा संघ सहित पर्यावरण मंच के सदस्यों, पर्यावरण प्रेमियों ने इसमें हिस्सा लिया। इस दौरान नदी के तट पर बड़ी संख्या में समाजसेवियों ने पहुंचकर नदी के आसपास साफ-सफाई की और जगह-जगह उगी गाजर घास, चाइनीज झालर और झाड़ियां की सफाई की, ताकि शहर की शहर की जीवनदायिनी माचना नदी के आसपास का वातावरण साफ और स्वच्छ बना रहे। इस अवसर सभी लोगों ने स्वच्छता अभियान को सतत रूप से जारी रखने का संकल्प भी लिया। कार्यक्रम के दौरान विभाग प्रमुख विनय डोंगरे ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मंशा अनुसार पूरे देश में जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। जल है तो कल है आज हमें इसकी महत्व समझाने की जरूरत है। आने वाला कल पर्यावरण के लिए पूर्ण रूप से सुरक्षित हो सके इसके लिए साफ सफाई और नदियों के आसपास का वातावरण स्वच्छ होना आवश्यक है। आम लोगों से भी अपेक्षा की जाती है कि पानी और पर्यावरण को लेकर गंभीर होना हर एक नागरिक का कर्तव्य है। जल संरक्षण भावी पीढ़ी के लिए बहुत जरूरी है। जल और पर्यावरण का संरक्षण नहीं किया गया तो भावी पीढ़ी को परेशान होना पड़ेगा। माचना नदी से जलकुंभी हटाए जाने को लेकर एक्सपर्ट से चर्चा करने की बात कही। जिससे की स्थाई रूप से समस्या का निराकरण किया जा सके। साथ ही वार्ड पार्षद और रहवासी, सामाजिक संगठन की सहायता से जलकुंभी हटाने के प्रयास किए जाएंगे। मौके पर उपस्थित नगर पालिका, समाजिक समिति आदि का सहयोग रहा।

ताप्ती लोक परियोजना में तेजी के लिए शिवराज लिखेंगे पत्र

● चौहान ने सूर्य यज्ञ में शामिल होने का दिया आश्वासन ● ताप्ती उद्गम आयोजन समिति ने की पूर्व मुख्यमंत्री से भेंट

बैतूल/मुलताई। ताप्ती मेला ग्राउंड मुलताई पर होने जा रहे महासूर्ययज्ञ की आयोजन समिति ताप्ती उद्गम आयोजन समिति के प्रतिनिधि मंडल ने राजधानी भोपाल पहुंचकर पूर्व मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान से भेंट कर उन्हें पवित्र नगरी मुलताई में आयोजित होने वाले महासूर्ययज्ञ में शामिल होने का निमंत्रण दिया। यज्ञ आयोजन समिति के दिनेश कालभोर, उपेंद्र पाठक ने जानकारी देते बताया कि केंद्रीय मंत्री एवं पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सूर्य यज्ञ में आने का आश्वासन दिया है, साथ ही उन्होंने ताप्ती लोक परियोजना के कामों को तेज करने के लिए राज्य सरकार को पत्र लिखने का वादा किया है। समिति सदस्यों ने बताया कि शिवराज सिंह चौहान से भेट के दौरान समिति ने ताप्ती उद्गम स्थल की अपेक्षा, संरक्षण की कमी और विकास परियोजनाओं से मुलताई को वंचित रखे जाने को लेकर चिंता व्यक्त की। समिति के प्रतिनिधि दिनेश कालभोर ने बताया कि शिवराज सिंह ने ताप्ती से संबंधित फाइल को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव तक पहुँचाने और ताप्तीलोक परियोजना पर चर्चा कराने का आश्वासन दिया है।

पवित्र नगरी का दर्जा तो मिला पर हालात जस के तस-

समिति सदस्यों ने बताया कि भेंट के दौरान सदस्यों ने बताया कि शिवराज सिंह के पहले कार्यकाल में मुलताई को 'पवित्र नगरी' का दर्जा तो मिला, लेकिन विकास अब तक कागजों में ही सिमटा हुआ है। न ताप्ती नदी के उद्गम स्थल का कायाकल्प हुआ, न धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कोई स्थायी योजना बनी।सरकार द्वारा स्वीकृत 'ताप्ती मेघा रिचार्ज परियोजना' में मुलताई और बैतूल को शामिल नहीं किया गया है, जो कि ताप्ती नदी का उद्गम क्षेत्र है। यह स्थिति क्षेत्रवासियों में असंतोष और निराशा पैदा कर रही है। हाल ही में मां ताप्ती को राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज किया गया, जिससे शिवराज सिंह ने प्रसन्नता जताई, लेकिन संरचनात्मक विकास और स्थायी योजनाएं अब भी प्रतीक्षारत हैं। उन्होंने ताप्ती लोक परियोजना के कामों को तेज करने के लिए राज्य सरकार को पत्र लिखने का वादा किया है।

रिजल्ट सुधारने 15 मई तक जमा कर सकते हैं फार्म

जिले में फेल 7719 विद्यार्थी देंगे, 10वीं एवं 12वीं बोर्ड की दूसरी बार परीक्षा

संजय द्विवेदी, बैतूल। माध्यमिक शिक्षा मंडल की 10वीं और 12वीं कक्षा में जिले का रिजल्ट इस बार पिछले कुछ सालों की तुलना में बेहतर आया है। इसके साथ ही माध्यमिक शिक्षा मंडल ने इस साल एक या दो विषय में विद्यार्थियों को मिलने वाली पूरक यानी सप्लीमेंट्री के प्रावधान को खत्म कर दिया है। उसकी जगह द्वितीय परीक्षा ली जा रही है, यह बदलाव राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत किया गया है। जिसके तहत विद्यार्थी एक से लेकर सभी विषयों तक की द्वितीय परीक्षा दे सकेंगे। इस निर्णय से कमजोर और परीक्षा में किसी कारणवश अनुपस्थित रहने और कम अंक लाने वाले विद्यार्थियों को बड़ी राहत मिली है। वे अब दोबारा परीक्षा दे सकेंगे। जिले में इस साल 10वी और 12वी के कुल 7719 विद्यार्थी फेल हुए हैं जिसमे 10वी के 3999 और 12वी के 3720 विद्यार्थी शामिल है। साथ ही सभी अंक सुधारने के लिए पास विद्यार्थी भी फिर से ऑनलाइन फार्म जमा कर द्वितीय परीक्षा दे सकेंगे। शिक्षा विभाग के जिला परीक्षा प्रभारी सुबोध शर्मा ने बताया कि द्वितीय परीक्षा के ऑनलाइन फार्म जमा करने की तारीख भी घोषित कर दी है। फेल और रिजल्ट सुधारने वाली द्वितीय परीक्षा हेतु 7 से 15 मई तक ऑनलाइन फार्म जमा कर सकेंगे। साथ ही द्वितीय परीक्षा का टाइम टेबल भी घोषित कर दिया हैं।

17 जून से शुरू होंगी परीक्षाएं

इसमें 10वीं और 12वीं की द्वितीय परीक्षा 17 जून को सुबह 9 से दोपहर 12 बजे के बीच होगी। 10वीं की परीक्षा 26 जून और 12वीं की परीक्षा 5 जुलाई तक चलेगी। इस दौरान कॉपियों की चेकिंग कर 20 जुलाई से लेकर जुलाई के अंत तक रिजल्ट घोषित कर दिया जाएगा, ताकि पास होने वाले विद्यार्थियों को अगली कक्षाओं में आसानी से प्रवेश मिल सकेगा।

● कॉलेज में मिलेगा अस्थायी प्रवेश ......

12वीं की बोर्ड परीक्षा में फेल होने वाले विद्यार्थियों को कॉलेज में अस्थाई प्रवेश का

अवसर मिलेगा। बता दे कि कॉलेज में प्रवेश के लिए प्रक्रिया मई के अंतिम सप्ताह में शुरू हो जाती है, जो प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरण तक जुलाई के अंत तक चलती है। इस बार फेल विद्यार्थियों को भी कॉलेज में प्रवेश मिल सकेंगे, इसके लिए प्रक्रिया को और अधिक समय तक बढ़ाया जा सकता है, ताकि पास होने वाले सभी विद्यार्थी कॉलेज में प्रवेश ले सकें।

10वीं और 12वीं में 7719 फेल विद्यार्थी देंगे परीक्षा...

इस बार दसवीं और बारहवीं में कुल 28,799 विद्यार्थी शामिल हुए थे। जिले में दसवीं में 16567 ने परीक्षा दी। जिसमें से 16563 के रिजल्ट घोषित किए, जिनमें 13164 उत्तीर्ण हुए। इनमें 8163 प्रथम, 4915 द्वितीय और 86 ने तृतीय स्थान लेकर परीक्षा उत्तीर्ण की। जबकि 3399 बच्चे फेल हो गए। वहीं 12वीं में 12232 मे से 12216 का रिजल्ट घोषित किया। इसमें 8496 बच्चे उत्तीर्ण हुए। इनमें 5148 प्रथम, 3328 द्वितीय तथा 20 बच्चे तीसरे स्थान पर रहे। वहीं 3720 विद्यार्थी फेल हुए।

इनका कहना है

जो विद्यार्थी फेल हुए और जिनके कम अंक आए हैं या जो दोबारा परीक्षा देना चाहते हैं वह 15 मई तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। ऐसे विद्यार्थियों की अंकसूची द्वितीय परीक्षा परिणाम के बाद ही मिलेगी। 12वी के विद्यार्थी कॉलेज में अस्थाई प्रवेश ले सकते हैं।

- सुबोध शर्मा, जिला परीक्षा प्रभारी, जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय, बैतूल

मान्यता के नियमों को ताक पर रख संचालित हो रहा एम्बीशन एकेडमी स्कूल

आखिर किसकी मेहरबानी से जारी है मान्यता ?

बैतूल। जिले के मुलताई विकासखंड के ग्राम मोही में स्थित एम्बीशन एकेडमी स्कूल प्रशासनिक नियमों और सुरक्षा मानकों की अनदेखी के साथ संचालित हो रहा है। यह स्कूल मोही-जौलखेड़ा मेन रोड के किनारे एक आवासीय भवन में संचालित किया जा रहा है, जो न केवल मान्यता नियमों के विपरीत है, बल्कि बच्चों की सुरक्षा को भी खतरे में डालता है।

बाउंड्रीवाल नहीं, खेल का मैदान नहीं.......

विश्वसनीय सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार इस स्कूल में लगभग 200 छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं, लेकिन यहां न तो कोई बाउंड्री वॉल है, न ही खेल का मैदान। इससे यह सवाल उठता है कि आखिर कैसे इस स्कूल को मान्यता प्राप्त है और वह भी वर्षों से..?

एक ही भवन में आवास, किराना दुकान और स्कूल !

सबसे गंभीर पहलू यह है कि जिस बिल्डिंग में स्कूल संचालित हो रहा है, वह स्कूल संचालक सुखदेव चढ़ोकार का निवास स्थान भी है और उसी परिसर में एक किराना दुकान भी चल रही है। ऐसे माहौल में शिक्षा का संचालन बच्चों के शैक्षणिक वातावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

हादसे को न्यौता...

बिना बाउंड्रीवाल के स्कूल का इस प्रकार सड़क किनारे संचालन, जहां रोजाना तेज रफ्तार वाहनों की आवाजाही होती है, बच्चों के लिए घातक साबित हो सकता है। अभिभावकों की चिंता और स्थानीय लोगों की शिकायतों के बावजूद कोई ठोस कार्यवाही अब तक सामने नहीं आई है। आखिर सवाल यह उठता है कि आखिर जिम्मेदारों के सामने सामने यह सब कैसे हो रहा है? क्या उनको इसकी जानकारी नहीं ?

क्या कहते हैं जिम्मेदार...

अगर स्कूल मान्यता नियमों के विरुद्ध संचालित हो रहा है तो यह गंभीर मामला है। मैं तत्काल स्कूल संचालक से बात कर इस मामले को दिखवाता हूं।

सक्षम बारमाटे, बीईओ, मुलताई ।

देवी अहिल्या बाई पर नवप्रकाशित पुस्तक का विमोचन 16 मई को

अटल सभागृह में बैठक आयोजित कर बनाई पुस्तक विमोचन समारोह की रूपरेखा

बैतूल। जयवंती महाविद्यालय के अटल सभागृह में रविवार सुबह अखिल भारतीय साहित्य परिषद् और पुण्यश्लोक देवी अहिल्या त्रिशताब्दी समारोह समिति की संयुक्त बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में लगभग आधा सैकड़ा कार्यकर्ता शामिल हुए। इस बैठक में देवी अहिल्या पर प्रवीण दाताराम गुगनानी की नवप्रकाशित पुस्तक जय जय जयतु अहिल्या बाई के विमोचन कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई।

देवी अहिल्या की गौरवमयी जीवन यात्रा पर केंद्रित इस पुस्तक विमोचन कार्यक्रम के संबंध में विभिन्न जानकारियां श्रीमती वंदना कुंभारे, सचिव देवी अहिल्या समिति, विजय हारोड़े, कोषाध्यक्ष अहिल्या समिति और विनय डोंगरे, सचिव देवी अहिल्या समिति द्वारा दी गईं। बैठक में यह निर्णय लिया गया कि यह भव्य समारोह 16 मई को जयवंती महाविद्यालय के अटल सभागृह में आयोजित किया जाएगा।

इस महत्वपूर्ण अवसर की अध्यक्षता संत उत्तमस्वामी करेंगे, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत संघचालक अशोक पांडे उपस्थित रहेंगे। विशिष्ट अतिथि के रूप में साहित्य परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्रीधर पराड़कर, केंद्रीय मंत्री दुर्गादास उईके और पूर्व राज्यमंत्री तपन भौमिक भी मंच की शोभा बढ़ाएंगे।

बैठक में प्रमुख रूप से वंदना कुंभारे, उषा द्विवेदी, प्रमिला, नीतू चढ़ोकार, साक्षी शर्मा, तूलिका पचौरी, अल्का पांडे, प्रमिला सिमैया, अनुसुइया अमरूते, सुशीला बोड़खे, सिद्धलता महाले, विनय डोंगरे, प्रवीण दाताराम गुगनानी, केतन चतुर्वेदी, अभिषेक सेन, घनश्याम मदान, विजय हारोड़े, मधुकर साबले, दीपक कपूर, पप्पी शुक्ला, बालाराम साहू, रामनारायण शुक्ला, विजय कुबड़े, दीपक पाल, राजेश मंसूरिया, गणेश दरवाई, बलराम जसूजा, दिनेश सोनी, ऋषभ जैन, पंजाबराव गायकवाड़ और हिमांशु शर्मा उपस्थित रहे।

समाजसेवियों की पहल पर मिलेगा निःशुल्क प्राकृतिक भोजन

हर रविवार को जनसहयोग से होगा प्राकृतिक भोज का आयोजन

बैतूल। पुरातन युग में जो बिना तेल, मसाले और बिना शक्कर का भोजन लोग करते थे, वही भोजन अब शहरवासी भी करेंगे। इसके लिए शहर में समाजसेवी बलराम जसूजा एवं उनकी टीम के अनिल राठौर, दीपक पाल समेत अन्य समाजसेवियों ने जनसहयोग से बैतूल वासियों को प्राकृतिक भोजन करवाना शुरू किया है। इसके तहत प्राकृतिक भोजन से अब तक 90 लोग जुड़ चुके हैं। स्टेट बैंक से सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक श्री जसूजा ने बताया कि 30 साल के बैंक सेवा के कार्यकाल के दौरान 1992 में उन्हें जब पीठ में बड़ा दर्द हुआ था। तब इंदौर के प्राकृतिक चिकित्सक डॉ सोहनलाल संघवी से जुड़कर उन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा का उपचार लिया। इससे उनका पीठ दर्द पूरी तरह ठीक हो गया। इसीलिए बैतूल में भी लोगों को लाभ दिया जाए इसके लिए हर रविवार को प्राकृतिक भोजन करवाना शुरू किया है। हर रविवार अब जनसहयोग से यह प्राकृतिक भोजन करवाया जाएगा। इस रविवार को भी बड़ी संख्या में लोगों ने तरबूज, खरबूज, ककड़ी, पपीता, केला, दलिया जैसा बिना तेल और नमक शक्कर का भोजन किया। बिना शक्कर की नारियल की खीर भी खाई । नारियल की चटनी के साथ मिक्स सलाद भी लोगों को परोसा गया। इस दौरान प्राकृतिक भोजन आयोजकों की टीम से योग शिक्षक रोशनलाल मौखेड़े, समाजसेवी बलराम जसूजा, अग्रसेन स्कूल संचालक अनिल राठौर, वरिष्ठ अधिवक्ता दीपक पाल, समाजसेवी रविकिरण तायवाड़े, गौसेवक गिरीश खंडेलवाल, वरिष्ठ चार्टर्ड अकाउंटेंट सुनील हिरानी, समाजसेवी वीरेंद्र पालीवाल, वीरेंद्र जैसवाल के साथ ही राष्ट्रीय पत्रकार कल्याण परिषद से संभागीय प्रभारी वरिष्ठ पत्रकार राधेश्याम सिंहा और परिषद के महासचिव वरिष्ठ पत्रकार संजय द्विवेदी, वरिष्ठ पत्रकार घनश्याम राठौर समेत अन्य मौजूद थे।

सूर्योदय से सूर्यास्त के बीच किया जाता है भोजन

नित्या सेवा समिति के बलराम जसूजा ने बताया कि सूर्योदय से सूर्यास्त के बीच यह प्राकृतिक चिकित्सा का भोजन किया जाता है। इसमें नींबू और टमाटर जैसी चीजों को मिलाकर सब्जी भी बनाई जाती है। आलू, पालक, मेथी को भी बिना तेल-मसाले, नमक के बनाया जाता है। गोरखपुर का आरोग्य मंदिर जो वर्ष 1936 में बनाया गया था वहीं से हमने प्राकृतिक चिकित्सा का यह सिद्धांत-परंपरा को पिछले माह के पहले रविवार से बैतूल में भी शुरू किया है। यह संस्थान परीक्षा भी लेता है। इस चिकित्सा के द्वारा शरीर के समस्त विषैले तत्वों को दूर किया जाता है। गौरतलब है कि समाजसेवी बलराम जसूजा ने अपने बड़े भाई स्व. जगदीश जसूजा के स्मृति में जगदीश मेडिकेयर सेंटर का शुभारंभ पिछले दिनों किया था। जिसमें जरूरतमंद गरीब लोगों को को हॉस्पिटल बेड, व्हील चेयर, वॉकर, स्टिक आदि सभी प्रकार के इंस्ट्रूमेंट की निशुल्क सेवा दी जाती है।

शहर की सड़कों पर मानवता हारी, बुजुर्ग को टक्कर मारकर भागा युवक

एम्बुलेंस नहीं आई, ठेले पर पहुँचे अस्पताल

मुलताई- सुबह शहर के व्यस्ततम मुख्य मार्ग पर एक दर्दनाक हादसा हुआ, जिसने समाज की संवेदनाओं पर बड़ा सवाल खड़ा कर दिया। तेज रफ्तार में दौड़ती एक बाइक ने बुजुर्ग लक्ष्मी चंद्र साहू को जोरदार टक्कर मारी और सवार मौके से फरार हो गया। हादसे के बाद सबसे शर्मनाक दृश्य तब देखने को मिला, जब सड़क पर गिरे हुए गंभीर रूप से घायल लक्ष्मी चंद्र साहू के लिए न तो कोई वाहन रुका, न ही कोई मदद को आगे आया। एम्बुलेंस को कई बार कॉल किया गया, लेकिन ना तो वह समय पर पहुँची और ना ही व्यवस्था ने कोई सुध ली। आखिरकार, मजबूरी में परिजनों और कुछ स्थानीय लोगों को उन्हें हाथ ठेले पर डालकर अस्पताल ले जाना पड़ा। यह घटना केवल एक सड़क हादसे की नहीं, बल्कि शहर की आपातकालीन सेवाओं की असफलता और समाज की संवेदनहीनता की गहरी तस्वीर है। सवाल ये उठता है कि अगर शहर के बीचों बीच ऐसी स्थिति है, तो हाईवे या दूरदराज के इलाकों में हादसे के बाद क्या होता होगा? क्या वहाँ पीड़ित की जान और भी ज्यादा जोखिम में नहीं होती?

माता और मातृभूमि स्वर्ग से बढ़कर होती हैं

शहीदों की माताओं और सैनिकों की माताओं का गंगाजल से पैर पखारकर किया सम्मान

● जहां पूरी होती है हर मन्नत, मां के पैरों में होती है जन्नत

बैतूल। मातृ दिवस के अवसर पर बैतूल में मां शारदा सहायता समिति द्वारा एक अभिनव आयोजन किया गया। संस्था के शैलेंद्र बिहारिया ने बताया कि शहीदों की माताओं और पूर्व सैनिकों, सैनिकों की माताओं का गंगाजल से पैर पखारकर, आरती उतारकर, साल, श्रीफल, पुष्पगुच्छ से सम्मान किया गया। इस अवसर पर पंडित श्रीराम तिवारी ने मंत्रोचार के साथ माताओं का पूजन करवाया। इस अवसर पर मां शारदा सहायता समिति के संजय शुक्ला, पिंकी भाटिया, डॉक्टर सागर बिंझाड़े, हनी यादव, प्रीतम सिंह मरकाम, तूलिका पचौरी, निमिषा शुक्ला, कृष्णा

अमरूते शुक्ला, निमिष मालवीय, दीप मालवीय, दीपा मालवीय, राजू मालवीय, पूर्व सैनिक सुदामा सूर्यवंशी, सुनील जैन, जलदीप वर्मा, शिवपाल, शैलेंद्र बिहारिया ने मातृत्व दिवस पर माताओं की आरती उतारकर उनका सम्मान किया। सम्मान पाते ही कई माताओं की आंखों में आंसू आ गए। इस अवसर पर शैलेंद्र बिहारिया ने कहा कि पत्नी पसंद से मिलती है, लेकिन मां तो पुण्य से मिलती है, इसलिए पसंद से मिलने वाली के लिए पुण्य से मिलने वाली को मत ठुकराना। माता और मातृभूमि स्वर्ग से बढ़कर होती हैं, इसलिए इनका सम्मान हमेशा अपनी जान से ज्यादा करना चाहिए। निमिषा शुक्ला और तूलिका पचौरी ने कविता के माध्यम से कहा मां संवेदना है, भावना है, अहसास है। मां जीवन के फूलों में खुशबू का वास है। मां रोते हुए बच्चों का खुशनुमा पलना है, मां मरूथल में मीठा सा झरना है। इस अवसर पर सुदामा सूर्यवंशी, दीप मालवीय और दीपा मालवीय ने मां पर कविता सुनाई, जिससे सभी की आंखें भर आई।

इनका हुआ सम्मान-

शहीद सुनील पवार की माता जैनी बाई, सेवारत हवलदार राजू साहू की माता मालती साहू, सैनिक हरीश राठौड़ की माता आशा देवी राठौड़, सेवानिवृत्त सूबेदार परसराम सिमैया की माता जी बतराबाई सिमैया, स्व. घनश्याम मुशरे की माता सुशीला बाई और सरोज शुक्ला का सम्मान किया गया।

कलयुग की यशोदा मईया का अटल सेना ने किया सम्मान

बैतूल। भगवान कृष्ण को भले ही देवकी ने जन्म दिया था परन्तु पाला यशोदा मैया ने था। कहते हैं कि जन्म देने वाले से पालने वाला बड़ा होता है। डॉ.जाकिर हुसैन वार्ड हनुमान नगर में दसरी बाई घुरमाड़े ने झाड़ी में मिली एक बच्ची की परवरिश की। जो आज कक्षा 9वीं में पढ़ती है। दसरी बाई ने 2014 में भोपाल आनंद नगर परियोजना महिला बाल विकास में आवेदन किया। 2017 में छिंदवाड़ा जिला थाना से उन्होंने नन्ही मुन्नी बच्ची को गोद लिया। सारे नियमों का पालन करते हुए दसरी बाई ने उस बच्ची के पालन पोषण में कमी न रह जाए इसके लिए विवाह तक नहीं किया। दसरी बाई आज 63 वर्ष की है। जिन्होंने उस बच्ची को गोद लेकर पूरे उत्साह और स्नेह के साथ बेटी बनाकर उसे पाला। रविवार को मातृ दिवस के मौके पर अटल सेना के तत्वावधान में दसरी बाई को पुष्प गुच्छा, शाल श्रीफल, मिष्ठान खिलाकर सम्मान किया। इस अवसर पर क्षेत्र के पूर्व पार्षद संजू सोलंकी, समाजसेवी प्रवीण वराठे, शिक्षक भारत सूर्यवंशी एवं आदि मौजूद थे।

गोद ली बच्ची के जाति प्रमाण पत्र बनाने में हो रही दिक्कतें

अटल सेना के प्रांत अध्यक्ष राजेन्द्र सिंह चौहान (केन्दु बाबा) ने बताया कि अब इस बच्ची के जाति प्रमाण पत्र बनाने में दसरी बाई को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे बच्चों को भी ऐसी माताएं अपने खून पसीने से सींचकर गोदनामा कर पालती हैं उन्हें इस तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ा तो ऐसे मासूम बच्चों को कौन अपनाएंगा। केन्दु बाबा ने बताया कि बैतूल अपर कलेक्टर द्वारा भी एक निर्णय में उन्होंने बताया कि जाति प्रमाण पत्र बन सकता है मुंबई के एक निर्णय में भी जाति प्रमाण पत्र बनने का उल्लेख किया है। विधिक सहायता बैतूल ने भी एकल व्यक्ति होने पर जाति प्रमाण पत्र बनने का जिक्र किया है। अटल सेना ने माननीय न्यायालय से कलेक्टर राजस्व मंत्री, मुख्यमंत्री से अनुरोध किया है कि ऐसे बच्चों को गोद लेने वालों की जाति से पहचाना जाए और सरकारी दस्तावेज बनाने में कोई दिक्कत ना हो। तब ही बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसे अभियान सफल हो सकते हैं।

लोकमंगलार्थ एवं धर्मरक्षार्थ अवतरित हुए नरसिंह भगवान

'भगवान नरसिंह प्रकटोत्सव'

चेतनादित्य आलोक

लेखक वरिष्ठ पत्रकार, साहित्यकार, स्तंभकार एवं राजनीतिक विश्लेषक

वैशाख महीने के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि को अपने परम प्रिय भक्त प्रह्लाद समेत सभी प्राणियों की रक्षा एवं विश्व में धर्म की पुनः स्थापना करने हेतु भगवान श्रीहरि विष्णु ने स्वयं ही नरसिंह रूप में अवतार लेकर भारतीय संस्कृति की अजस्रा अमृत-वाणी 'यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः अभ्युथानमधर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम्, प्रित्राणाय साधूनाम् घृणाशाय च दुष्कृताम् धर्म संस्थापनार्थाय सम भवामी युगे-युगे' को चरितार्थ किया था। यह वही अमृत-वाणी है, जिसे परमावतार भगवान श्रीकृष्ण ने अपने प्रिय भक्त अर्जुन को कुरुक्षेत्र के मैदान में महाभारत युद्ध से ठीक पहले तब सुनाया था, जब मतिभ्रम का शिकार होकर युद्धक्षेत्र में खड़े अर्जुन ने अपने क्षत्रिय धर्म और मानवीय कर्तव्य को निभाने से मना कर दिया था। यह वही अमृत-वाणी है, जिसके माध्यम से समय-समय पर हमारे ऋषि-मुनियों, सााधु-संतों और महापुरुषों ने भारत और विश्व को धर्म, नैतिकता, मानवता एवं लोक-लाज का मर्म बताया है। यह वही अमृत-वाणी है, जो समंदर रूपी भगवान श्रीकृष्ण के श्रीमुख से निःसृत हुई और सरिता रूपी विविध जातियों, वर्गों, पंथों और संप्रदायों को हजारों वर्षों से सींचित करती आ रही है। इसी अमृत-वाणी को त्रेता युग के प्रिंय संत बाबा तुलसी ने कमनीय एवं मधुर लोकभाषा 'अवधी' में 'जब-जब होहिं धरम के हानि, बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी...' के रूप में गाकर पुनः प्रतिष्ठापित किया, जो सदियों से थकी-हारी, पीड़ित-प्रताड़ित, हताश और निराश मानवता के लिए अजस्त्र प्रेरणा स्रोत साबित होती रही है।

जय-विजय को शाप

श्रीमद्भागवत पुराण के अनुसार सृष्टि के आरंभ में ब्रह्माजी ने अनेक लोकों की रचना करने की इच्छा से घोर तपस्या की थी। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान श्रीहरि विष्णु ने स्वयं ही सनक, सनन्दन, सनातन एवं सनत्कुमार नामक चार मुनियों अथवा कुमारों के रूप में अवतार लिया था। बता दें कि ये भगवान श्रीविष्णु के सर्वप्रथम अवतार माने जाते हैं। वैकुंठ निवासी भगवान श्रीहरि विष्णु के जय-विजय नामक दो द्वारपाल थे, जो सदैव वैकुंठ के द्वार पर खड़े रहकर श्रीहरि की सेवा करते थे। एक बार सनकादि मुनि भगवान के दर्शन करने हेतु जब वैकुंठ पधारे,तो जय और विजय ने उनकी हंसी उड़ाते हुए उन्हें बेंत अड़ाकर उन्हें भीतर जाने से रोक लिया। इस अपमान से क्रोधित होकर सनकादि मुनियों ने उन्हें तीन जन्मों तक राक्षस योनी में जन्म लेने का शाप दे दिया। बाद में जब जय और विजय को अपनी भूल की अनुभूति हुई तब उन्होंने सनकादि मुनियोंसे क्षमा मांगी। उसके बाद, सरल हृदय, शांत और आत्मस्थसनकादि मुनियों ने जय और विजय से कहा कि तीनों ही जन्मों में तुम्हारा अंत स्वयं भगवान श्रीहरि ही करेंगे। इस प्रकार, तीन जन्मों के बाद तुम्हें मोक्ष की प्राप्ति होगी।

हिरण्यकश्यप का कठोर तप

भगवान श्रीहरि विष्णु के द्वारपाल जय और विजय कोसनकादि मुनियों द्वारा शाप मिलने के कारण सत्युग में मृत्यु लोक यानी पृथ्वी पर दक्ष प्रजापति की पुत्री दिति और ऋषि कश्यप के पुत्र बनकर जन्म लेना पड़ा।तब उनका नाम हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यप था। हालांकि, एक साथ वे दोनों 'हिरण्य' कहलाए। बता दें कि हिरण्याक्ष अन्य दैत्यों की भांति ही विशालकाय एवं हिंसक प्रवृति का था। एक बार उसने पृथ्वी का हरण कर संपूर्ण पृथ्वी वासियों पर तरह-तरह के अत्याचार करने लगा, जिसके बाद उसके अत्याचारों से पृथ्वी एवं धर्म की रक्षा हेतु भगवान श्रीहरि विष्णु ने 'वाराह' का रूप धारण कर उसका वध किया।अपने भाई की मृत्यु से अत्यंत क्रोधित एवं प्रतिशोध की प्रचंड ज्वाला में धधकता हिरण्यकश्यप ने अजेय होने के उद्येश्य से ब्रह्मा जी को प्रसन्न करने हेतु सहस्त्रों वर्षों तक कठोर तप किया, ताकि अमरता का वरदान प्राप्त कर वह भगवान श्रीहरि विष्णु से प्रतिशोध ले सके।

हिरण्यकश्यप ने स्वयं को भगवान घोषित किया

हिरण्यकश्यप भी हिरण्याक्ष की तरह ही भीमकाय होने के साथ-साथ अत्यंत ही क्रूर, अत्याचारी एवं हिंसक प्रवृति का था। उसकी कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी ने उसे वरदान दिया कि उसकी हत्या न तो दिन में और न रात में, न तो धरती पर और न आकाश में, न तो अस्त्र से न शस्त्र से, न तो किसी मनुष्य से और न ही किसी पशु अथवा देवता के द्वारा हो सकेगी।इस प्रकार, ब्रह्मा जी अजेय होने का वरदान पाकर हिरण्यकश्यप अपनी प्रजा पर अत्याचार करने लगा। दरअसल, उसे पता था कि पृथ्वी से लेकर स्वर्ग तक में ऐसा कोई भी नहीं, जो उसको मार सकता था। इसीलिए सब तरफ उसका आतंक व्याप्त हो गया था। मानवता उसके भय से त्राहि-त्राहि करती और प्रकृति थर-थर कांपती थी। शीघ्र ही, उसने स्वर्ग पर अपना आधिपत्य कर लिया और लोकपालों को हराकर स्वयं ही संपूर्ण लोकों का अधिपति बन गया। उसके बाद उसने घोषणा कर दी कि वही इस पूरे संसार का भगवान है, इसलिए सभी लोग केवल उसकी ही पूजा करें।

पुत्र प्रह्लाद से मिली चुनौती

दैत्यों के राजा हिरण्यकश्यप की प्रचंड शक्ति और सामर्थ्य के आगे देवतागण तो लाचार और निरूपाय हो गए थे, लेकिन हिरण्यकश्यप को जीवन की सबसे बड़ी चुनौती अपने ही पुत्र प्रह्लाद से मिली। दरअसल, प्रह्लाद अपने पिता की आसुरी प्रवृति के विपरीत बहुत बड़े भग्वद्भक्त थे। वहरात और दिन आठों याम भगवान श्रीहरि विष्णु के नाम का जाप करते रहते थे। उनका भजन-कीर्तन करते रहते और जब भी अवसर मिलता भगवान श्रीहरि विष्णु की ही गाथाएं सुनाते रहते थे।

नरसिंह भगवान का अवतार

भग्वद्भक्त प्रह्लाद द्वाराउसकी इच्छा के विरूद्ध व्यवहार करने से अत्यंत क्रुद्ध हिरण्यकश्यप ने पहले तो उन्हें समझाया, किंतु पुत्र प्रह्लाद पर अपनी बातों का कोई प्रभाव न पड़ता देख उसनेउन्हें मारने की अनेक कोशिश की। वह उनके ऊपर तरह-तरह के कठोरतम अत्याचार करने लगा। अंततः ईश्वर कृपा से वह घड़ी भी आई, जब भगवान श्रीहरि विष्णु ने लोकमंगलार्थ एवं धर्म के रक्षार्थ खम्भे से नरसिंह रूप (आधा नर एवं आधा सिंह यानी शेर के शरीर) में प्रकट होकर हिरण्यकश्यप को अपनी जंघा पर लिटाकर अपने ही नाखूनों से चीरकर मार डाला, जिससे संपूर्ण लोकों में शान्ति और धर्म की पुनः स्थापना हो पाई थी। बता दें किनरसिंह भगवान का अवतार भगवान श्रीहरि विष्णु के प्रमुख अवतारों में से एक है। शास्त्रों में वर्णन है कि हिरण्यकश्यपको मारने के बाद भी नरसिंह भगवान का क्रोध शांत नहीं हुआ। उन्हें शांत कराने में भगवान शिव, ब्रह्मादि यहां तक कि उनकी पत्नी देवी लक्ष्मी भी असमर्थ हो गईं।अंत में, ब्रह्मा जी के अनुरोध परभग्वद्भक्त प्रह्लाद ने जब नरसिंह भगवान के पैर छुए तब वे शांत हुए। तत्पश्चात् नरसिंह भगवान ने अपने भक्त प्रह्लाद को गोद में उठाया और प्यार करके वरदान मांगने को कहा। भक्त प्रह्लाद ने कहा- 'आप मेरे सच्चे भगवान हैं। यदि आप मुझे कोई वरदान देना चाहते हैं, तो कृपया मुझे आशीर्वाद दें। उसके बाद नरसिंह भगवान ने प्रह्लाद को राजा बनाया और अच्छे आचरण तथा कर्तव्यों के पालन का निर्देश देकर अंतर्ध्यान हो गए।

पूजा-आराधना

नरसिंह जयंती को देश भर में 'भगवान नरसिंह प्रकटोत्सव' के रूप में मनाया जाता है। वहीं, दक्षिण भारत में वैष्णव संप्रदाय के लोग इनकी पूजा संकट के समय रक्षा करने वाले देवता के रूप में करते हैं। शास्त्रीय मान्यताओं के अनुसार जो भक्त नरसिंह जयंती का व्रत रखकर विधिपूर्वक पूजा-आराधना,आरती, हवन तथा क्षमा प्रार्थना कर निर्मल मन से नरसिंह भगवान का ध्यान करता है, उसके कष्टों को दूर करने के लिए भगवान स्वयं ही प्रकट होते हैं।ऐसे भक्त को यश और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। उनके दुखों का अंत होता है और वे समस्त सुखों के भागी होते तथा पापों से मुक्त होकर परमधाम को प्राप्त करते हैं। इस दिन भगवान नरसिंह के साथ माता लक्ष्मी की पूजा करने से देवी लक्ष्मी की भी कृपा प्राप्त होती है।

(इतिश्री)

ई-ऑफिस संचालन के लिए जिला अधिकारियों का प्रशिक्षण सम्पन्न

बैतूल (निप्र)। बैतूल में ई-ऑफिस संचालन से संबंधित एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में जिले के विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने सहभागिता की। प्रशिक्षण का संचालन जिला सूचना एवं विज्ञान अधिकारी श्रीमती रचना श्रीवास्तव और मस्टर ट्रैनर श्री दिनेश पवार द्वारा किया गया। उन्होंने अधिकारियों को ई-ऑफिस प्रणाली के तहत नोटशीट तैयार करने, वरिष्ठ अधिकारियों को प्रेषित करने, विभागों के मध्य सूचना संप्रेषण, डिजिटल सिग्नेचर के उपयोग, एवं अन्य इलेक्ट्रॉनिक प्रक्रिया से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियाँ विस्तारपूर्वक प्रदान कीं। प्रशिक्षण के दौरान ई-ऑफिस में प्राप्त होने वाले ऑनलाइन पत्रों का अवलोकन, उनका निपटान एवं संबंधित अधिकारियों/कर्मचारियों को उचित रूप से प्रेषण की प्रक्रिया को भी स्पष्ट किया गया। इसके अतिरिक्त, प्रशिक्षणार्थियों द्वारा उठाए गए विभिन्न प्रश्नों व शंकाओं का समाधान भी श्रीमती श्रीवास्तव द्वारा तत्परता से किया गया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य जिला स्तर पर प्रशासनिक कार्यों में डिजिटल प्रणाली के प्रभावी उपयोग को सुनिश्चित करना एवं कार्यों की गति व पारदर्शिता को बढ़ाना रहा।

आईटीआई में रोजगार मेला सम्पन्न

हरदा (निप्र)। शासकीय आईटीआई हरदा में गुरूवार को जिला स्तरीय रोजगार मेले का आयोजन किया गया। जिला रोजगार अधिकारी श्री लक्ष्मणसिंह सिलोटे ने बताया कि मेले में कुल 130 आवेदकों ने अपना पंजीयन कराया। इनमें से 82 बेरोजगार आवेदकों का विभिन्न पदों पर प्राथमिक चयन कर ऑफर लेटर प्रदान किये गये।

खनिज के अवैध उत्खनन व परिवहन में शामिल दो ट्रेक्टर जप्त

हरदा (निप्र)। खनिज के अवैध परिवहन व उत्खनन के विरूद्ध कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन के निर्देश पर लगातार कार्यवाही जारी है। इसी क्रम में शुक्रवार को खनिज विभाग के दल ने खनिज के अवैध उत्खनन, परिवहन के मामले में दो ट्रेक्टर जप्त किये हैं। जिला खनिज अधिकारी श्री आर.पी. कमलेश ने बताया कि खनिज विभाग के दल ने जांच के दौरान टिमरनी तहसील के ग्राम बघवाड मे गंजाल नदी मे नीले रंग का स्वराज ट्रेक्टर बिना नम्बर का बीच नदी मे रेत से भरा खड़ा पाया गया। साथ ही एक अन्य जान डियर ट्रेक्टर ट्राली मे मजदूरो द्वारा रेत भरते हुए पाया गया। इन दोनो ट्रेक्टरों को लाकर थाना टिमरनी मे खड़ा किया गया है। दोनो ट्रेक्टरो के संबंध में गौण खनिज नियमो के तहत प्रकरण तैयार कर कार्यवाही की जावेगी।

जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत किया बीज एकत्रीकरण

बैतूल (निप्र)। मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद घोड़ाडोंगरी द्वारा जल गंगा संवर्धन अभियान 2025 के अंतर्गत जिले की प्रमुख नदियों ताप्ती, तवा, पूर्णा, वर्धा, माचना तथा स्थानीय देनवा नदी के किनारों पर मिट्टी कटाव रोकने एवं हरित क्षेत्र विकसित करने के लिए पौधारोपण और सीडवाल निर्माण की व्यापक योजना बनाई गई है। इस क्रम में घोड़ाडोंगरी की अर्जुन गोंदी पहाड़ी से अर्जुन, करंज, तेंदू, नीम आदि बहुवर्षीय प्रजातियों के लगभग 5 क्विंटल बीज एकत्रित किए गए हैं। यह बीज आगामी हरियाली अमावस्या से शुरू होने वाले वृक्षारोपण अभियान के अंतर्गत नदियों के किनारों पर सीडवाल के रूप में लगाए जाएंगे। साथ ही नवांकुर संस्थाओं द्वारा निर्मित स्थानीय नर्सरियों में इन बीजों से पौधे तैयार कर उन्हें नदियों और पहाड़ियों के किनारे रोपा जाएगा, जिससे पर्यावरण संरक्षण एवं जल स्त्रोतों के पुनर्जीवन में योगदान मिलेगा।

विधायक श्री हेमंत खंडेलवाल ने खिलाड़ियों का बढ़ाया उत्साह

ग्रीष्मकालीन खेल प्रशिक्षण शुभारंभ

बैतूल (निप्र)। कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशानुसार एवं पुलिस अधीक्षक श्री निश्चल एन झरिया के मार्गदर्शन में जिला खेल और युवा कल्याण विभाग, जिला प्रशासन के सहयोग से ग्रीष्मकालीन खेल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 5 मई से 5 जून 2025 तक संचालित किया जा रहा है। जिला खेल और युवा कल्याण विभाग बैतूल द्वारा जिले में मुख्यालय पर 08 खेलों- हॉकी, कराते, कबड्डी, फुटबॉल, व्हॉलीबॉल, बास्केटबॉल, खो-खो, एथेलेटिक्स खेलों एवं समस्त विकासखण्डों में प्रचलित 02 खेलों में प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

खिलाड़ियों को प्रोत्साहित किये जाने एवं उत्तम खेल तकनीक सिखाये जाने के उद्देश्य से खेल और युवा कल्याण विभाग बैतूल द्वारा खिलाड़ियों के प्रशिक्षण के लिए बैतूल विधायक श्री हेमंत खंडेलवाल विधायक के मुख्य आतिथ्य में खेल सामग्री वितरण कार्यक्रम का आयोजन शुक्रवार को स्थानीय मेजर ध्यानचंद हॉकी स्टेडियम में किया गया। इस दौरान विधायक श्री खंडेलवाल एवं जिला खेल और युवा कल्याण अधिकारी श्रीमती पूजा कुरील द्वारा ग्रीष्मकालीन खेल प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षण दे रहे प्रशिक्षकों को विभाग की ओर खेल सामग्री का वितरण किया, जिससे प्रशिक्षक खिलाड़ियों को उच्च स्तरीय खेल अभ्यास करा सके। विधायक श्री खंडेलवाल ने खेलो बढो अभियान को आगे बढाते हुये खिलाड़ी बच्चों को खेल की महत्ता, रुचि, भागीदारी बढाने एवं नए खिलाड़ियों को विकसित कर गौरवान्वित करने के लिए प्रोत्साहित किया। विधायक श्री खंडेलवाल ने युवा पीढ़ी को देश की रक्षा में योगदान देने का आव्हान किया। जिला खेल अधिकारी श्रीमती पूजा कुरील द्वारा खेलो बढो अभियान के तहत खेलों से जुड़ने एवं आगे बढ़ने के लिए विभाग की योजनाओं की जानकारी दी।

शालाओं और अखाड़ों को भी खेल सामग्री का किया वितरण

इसके अलावा जिले में संचालित व्यायाम शालाओं, अखाड़ों को खेल सामग्री, खेल उपकरण का वितरण किया गया। इस अवसर पर का सीए एसोसिएशन अध्यक्ष श्री प्रदीप खंडेलवाल, श्री रमेश भाटिया, श्री मुकेश वर्मा, हॉकी संघ अध्यक्ष श्री अक्षय वर्मा, सचिव श्री जागेंद्र सिंह तोमर, श्री शैलेश गुबरेले, कुश्ती संघ अध्यक्ष श्री सतीश महाते, श्री शारिक खान एवं क्रीड़ा अधिकारी डॉ. नीलिमा पीटर, सहा प्राध्यापक डॉ.शीतल खरे, अखाड़ा परिवार श्री मूलचंद यादव, समस्त जिला खेल प्रशिक्षक, खेल प्रशिक्षक, समस्त युवा समन्वयक एवं खिलाड़ी उपस्थित रहे।

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत जिले के अनेक गांवों में जल चौपाल आयोजित

सीहोर (निप्र)। जल संरक्षण के प्रति नागरिकों को जागरूक करने एवं जल स्त्रोतों के जीर्णोद्धार के उद्देश्य से चलाए जा रहे जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत ग्राम पंचायत सोहनखेड़ा, बिलकिसगंज, कांकड़खेड़ा, इटावाखुर्द, पिपलानी, कनेरिया, हालियाखेड़ी बालापुरा, सहित जिले के अनेक गांवों में जल चौपाल का आयोजन किया गया। इस जल चौपाल में ग्रामवासियों को जल संरक्षण, जल प्रबंधन और जल स्त्रोतों के पुनर्जीवन के महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। जल चौपाल में ग्रामवासियों को बताया गया कि किस प्रकार छोटे-छोटे प्रयासों से जल का सरंक्षण कर भविष्य में उत्पन्न होने वाले जल संकट को रोका जा सकता है। इस अवसर पर ग्रामवासियो को बताया गया कि जल की एक-एक बूंद बहुत कीमती है। प्रकृति की इस अमूल्य धरोहर को सहेजना हम सभी का नैतिक कर्तव्य है। यदि आज हम जल का संरक्षण करते हैं तो हमारी आने वाली पीढ़ियों को एक सुरक्षित कल दे सकते हैं। इस अवसर पर सभी ग्रामवासियों को जल संरक्षण एवं संवर्धन की शपथ दिलाई गई और सभी ग्रामवासियों ने जल बचाने के लिए संकल्प लिया। उल्लेखनीय है कि कलेक्टर श्री बालागुरू के. के निर्देशानुसार सीहोर जिले मे 30 मार्च से 30 जून तक जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत जिले भर में जल संरक्षण से संबंधित अनेक गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं।

अभियान के तहत आमजन को जल संरक्षण के प्रति जागरूक करने के लिए दीवार लेखन, जागरूकता रैली, पोस्टर बैनर, रंगोली, ग्राम सभाएं, कलश यात्राएं, शपथ सहित अनेकों गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। अभियान के तहत जिले के अनेक ग्रामों में कूप मरम्मत, तालाब जीर्णोद्धार, डैम की साफ-सफाई सहित अनेक कार्य किए जा रहे हैं तथा नागरिकों को जल संरक्षण की शपथ भी दिलाई जा रही है। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जिले में जल संरक्षण एवं संवर्धन से संबंधित खेत, तालाब, अमृत सरोवर, परकोलेशन टैंक, डगवेल, तालाब जीर्णोद्धार, जनभागीदारी के कार्य, कूप एवं बाउंड्री मरम्मत के कार्य किए जा रहे हैं। जल गंगा संवर्धन अभियान का प्रमुख उद्देश्य जनभागीदारी से जल संरक्षण तथा संवर्धन सुनिश्चित करना है। इस अभियान के अन्तर्गत समाज की भागीदारी तथा और विभिन्न सहयोगी विभागो की समेकित पहल से मुख्यत जल संरक्षण संरचनाओं के निर्माण, भूजल संवर्धन, पूर्व से मौजूद जल संग्रहण संरचनाओं की साफ सफाई एवं जीर्णोद्धार करना है।

शिशु एवं मातृ मृत्यु दर कम करने के लिए हर संभव प्रयास करें

हरदा (निप्र)। कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन ने शुक्रवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक में उपस्थित स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिले में मातृ मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर कम करने के लिए हर संभव प्रयास किए जाएं । उन्होने निर्देश दिए कि गर्भवती महिलाओं का सही समय पर स्वास्थ्य परीक्षण एवं टीकाकरण किया जाए, ताकि प्रसव के समय उन्हें कोई परेशानी ना आए। उन्होंने कहा कि हाई रिस्क गर्भवती महिलाओं को प्रसव से कुछ दिन पूर्व ही शासकीय अस्पताल में भर्ती कर उनके स्वास्थ्य पर नजर रखी जाए। इस दौरान मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर एच पी सिंह सहित स्वास्थ्य विभाग के अन्य अधिकारी भी मौजूद थे। कलेक्टर श्री जैन ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी को निर्देश दिए कि पोषण पुनर्वास केंद्रों में कुपोषित बच्चों को भर्ती कराकर उनका उपचार कराया जाए। उन्होने कहा कि पोषण पुनर्वास केन्द्रों में कोई भी पलंग खाली न रहे। इन केन्द्रों की क्षमता का अधिकतम उपयोग किया जाए। उन्होने पोषण पुनर्वास केन्द्र में भर्ती बच्चों की माताओं को मिलने वाली राशि का समय पर भुगतान कराने के निर्देश भी दिये। बैठक में कलेक्टर श्री जैन ने रहटगांव एवं टिमरनी के पोषण पुनर्वास केन्द्रों में निर्धारित लक्ष्य से कम बच्चे भर्ती किये जाने पर नाराजगी प्रकट की और सुधार के निर्देश दिये। उन्होने स्वास्थ्य विभाग के तहत संचालित निर्माण कार्यों को शीघ्रता से पूर्ण करने के निर्देश भी बैठक में दिये। कलेक्टर श्री जैन ने बैठक में अंधत्व निवारण कार्यक्रम, मलेरिया नियंत्रण कार्यक्रम, कुष्ठ रोग उन्मूलन कार्यक्रम, क्षय नियंत्रण कार्यक्रम, आयुष्मान भारत योजना, राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम सहित स्वास्थ्य विभाग के सभी प्रमुख कार्यक्रमों व योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की।

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत स्वीकृत समस्त कार्य तीन दिवस की अवधि में प्रारंभ करें : जिला पंचायत सीईओ श्री जैन

बैतूल (निप्र)। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत स्वीकृत खेत तालाब, डगवेल रिचार्ज, चेकडेम जैसे समस्त कार्य आगामी तीन दिवस की अवधि में प्रारंभ कर 15 दिनों में पूर्ण कराना सुनिश्चित करें। उक्त निर्देश मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री अक्षत जैन ने शुक्रवार को जनपद पंचायत बैतूल के खंडारा एवं खेडीसावलीगढ सेक्टर के औचक निरीक्षण के दौरान सेक्टर मुख्यालय पर आयोजित सहायक यंत्री, उप यंत्री, सचिव, ग्राम रोजगार सहायको की समीक्षा बैठक में दिए। जिला पंचायत सीईओ श्री जैन ने निर्देशित किया कि पूर्व से लंबित जल संवर्धन, संरक्षण के कार्यो को भी शीघ्र पूर्ण कराया जाए। प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत स्वीकृत आवासों के हितग्राहियों से निरंतर संपर्क किया जाकर समस्त आवास समय सीमा में पूर्ण कराए जाए।

महत्वपूर्ण स्थलों की सुरक्षा और नागरिक सेवाओं पर विशेष ध्यान दिया जाए : कलेक्टर, एसपी

सभी विभाग अपनी व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करें और सुरक्षा के सभी आवश्यक कदम उठाएं - कलेक्टर, एसपी

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. तथा एसपी श्री दीपक कुमार शुक्ला ने कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में जिले की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर जिले के अधिकारियों की बैठक ली। उन्होंने कहा कि वर्तमान स्थिति को देखते हुए सभी नागरिकों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने सभी राजस्व, पुलिस एवं संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि जरूरी नागरिक सेवाओं पर विशेष ध्यान दिया जाए, सभी विभाग अपनी-अपनी व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करें और सुरक्षा के सभी आवश्यक ऐहतियाती कदम तत्काल प्रभाव से लागू किए जाएं। उन्होंने कहा कि राष्ट्र विरोधी किसी भी प्रचार पर सख्ती से अंकुश लगाया जाए। नागरिकों को अफवाहों पर ध्यान न देने की लिए प्रेरित और सूचित करें।

केंद्रीय और राज्य सरकार के महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों के साथ ही जिले के महत्वपूर्ण स्थलों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाये। आपदा प्रबंधन के सभी उपाय एवं आवश्यकताओं जैसे स्वास्थ्य, अग्निशमन सेवाओं को और अधिक सुदृढ़ कर लिया जाए। उन्होंने जिले की वर्तमान सुरक्षा व्यवस्थाओं, नागरिक सुविधाओं की स्थिति और विभागीय समन्वय की समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों को आपसी तालमेल को और अधिक बेहतर बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने यह भी कहा कि किन्हीं भी आपातकालीन परिस्थितियों के लिए सभी विभाग तत्परता और सजगता के साथ तैयार रहें।

परिस्थितियां सामान्य होने तक नागरिक सुविधाओं की सहज आपूर्ति से जुड़े सभी विभागों के अधिकारी और फील्ड अमला सतर्क रहे। बैठक में एएसपी श्रीमती सुनीता रावत, संयुक्त कलेक्टर श्री आनंद सिंह राजावत, एसडीएम श्री तन्मय वर्मा, सीएसपी श्री निरंजन सिंह राजपूत तथा होमगार्ड जिला कमांडेंट नीलमणी लड़िया सहित राजस्व एवं पुलिस के अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

जिला आपदा प्रबंधन की बैठक संपन्न

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने आज जिला आपदा प्रबंधन की बैठक आयोजित कर आपदाओं से निपटने हेतु किए गए प्रबंधों का जायजा लिया है। कलेक्ट्रेट के बेतवा सभा कक्ष में आयोजित इस बैठक में उन्होंने उपस्थित अधिकारियों को सचेत करते हुए कहा कि विदिशा जिले में पूर्वानुसार तमाम सुविधाएं संचालित हो इसके लिए विभागो में आपसी समन्वय स्थापित कर क्रियान्वित करें। कलेक्टर श्री गुप्ता ने कहा कि किसी भी आपदा स्थिति से निपटने के लिए शासन द्वारा दिए गए निर्देशो को सभी एकजुट होकर पालन कर क्रियान्वित करेंगे। किसी भी विपरित परिस्थितियों में संयम के साथ रहकर बिना पेनिक हुए आमजनों के साथ सौहार्द मधुर व्यवहार से संवाद कर अपने-अपने क्षेत्रों में आस-पास हो रही गतिविधियों पर नजर बनाए रखेंगे। कलेक्टर श्री गुप्ता ने जिलाधिकारियों सहित वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से जुड़े समस्त एसडीएमों से कहा कि विशेष तौर पर सभी व्यापारियों से संवाद करें और उनकी बैठकें आयोजित कर खाद्य सामग्री के रेट पूर्ववत ही रहे, विक्रय दरो में किसी भी प्रकार की बढ़ोतरी ना हो पर सतत नजर रखें। उन्होंने कहा कि अनावश्यक मैसेज की फॉरवर्डिंग ना करें। सप्लाई चेन बनी रहे पानी, बिजली सहित अन्य बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति सुनिश्चित हो का विशेष ध्यान रखा जाए। किसी भी प्रकार की आपदा से निपटने के लिए तैयार रहें, इसके लिए हमें अलर्ट रहने की आवश्यकता है और स्टॉक की उपलब्धता पर विशेष ध्यान दें। कलेक्टर श्री गुप्ता ने कहा कि विशेष तौर पर सोशल मीडिया पर भ्रामक खबरें ना फैलाई जाएं ना ही उनकी फॉरवर्डिंग की जाए का सभी विशेष ध्यान रखते हुए मॉनिटरिंग के प्रबंध सुनिश्चित करें। भ्रामक खबरों पर ध्यान ना देते हुए सावधान रहें ऐसी ही सींख सभी को दें। उन्होंने जिले के सभी विभागीय अधिकारी , कर्मचारियों की सूची, शस्त्र लाइसेंस धारकों की सूची, फायर ब्रिगेड टेंडर की सूची, जेसीबी, पोकलेन इत्यादि मशीनों की सूची, एनसीसी सीनियर व जूनियर विंग की सूची, रिटायर पुलिस व आर्मी ऑफीसरों की सूची, प्राइवेट गार्डो की सूची भी उपलब्ध कराने के निर्देश संबंधित विभागों के अधिकारियों को दिए गए हैं।

आबकारी अधिनियमों तहत अप्रैल में 282 प्रकरण दर्ज हुए

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुपालन में आबकारी विभाग द्वारा जिले में अवैध मदिरा के क्रय विक्रय परिवहन और लायसेंसी विक्रेताओं की शिकायतों पर त्वरित कार्यवाही अभियान के रूप में क्रियान्वित की जा रही है। जिला आबकारी अधिकारी श्री विनय रंगशाही ने बताया कि विभाग के द्वारा अप्रैल माह में कुल 282 प्रकरण पंजीबद्ध कर आबकारी अधिनियम की धाराओं के तहत कार्यवाही की गई है। कुल प्रकरणों में से जिले की 74 कम्पोजिट मदिरा दुकानो का सघन निरीक्षण के दौरान 135 प्रकरण दर्ज हुए हैं। जबकि अवैध मदिरा के 147 प्रकरण शामिल हैं।इन प्रकरणों में जप्त मदिरा का बाजार मूल्य 6 लाख 76 हजार 970 रुपए आकंलित किया गया है। जिला आबकारी अधिकारी श्री रंगशाही ने बताया कि जिले में आबकारी विभाग द्वार मदिरा के अवैध निर्माण, परिवाहन, संग्रहण, चैर्यनयन एवं मदिरा का अवैधपान करने व कराने वालो के विरूद्ध सघन अभियान चलाया जा रहा है।

भोपाल समेत कई जिलों में जोरदार आंधी-बारिश

अशोकनगर में ओले गिरे, खरगोन-मंदसौर और शहडोल में टीन शेड उड़े, कई जगह गिरे पेड़

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में रविवार को दोपहर बाद फिर मौसम बदला। इस दौरान भोपाल के कोलार इलाके समेत कई जिलों में जोरदार बारिश हुई। मंदसौर, शहडोल, खरगोन और अशोकनगर में दोपहर 1 बजे के बाद तेज हवाओं के साथ पानी गिरा। अशोकनगर में ओले गिरे।

आंधी के कारण खरगोन में कई स्थानों पर टीन शेड उड़ गए, जबकि कुछ जगह पेड़ उखड़े हैं। सीजन में ये अबतक की सबसे तेज आंधी थी।

आंधी के साथ बारिश, ओले गिरे- रविवार शाम 4 बजे से जिले भर में एक बार फिर से तेज आंधी चली, बारिश हुई और कुछ जगहों पर ओले भी गिरे। लगभग एक घंटे तक ये दौर चला। आंधी के कारण कई स्थानों पर टीन शेड उड़ गए, जबकि कुछ जगह पेड़ उखड़े हैं। सीजन में ये अबतक की सबसे तेज आंधी थी।

खरगोन- रुक-रुक कर 1 घंटा बारिश, पारा गिरा- खरगोन में रविवार को दिन भर की उमस के बाद दोपहर 3:15 बजे बाद अचानक मौसम बदला। तेज हवा के साथ जोरदार बारिश हुई। सड़कों पर पानी बहने लगा। रुक-रुककर करीब 1 घंटा तेज बारिश हुई। भीकनगांव में भी अच्छी बारिश दर्ज की गई। बीते 24 घंटे में 2 डिग्री अधिकतम तापमान में गिरावट दर्ज हुई। अधिकतम तापमान 34 डिग्री के आसपास आ गया है।

कई जिलों में बारिश, तापमान 40 डिग्री के पार पहुंचा

शनिवार को कई जिलों में मौसम बदला रहा। ग्वालियर में शाम को रिमझिम बारिश हुई। जबकि मंडला में दोपहर 3 बजे के करीब तेज बारिश हुई, जिससे लोगों को उमस और गर्मी से राहत मिली। भोपाल में दिनभर बादल छाए रहे। वहीं, इंदौर-उज्जैन समेत कई जिलों में भी ऐसा ही मौसम रहा।

कुछ दिन की राहत के बाद दिन का तापमान फिर से 40 डिग्री पर आ गया। खजुराहो और दमोह सबसे गर्म रहे। बड़े शहरों में ग्वालियर में पारा 39.1 डिग्री पर पहुंच गया। भोपाल में 37.2 डिग्री, इंदौर में 35.5 डिग्री, उज्जैन में 36.5 डिग्री और जबलपुर में 37.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। रीवा, सागर, सतना, उमरिया, सीधी, खंडवा और मंडला में तापमान 39 डिग्री के पार रहा। इकलौता हिल स्टेशन पचमढ़ी में तापमान सबसे कम 30.2 डिग्री दर्ज किया गया। रायसेन में यह 34 डिग्री रहा।

गले से मल मार्ग तक वीडियोग्राफी करेगा रिमोट कंट्रोल कैप्सूल

अब छोटी आंत की जांच संभव, दो माह में भोपाल में होगी कैप्सूल से स्कैनिंग

भोपाल (नप्र)। भोपाल में दो माह बाद एक नई तकनीक की शुरुआत होने जा रही है, जो पेट और आंतों की बीमारियों का पता लगाने के लिए सर्जरी या लंबे एंडोस्कोपी ट्यूब की जरूरत को खत्म कर देगी।

पिल बोट एंडोस्कोपी नाम की यह तकनीक एक खास कैमरा युक्त और रिमोट से कंट्रोल होने वाला कैप्सूल है। जिसे मरीज को निगलना होता है। इसके बाद यह गले से लेकर मल मार्ग तक वीडियोग्राफी करता है। इस कैप्सूल की अकेली कीमत लगभग 50 हजार रुपए होगी।

वहीं, पूरी जांच प्रक्रिया में करीब एक लाख रुपए तक खर्च आएगा। हालांकि, जितनी अधिक जानकारी इस तकनीक से मिलेगी वो कई अलग अलग जांच के बारबर होगी। यह जानकारी गैस्ट्रोएंट्रोलॉजी की दो दिवसीय 'वैसोकॉन 2025' कॉन्फ्रेंस अध्यक्ष डॉ. संजय कुमार ने दी। इस कॉन्फ्रेंस में ब्लीडिंग और खून के थक्के जैसी गंभीर समस्याओं के इलाज पर देशभर के विशेषज्ञ डॉक्टर कोर्टयार्ड बाय मैरियट में चर्चा कर रहे हैं।

पिल बोट एंडोस्कोपी नई तकनीक- पिल बोट एंडोस्कोपी एक विशेष प्रकार की कैप्सूल तकनीक है। जो आकार में आम दवाई जैसी होती है, लेकिन इसमें एक माइक्रो कैमरा, बैटरी और वायरलेस सिस्टम होता है। यह मरीज के शरीर में जाकर 12 घंटे तक सक्रिय रहता है और पूरे पाचन तंत्र की अंदरूनी तस्वीरें बाहर स्क्रीन पर भेजता है। इस रिमोट से कंट्रोल किया जा सकता है। हाल ही में यह तकनीक भारत में लॉन्च हुई है। जिसके बाद अब यह दो माह में भोपाल में आने जा रही है। डॉ. एस पी मिश्रा, डॉ. संजय कुमार ने कार्यक्रम की जानकारी साझा की।

इन रोगों में आएगी काम- इस कैप्सूल से छोटी आंत (22 फीट लंबी) की जांच हो सकेगी। अब तक कोलोनोस्कोपी और एंडोस्कोपी से इसकी पूरी जांच संभव नहीं होती थी।

पेट के अल्सर, गेस्ट्रिक कैंसर, आंतों में ब्लीडिंग, पोलीप्स, थ्रोम्बोसिस या खून के थक्के, बायोप्सी की आवश्यकता वाले लक्षण आदि की जांच में कारगर।

ग्रासनली (एसोफैगस) और बड़ी आंत (कोलन) में भी जांच संभव, इसके विशेष संस्करण उपलब्ध।

सोफैगस वेरिसीज, अल्सर, या गैस्ट्रोइसोफेगल रिफ्लेक्स डिजीज की जांच में विशेष वर्जन का उपयोग किया जाता है।

इन मरीजों में लाभकारी होगी कैप्सूल

जिन्हें पारंपरिक एंडोस्कोपी से डर लगता है। जिनके लिए गले से ट्यूब डालना जोखिमभरा हो सकता है।

जो बार-बार ब्लीडिंग, एनीमिया या पेट दर्द से परेशान हैं, लेकिन कारण नहीं मिल रहा।

ऐसे होगी इससे जांच

मरीज इस कैप्सूल को सामान्य पानी के साथ निगलता है। निगलने के बाद यह कैप्सूल शरीर के भीतर धीरे-धीरे पाचन तंत्र के रास्ते से होकर गुजरता है। इसके भीतर लगा मॉडर्न कैमरा शरीर के अंदर की तस्वीरें रिकॉर्ड करता है और उन्हें वायरलेस माध्यम से बाहर एक विशेष स्क्रीन पर भेजता है। डॉक्टर इन लाइव इमेजेस के आधार पर पाचन तंत्र की आंतरिक स्थिति को बारीकी से समझ पाते हैं और रोग की सटीक जानकारी प्राप्त कर, बेहतर और लक्षित उपचार तय कर सकते हैं। हालांकि, यह कैप्सूल बायोप्सी नहीं कर सकता, यानी यह सिर्फ जांच करता है, ऊतक का सैंपल नहीं लेता है।

खून का थक्का जमने और ब्लीडिंग पर डॉक्टर कर रहे चर्चा

ब्लीडिंग और खून के थक्के जैसी गंभीर समस्याओं के इलाज पर विशेषज्ञ डॉक्टर चर्चा कर रहे हैं। कॉन्फ्रेंस में देशभर से गैस्ट्रोएंट्रोलॉजिस्ट, हेमेटोलॉजिस्ट और सर्जन शामिल हुए हैं। जो पेट और लिवर से जुड़ी बीमारियों में ब्लीडिंग (रक्तस्राव) और थ्रोम्बोसिस (खून का थक्का जमना) की समस्याओं और उनके इलाज पर जानकारी दे रहे हैं।

हीमोग्लोबिन का स्तर 15 से अधिक तो रहें सावधान

प्रयागराज से आए गैस्ट्रोएंट्रोलॉजिस्ट डॉ. एसपी मिश्रा ने कहा कि हीमोग्लोबिन यदि कम है या ज्यादा है तो दोनों घातक है। जब हीमोग्लोबिन का स्तर 15 से ऊपर निकल जाता है तो खून के थक्के जमने का डर होता है। इसमें प्रमुख लक्षणों में सर में दर्द होता है। यह खून के थक्के शरीर के किसी भी अंग में जम सकते हैं। जिससे ब्रेन स्ट्रोक, हार्ट अटैक या गेस्ट्रो से संबंधित समस्या हो सकती है। यदि लिवर तक खून पहुंचाने वाली नस में ब्लॉकेज हो जाए तो यह लिवर डैमेज का कारण बन सकता है। इसी तरह की स्थिति अलग अलग अंग के साथ भी बन सकती है। इसलिए हर व्यक्ति को बेसिक जांच जरूरी हैं और शरीर में किसी तरह के कोई भी समस्या 10 दिन से ज्यादा समय से बनी हुई है तो तत्काल जांच जरूर कराएं।

कॉन्फ्रेंस में इन विषयों पर चर्चा

- वेरिसील और नॉन-वेरिसील जीआई ब्लीडिंग
- बच्चों में रेक्टल ब्लीडिंग
- पोर्टल वेन थ्रोम्बोसिस
- बायोप्सी और कैंसर की निगरानी

प्रदेश कार्यालय में आयोजित श्रद्धांजलि सभा को संबोधित किया

भोपाल। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता स्व. श्री नरेंद्र सलूजा की पुण्य स्मृति में भाजपा प्रदेश कार्यालय में रविवार को श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा एवं प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी सहित वरिष्ठ नेता एवं पत्रकारगणों ने दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धासुमन अर्पित कर श्रद्धांजलि सभा को संबोधित किया। श्रद्धांजलि

सभा में स्व. नरेन्द्र सलूजा की धर्मपत्नी श्रीमती रिम्पी सलूजा, पुत्र श्री मीत सलूजा एवं पुत्री सुश्री आश्वी सलूजा सहित उनके परिजनों ने श्रद्धासुमन अर्पित कर नमन किया।

स्व. नरेंद्र सलूजा जी ने पार्टी में प्रभावी भूमिका निभाई-श्री विष्णुदत्त शर्मा- भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि स्व. श्री नरेंद्र सलूजा ने बहुत जल्द भारतीय जनता पार्टी की संगठन पद्धति को आत्मसात कर पार्टी के लिए प्रभावी भूमिका निभाई। स्व. श्री नरेंद्र सलूजा ने अपनी योग्यता से दुनिया के सबसे बड़े राजनैतिक दल भाजपा में बहुत कम समय में अपनी जगह बना ली थी। उन्होंने कर्मठता और ईमानदारी के साथ दायित्व का निर्वहन किया। उन्होंने कहा कि पत्रकार खोजी होता है, लेकिन स्व. श्री नरेंद्र सलूजा की जानकारी पूर्ण होती थी, इसलिए उनकी सूचना सदैव सटीक होती थी। विपक्ष को किस मुद्दे पर घेरना है वे भलीभांति जानते थे। मैं कह सकता हूं कि हमने एक ऐसे कार्यकर्ता को जल्दी खो दिया है जो हमेशा पार्टी की बात को आगे रखकर पार्टी को मजबूत करने का प्रयास करते थे।

दिग्विजय के भाई को कांग्रेस ने थमाया शोकॉज नोटिस

लक्ष्मण सिंह के लगातार पार्टी विरोधी बयानों पर अब दिल्ली ने दिखाई सख्ती

भोपाल (नप्र)। पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह के छोटे भाई और पूर्व सांसद लक्ष्मण सिंह को ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी के जनरल सेक्रेटरी (संगठन) केसी वेणुगोपाल ने शोकॉज नोटिस जारी किया है। वेणुगोपाल ने पार्टी विरोधी बयानों को लेकर लक्ष्मण सिंह से 10 दिनों में जवाब मांगा है।

कहा था उमर अब्दुल्ला आतंकियों से मिले हैं- 24 अप्रैल को गुना जिले के राघौगढ़ में लक्ष्मण सिंह पहलगाम आतंकी हमले के खिलाफ प्रदर्शन में शामिल हुए थे। इस दौरान उन्होंने जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला आतंकवादियों से मिले हुए हैं। कांग्रेस को उनसे समर्थन वापस ले लेना चाहिए। लक्ष्मण सिंह यहीं नहीं रुके, उन्होंने राहुल गांधी को भी सोच समझकर बात करने की नसीहत दे डाली। कहा था कि मैं कैमरे के सामने कह रहा हूं, पार्टी को मुझे निकालना हो तो आज निकाल दे। हमारी पार्टी के नेता सोच समझकर बोले नहीं तो उन्हें चुनाव में परिणाम भुगतना पड़ेंगे।

जहां टूरिस्ट थे, वहां पुलिस क्यों नहीं थी- लक्ष्मण सिंह ने कहा- चुनी हुई सरकार यह तय करती है कि फौज कहां लगेगी और पुलिस कहां लगेगी। जहां वो बताते हैं, वहां जाकर वो लग जाती है। जहां फौज लगी है, वहां उन्होंने (आतंकियों) कुछ नहीं किया। जहां टूरिस्ट इक्ट्ठे हो रहे थे, वहां पुलिस क्यों

नहीं लगाई। एक सिपाही नहीं था वहां, इसका दोषी कौन है? आतंकवादी तो हैं ही, पर वो मिला हुआ है।

रॉबर्ट वाड्रा का बचपना कब तक झेलेंगे- लक्ष्मण सिंह ने राहुल गांधी के जीजा रॉबर्ट वाड्रा पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा-ये हमारा रॉबर्ट वाड्रा, जीजा जी राहुल गांधी का, कहता है कि मुसलमानों को सड़क पर नमाज नहीं पढ़ने देते इसलिए आतंकवादियों ने हमला किया। इन दोनों का ये बचपना हम कब तक झेलेंगे। राहुल गांधी भी थोड़ा सोच-समझकर बात करें। इनकी नादानियों की वजह से इस तरह की घटनाएं हो रही हैं।

लगातार पार्टी लाइन से हटकर दे रहे बयान- लक्ष्मण सिंह लंबे समय से पार्टी लाइन से हटकर बयान देते रहे हैं। वे दिग्विजय सिंह से लेकर राहुल गांधी, जीतू पटवारी सहित तमाम नेताओं पर सवाल उठा चुके हैं। इस मामले में पार्टी के भीतर लक्ष्मण सिंह पर कार्रवाई करने की मांग उठ रही थी।

10 लाख में सुपारी देकर कराई पति की हत्या

भोपाल में पत्नी ने किराएदार के साथ मिलकर रची साजिश ; गमछे से गला घोंटा

भोपाल (नप्र)। भोपाल में एक महिला ने 10 लाख में पति की सुपारी देकर उसकी हत्या करा दी। महिला ने अपनी किराएदार और उसके प्रेमी के साथ मिलकर यह साजिश रची। किराएदार ने बुजुर्ग के पैर पकड़े और उसके प्रेमी ने गमछे से गला घोंट दिया। वारदात 18 अप्रैल को पिपलानी की है। जार्ज कुरियन (64) भेल से रिटायर्ड अफसर थे। पुलिस को गुमराह करने के लिए पत्नी ने बाथरूम में पांव फिसलकर गिरने की बात कही थी।

शनिवार को पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट मिलने के बाद पुलिस ने हत्या का केस दर्ज कर लिया। पुलिस ने आरोपी पत्नी बिट्टी जार्ज (32), किराएदार रेखा सूर्यवंशी और उसके प्रेमी संजय पाठक को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने आरोपी संजय पाठक को रविवार तक की रिमांड पर लिया है। तीनों ने अपने जुर्म को स्वीकार कर लिया है।

अकेले जीना चाहती थी पत्नी- टीआई अनुराग लाल ने बताया कि, जार्ज भेल के रिटायर्ड अधिकारी थे। उनकी पहली पत्नी केरल में रहती हैं। उन्होंने बिट्टी से तब शादी की जब वह महज 17 साल की थी। दोनों की नौ साल की बेटी है। बिट्टी पूर्व में जार्ज के घर काम करती थी। बिट्टी ने पुलिस को बताया कि जार्ज की हत्या के बाद वह अकेले जीना चाहती थी। उसे उम्मीद थी कि पति की मौत के बाद उनका सारा पैसा, पैंशन और मकान उसे मिल जाएगा।

बिट्टी जार्ज, आरोपी पत्नी

जार्ज कुरियन, मृतक पति

पति छोटी-छोटी बातों पर टोकता था- बुजुर्ग पति छोटी-छोटी बातों पर उसे रोकता-टोकता और डांटता था। यही कारण था कि वह उससे निजात पाना चाहती थी। किराएदार रेखा सूर्यवंशी से पति की नजदीकियां भी उसे परेशान करती थीं। रेखा ने ही पति के चरित्र के संबंध में उसे अहम जानकारी दीं और पति की हत्या कर आराम से जीवन जीने की बात कही।

रेखा ने बनाई थी हत्या की योजना- रेखा के कहने पर जब पति की हत्या कराने के लिए बिट्टी राजी हो गई तो रेखा ने प्लान बनाया कि वह अपने प्रेमी संजय की मदद से जार्ज की हत्या करा देगी। इसके एवज में उन्हें 10 लाख रुपए चाहिए होंगे। बिट्टी ने शर्त रखी की हत्याकांड के बाद ही उन्हें रकम तब देगी जब पति की पेंशन उसके नाम हो जाएगी। रेखा इसके लिए राजी हो गई और अपने प्रेमी को भी राजी कर लिया।

एडवांस में 50 हजार खाते में कराए ट्रांसफर- पति की हत्या करने के एवज में बिट्टी ने संजय और रेखा को 10 लाख की सुपारी दी थी। हालांकि दोनों ने बतौर एडवांस बिट्टी से 50 हजार रुपए लिए। यह रकम महिला ने अपने खाते से ऑनलाइन ट्रांसफर की थी। बैंक स्टेटमेंट में इस बात की पुष्टि हो चुकी है।

आखिरी सांस तक पति को तड़पते देखा- 18 अप्रैल की रात बिट्टी ने संजय को अपने घर बुलाया। यहां मौका पाकर उसने जार्ज का गला घोंट दिया। बिट्टी ने आखिरी सांस तक पति को तड़पते देखा। मौत को सुनिश्चित करने के लिए उसने पति को हिलाकर चेक किया। जब शरीर में कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई तब उसे अस्पताल पहुंचाया। जहां से पुलिस को सूचना दी गई।

बॉडी पर मिले स्ट्रगल मार्क- जार्ज ने मौत से पहले बचने के लिए प्रयास किए। 59 वर्षीय संजय ने पूरी ताकत से उसका गला घोंटे रखा। इस दौरान संजय के नाखून जार्ज के गले पर लगे। इससे उनकी गर्दन पर स्ट्रगल मार्क बन गए थे। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद पूरे मामले का खुलासा हो गया।

भोपाल में जुटे देशभर के गैस्ट्रो एक्सपर्ट्स

बोले-ऑर्गन ट्रांसप्लांट में भारत दुनिया का दूसरा सफल देश, सर्जरी के बाद 80 प्रतिशत स्वस्थ

भोपाल (नप्र)। राजधानी के कोर्टयार्ड, डीबी मॉल में रविवार को गैस्ट्रोएंट्रोलॉजिस्ट की राष्ट्रीय मीट आयोजित की गई। इस दौरान देशभर से आए वरिष्ठ डॉक्टर्स ने पाचन तंत्र से जुड़ी बीमारियों, इंटरनल ब्लीडिंग और ऑर्गन ट्रांसप्लांट की आधुनिक तकनीकों पर विस्तार से चर्चा की।

मेदांता मेडिसिटी, गुरुग्राम से आए डॉ. राजेश पुरी ने बताया कि इस आयोजन के ऑर्गनाइजिंग चेयरमैन डॉ. संजय हैं, जो हर वर्ष यह कार्यक्रम आयोजित करते हैं। इस बार की मीट में इंटरनल ब्लीडिंग विषय पर डॉक्टर्स ने वीडियो और प्रेजेंटेशन के माध्यम से अपने अनुभव साझा किए।

पाचन तंत्र की बीमारियों का अब सटीक इलाज संभव- भुवनेश्वर से आए वरिष्ठ गैस्ट्रोएंट्रोलॉजिस्ट डॉ. एस.के. आचार्य ने कहा कि अब लगभग हर पाचन तंत्र से जुड़ी बीमारी का इलाज संभव है। भारत ऑर्गन ट्रांसप्लांट के क्षेत्र में दुनिया का दूसरा सबसे सफल देश है। देश में ट्रांसप्लांट करवाने वाले 75-80 प्रतिशत मरीज 10-15 वर्षों तक स्वस्थ जीवन जीते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि आधुनिक तकनीकों की मदद से ट्रांसप्लांट के बाद होने वाली जटिलताओं का इलाज भी संभव हो चुका है।

डॉ. शुभम उपाध्याय ने बताया कि गर्भवती महिलाओं के पाचन तंत्र समस्या होने पर बच्चे की ग्रोथ रेट कम हो सकती है।

नाभी हटना और गैस सिर में चढ़ना जैसे भ्रम फैलाए जा रहे- डॉ. आचार्य ने कहा कि लोगों के बीच पाचन से जुड़ी कई भ्रामक अवधारणाएं हैं, जैसे नाभी का हटना या गैस का सिर में चढ़ना, जबकि इनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। उन्होंने बताया कि फैट केवल लिवर में ही नहीं, बल्कि दिल और शरीर के अन्य हिस्सों में भी जमा हो सकता है। फैटी लिवर, शरीर में अत्यधिक फैट होने की चेतावनी है, जो सामान्यतः मीठा और प्रोसेस्ड फूड अधिक खाने से होता है।गैस्ट्रोएंटेरोलॉजिस्ट प्रवीण शर्मा ने बताया कि इंटरनल ब्लीडिंग लिवर खराब होने पर भी होती है।

पाचन तंत्र की गड़बड़ी से बच्चों की ग्रोथ प्रभावित होती- इंदौर से आए डॉ. शुभम उपाध्याय ने कहा कि यदि गर्भावस्था के दौरान महिलाओं को पाचन से जुड़ी समस्याएं होती हैं, तो इसका सीधा असर गर्भ में पल रहे बच्चे की ग्रोथ पर पड़ता है। ऐसे में बच्चे को जरूरी पोषक तत्व नहीं मिल पाते, जिससे उसका विकास रुक सकता है।

लिवर खराब होने से हो सकती है इंटरनल ब्लीडिंग- दिल्ली के सर गंगाराम हॉस्पिटल के गैस्ट्रोएंट्रोलॉजिस्ट डॉ. प्रवीण शर्मा ने बताया कि लिवर के क्षतिग्रस्त होने पर इंटरनल ब्लीडिंग हो सकती है। इसके अलावा गंभीर चोट या बीमारी की स्थिति में भी शरीर के भीतर खून बहना शुरू हो सकता है।

इंटरनल ब्लीडिंग के प्रमुख लक्षण

उल्टी में खून आना या उसका रंग काला होना

शौच का काला रंग होना या उसमें खून आना

धीमी ब्लीडिंग होने पर शरीर में खून की कमी होना (एनीमिया)

सीजफायर पर दिग्विजय बोले-मोदी की कथनी-करनी में अंतर

भोपाल (नप्र)। भारत-पाकिस्तान के बीच सीजफायर को लेकर कांग्रेस और भाजपा नेताओं की अलग-अलग प्रतिक्रियाएं आ रही है। कांग्रेस जहां सवाल उठा रही है। वहीं भाजपा नेता पाकिस्तान को करारा जवाब देने की बात कह रहे हैं। वहीं पंडित धीरेंद्र शास्त्री ने कहा है कि ये पीओके लेने का सही समय है।

पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का पुराना वीडियो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर शेयर करते हुए लिखा- 26/11 मुंबई हमले के बाद गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी का बयान आज के संदर्भ में अवश्य देखें। जय सिया राम।

पाकिस्तान को उसी की भाषा में जवाब देना चाहिए। ये लव लेटर लिखना बंद करना चाहिए। इंटरनेशनल प्रेशर पैदा करने की ताकत आज हिन्दुस्तान में है। पूरी दुनिया पर आज हम प्रेशर पैदा कर सकते हैं।

पाकिस्तान हमको मारकर चला गया। मुंबई में हमला बोल दिया। हमारे मंत्री जी अमेरिका गए और रोने लगे कि ओबामा, ओबामा... ये हमको मारकर चला गया। पड़ोसी मारकर चला जाए और आप अमेरिका जाते हो? पाकिस्तान जाओ न। पाकिस्तान जिस भाषा में समझे, समझाना चाहिए।

दिग्विजय ने पीएम नरेंद्र मोदी का पुराना बयान कोड कर लिखा- अमेरिका कौन होता है हमारे बीच पंचायत करने वाला? पाकिस्तान हमको मार कर चला गया और मंत्री अमेरिका जाकर रो रहे हैं - हमें बचाओ बचाओ। यह कोई तरीका होता है क्या? पड़ोसी मार कर चला गया तो अमेरिका क्या जाना - पाकिस्तान जाओ ना, पाकिस्तान जिस भाषा में समझे समझाना चाहिए - नरेंद्र मोदी।

दिग्विजय सिंह ने लिखा- मोदी जी की कथनी और करनी में अंतर। कोई नई बात नहीं है।

विजयवर्गीय बोले- देश पर हमला करने वालों को मिटा दिया जाएगा

नगरीय प्रशासन और आवास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने 26/11 हमले को याद करते हुए कहा कि पहले केवल संयुक्त राष्ट्र में शिकायत होती थी, लेकिन अब प्रधानमंत्री ने साफ संदेश दिया है कि देश पर हमला करने वालों को मिटा दिया जाएगा। सेना ने दुश्मनों को मुंहतोड़ जवाब दिया है। सीजफायर भी हमारी शर्तों पर हुआ है। सरकार ने यह निर्णय इसलिए लिया क्योंकि हम विश्व बिरादरी का सम्मान करते हैं, लेकिन यदि अब कोई हमला हुआ तो भारत घुसकर जवाब देगा।